॥ ओ३म् ॥

आयुर्वेद जड़ी-बूटी रहस्य

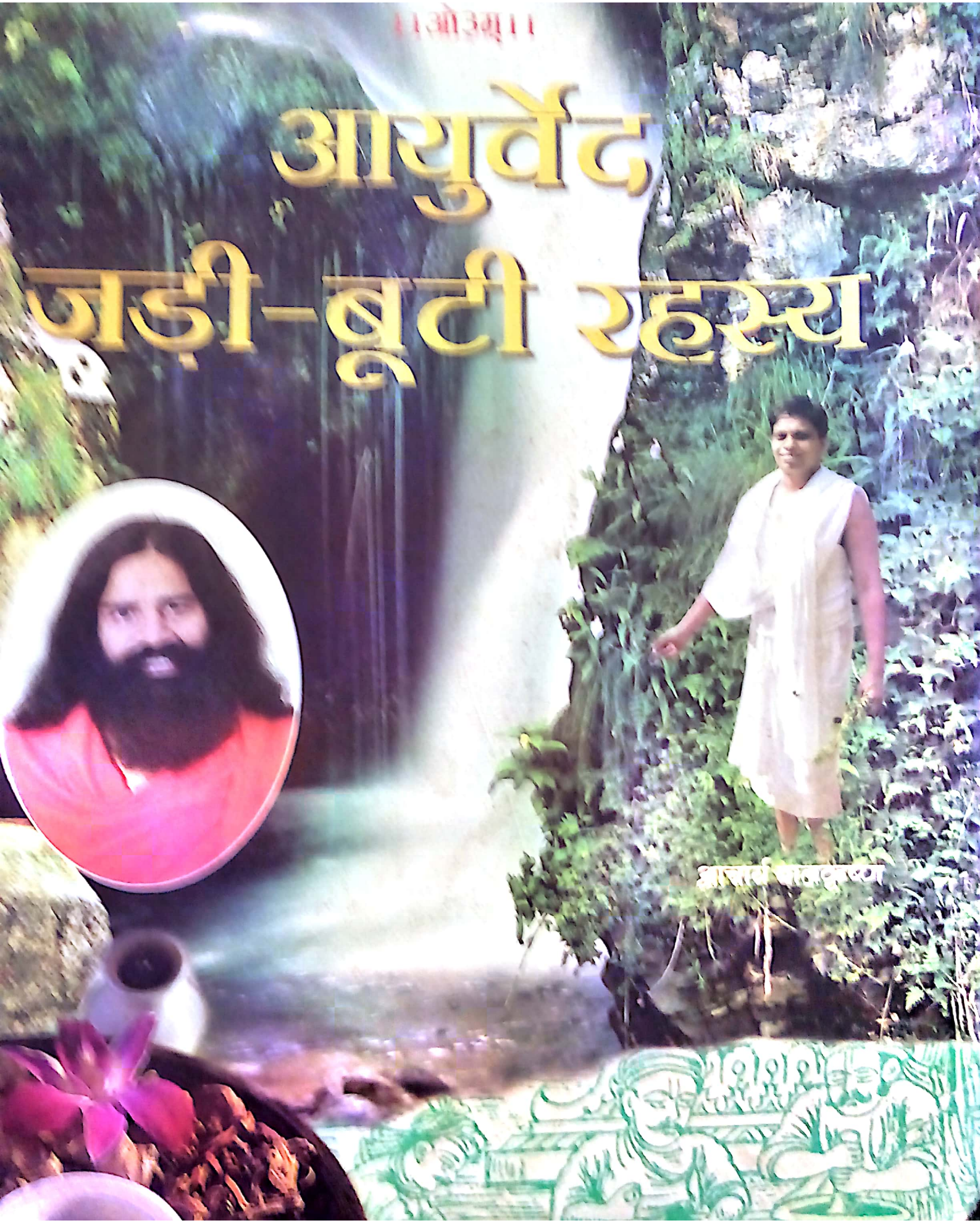

Scanned by CamScanner

वैज्ञानिक नाम	:	*Brassica juncea* (L.) Czern. & Coss.
कुलनाम	:	Brassicaceae
अंग्रेजी नाम	:	Indian mustard
संस्कृत	:	राजिका, राजी, आसुरी, तीक्ष्णगंधा
हिन्दी	:	राई
गुजराती	:	राई
मराठी	:	मोहरी
बंगाली	:	राई, सरिशा
तेलगु	:	अबालु
अरबी	:	खदरल, कुब्र
फारसी	:	सर्शप

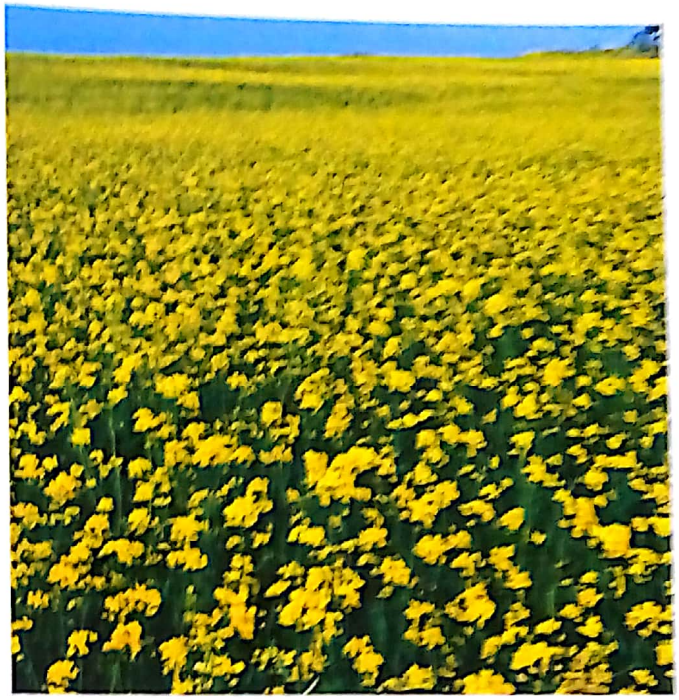

परिचय

राई को समस्त भारतवर्ष में खेती द्वारा उत्पन्न किया जाता है। इससे सब परिचित है। *Brassica integrifolia* नाम से इसकी एक और प्रजाति पाई जाती है।

बाह्य–स्वरूप

इसका क्षुप 2–3 फुट ऊंचा होता है। पत्र दीर्घवृन्तयुक्त गहरे कटे हुए, ऊपरी खण्डित या अखण्ड कभी–कभी 1 फुट तक लम्बे होते है। पत्रवृन्त पर छोटे पत्रक या वर्णक होते है। यह रबी की फसलों के साथ बोई जाती है। पुष्प चमकीले पीले होते हैं। फली 1–2 इंच लंबी, ऊपर से नीचे की और कुछ दबी हुई, अग्रचञ्चु बहुत छोटा ओर लम्बाग्र होता है। बीज रक्ताभ भूरे, सिकुडनयुक्त और सरसों से कुछ छोटे होते हैं।

रासायनिक संघटन

बीज में मायरोसीन, सिनिग्रिन, तेल और सिनपीन प्रभृति द्रव्य पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

तीक्ष्ण, गरम, किंचित् रूखी, कफ पित्तनाशक, रक्तपित्त कारक, अग्निवर्धक, तथा कंडू, कुष्ठ, कोष्ठरोग और कृमिरोग को दूर करती है।[1]

विशेष :

अल्प मात्रा में राई का सेवन दीपन पाचन उत्तेजक और पसीना लाने वाला है। इसका अधिक मात्रा में सेवन वामक है। राई का लेप आयुर्वेद चिकित्सा शास्त्र में बहुत प्रसिद्ध है।

पत्तों का शाक :

चरपरा, गरम, बलकारक, स्वादिष्ट, पित्तकारक, कृमिनाशक, वात–कफ नाशक और कंठ रोग को दूर करने वाला है।

तेल :

दीपन, लघु, तीक्ष्ण, वातहर, पुंसत्वनाशक, केश्य, त्वक दोषहर, कफघ्न और मेदोहर है। अर्श, सिर दर्द, कर्णरोग, कंडू, कुष्ठ, कृमि और शीतपित्त को दूर करता है। यह विशेषतः मूत्रकृच्छकारक है।

औषधीय प्रयोग

सन्निपातज भ्रम : इस अवस्था में कंठ पर राई का लेप करें, त्वचा लाल होने पर हटाकर घी, तेल लगा दें।

गाँठ : कुक्षि (बगल) में होने वाली गांठ को पकाने के लिये, गुड़, गुग्गुल और राई को बारीक पीस, जल में मिला, कपड़े की पट्टी पर लेप कर चिपका देवे, गांठ पककर बिखर जाती है।

कर्णमूलशोथ : सन्निपात ज्वर में या कान में पीव होने पर कान के मूल में सूजन आ जाती है, इसमें राई के आटे को सरसों के तेल या एरंड तेल में मिलाकर लेप कर देने से रक्त बिखर जाता है।

Scanned by CamScanner

अंजननाभिका : नेत्र की पलकों पर फुन्सी होने पर, राई के चूर्ण को घी मे मिलाकर लेप करने से, तुरन्त आराम हो जाता है।

पीनस रोग (नाक मे फोडा होना) : राई का आटा 10 ग्राम, कपूर डेढ ग्राम और घी 100 ग्राम, तीनों का मलहम बनाकर लगाने से, छींकें आकर पीब, कफ आदि निकलकर जख्म शुद्ध हो जाता है। अब इस पर कपूर और सफेद कत्थे को घी से मिलाकर मलहम बनाकर लगाने से जख्म शीघ्र भर जाता है।

दन्तशूल : राई को निवाये जल में मिलाकर कुल्ला करने से वेदना शांत होती है

सिरगंज : राई के हिम या फांट से सिर धोने से बाल गिरने बन्द हो जाते है। तथा सिर में जुंए, फुंसी, तथा खुजली आदि रोग दूर हो जाते है।

सिर दर्द : ललाट पर राई का लेप लगायें।

प्रतिश्याय : राई 500 से 750 मिलीग्राम, शक्कर 1 ग्राम दोनों को मिलाकर थोडे जल के साथ देने से प्रतिश्याय दूर हो जाता है।

श्वांस : 500 मिलीग्राम राई चूर्ण को घी तथा मधु मिलाकर, सुबह–शाम चटाने से कफ प्रकोप के साथ–साथ श्वांस रोग का भी शमन हो जाता है।

हृदरोग : हृदय की शिथिलता में हृदय में कम्प या वेदना हो, व्याकुलता व बैचेनी हो, कमजोरी महसूस होती है, तब हाथ–पैरों पर राई के चूर्ण की मालिश करने से लाभ होता है।

हैजा:

1. हैजे में जब रोगी को बहुत उल्टी दस्त होते हो तो राई के लेप से उल्टी दस्त बन्द हो जाते है।
2. किसी भी प्रकार के उल्टी दस्त राई के लेप से बन्द हो जाते हैं।

अर्श : मस्सों में खुजली लगती हो, देखने में मोटे और स्पर्श करने में दुःख न होता हो, छूने पर अच्छा लगता हो, राई का तेल लगाने से ऐसे मस्से मुरझा जाते हैं।

अपचन और उदरशूल : राई का 1 से 2 ग्राम चूर्ण, शक्कर मिलाकर फांक लें, ऊपर से आधा कप जल पी लें।

अफारा : 2 ग्राम राई को शक्कर मिलाकर फंकी लें तथा ऊपर से 750 मिलीग्राम से 1 ग्राम चूने को आधा कप जल में मिलाकर पिलाने से आफारा दूर होता है।

राई दाना

हैजा : हैजे की प्रारम्भिक अवस्था में 1 ग्राम राई को शक्कर के साथ सेवन कराने से लाभ होता है।

मासिक धर्म की रूकावट : मासिक धर्म की रूकावट में, मासिक धर्म में कष्ट होता है या स्राव कम होता हो, तब निवाये जल में राई का चूर्ण मिलाकर, उसमें रोगी स्त्री को कमर तक डूबे जल में बिठाने से लाभ होता है।

गर्भाशय कर्कटार्बुद : गर्भशय में कैंसर होने पर, सप्ताह में 2–3 बार राई के निवाये जल की पिचकारी द्वारा धोने से लाभ होता है। 25 ग्राम राई को 1 कप ठंडे जल में भिगोवें, मसलकर लुआब बनाकर फिर 750 ग्राम निवाये जल में मिला लें।

गर्भाशय की वेदना : गर्भाशय की विविध वेदना, अति तीव्र वेदना में, नाभि के नीचे या कमर पर राई के प्लास्टर का प्रयोग बार–बार करना चाहिये।

कफ प्रकोप : खांसी में कफ गाढ़ा हो जाने पर सुगमता से ना निकलता हो तो, राई 500 मिलीग्राम, सैंधा नमक 250 मिलीग्राम और मिश्री मिलाकर सुबह–शाम देते रहने पर कफ पतला होकर सरलता से बाहर निकलने लगता है।

गृध्रसी रोग : सियाटिका दर्द में वेदना स्थान पर राई का लेप लगाने से लाभ होता है।

संधिशूल अर्धागवात : आमवात या सुजाक के कारण या अन्य किसी कारण से जोड़ो पर सूजन और पीड़ा हो, तथा नवीन अर्धागवात से शून्य हुये अंग पर राई के लेप में कपूर मिलाकर मालिश करने से बहुत लाभ होता है।

वातवेदना :

1. राई और शक्कर को पीसकर, कपड़े की पट्टी पर लेप कर, वेदना स्थान पर लगा दें।
2. यदि वेदना हल्की हल्की कई दिनों तक बनी रहे, राई और सहिजने की छाल को मट्ठे में पीसकर पतला–पतला लेप करें।

अर्न्तदाह और सूजन : जिन रोगों के साथ सूजन रहती है तथा जिसमें शरीर के अन्दर अन्तर्दाह रहता है, ऐसे रोगों में राई का लेप हितकारी है। फेफड़ों की सूजन, फेफडों के कोष की सूजन, यकृत कोष की सूजन, श्वास नलिका में सूजन हो, मस्तिष्क रोगों की सूजन में राई का लेप बहुत फायदेमन्द है। हृदयदौर्बल्य में हाथ पांव और हृदय के ऊपर राई का लेप किया जाता है।

कांटा : त्वचा के भीतर कांटा या धातु का कण घुस जाये तो, राई के आटे में घी और शहद मिलाकर लेप करने से कांटा ऊपर आ जाता है, और दिखाई देने लगता है।

कुष्ठ:

1. राई के आटे को 8 गुने पुराने गाय के घी में मिलाकर लेप करने से दाग दूर हो जाते है।
2. पामा, एक्जिमा, दाद आदि पर उक्त मलहम लगाने से लाभ होता है।

Scanned by CamScanner

व व्रण :

1. 100 ग्राम सरसों का तेल या तिल का तेल अच्छी प्रकार से उबालें, उबाल आने पर आंच बन्द कर दें। कुछ ठंडा होने पर 10 ग्राम राई, 10 ग्राम लहसुन और डेढ़ ग्राम कपूर डालकर ढक कर रख दें। ठंडा होने पर छानकर, बोतल में भरकर रख लें, कान में 4–5 बूंदे डालते रहने से स्त्राव दूर हो जाता है और जख्म भर जाता है।
2. घाव या फोड़े में कीड़े पड़ गये हो तो, राई के 24 ग्राम चूर्ण में शहद मिलाकर लेप कर देने से सब कीड़े मर जाते हैं।

सूजन:

1. हाथ पैर मुड़ जाने से दर्द सूजन आ जाये तो, अरंड के पत्ते पर राई का लेप चुपड़ कर निवाया कर बांध देने से सूजन उतर जाती है।
2. राई और नमक को जल में पीसकर लेप करने से भी सूजन उतर जाती है।

गांठ : किसी भी अंग में अगर गांठ बढ़ती हो तो राई और समभाग काली मिर्च के चूर्ण को घी में मिलाकर लेप करने से, गांठ का बढ़ना रुक जाता है। रसौली और अर्बुदों को बढ़त रोकने के लिये राई अच्छा काम करती है।

विषप्रभाव:

1. अफीम के विष के प्रभाव से या सर्प विष प्रभाव से, रोगी यदि बेहोश हो गया हो तो कांख छाती, जंधा आदि स्थानों पर राई का लेप लगाने से मूर्च्छा दूर हो जाती है। मूर्च्छा दूर होने पर लेप अधिक से अधिक 1 घंटे रखें।
2. ज्वर और विसूचिका में भी मूर्च्छा आ जाने पर, कांख छाती और जंघा पर राई का लेप प्रभावकारी है।

लेप बनाने की विधि:

1. राई का लेप हमेशा ठंडे जल में बनायें। राई का लेप सीधे त्वचा पर न लगाये, इससे फुंसी फफोले आदि उठने का भय रहता है। त्वचा के लाल होने पर लेप को उतार दें और उस अंग को पोंछ कर वहां पर घी या तेल लगा दें। राई को शीतल जल के साथ महीन पीसकर लेप को साफ मलमल के कपड़े पर पतला–पतला लेपकर कपडें को रोगी अंग पर रख दें, ध्यान रहें लेप सीधा त्वचा के सम्पर्क में न आये।
2. आंतरिक प्रयोग के लिऐ राई का छिलका उतार कर प्रयोग करें, इसके लिये राई को हल्के से पानी में भिगोकर हिलाते रहें, तत्पश्चात चक्की में से निकालकर जब छिलका उतर जाये तो सुखा लें तथा पीसकर आटा बनाकर शीशी में सुरक्षित रख लें।

वात वृद्धि : राई के तेल में पकौडे या पूरी तलकर खायें। राई के तेल की मालिश कर, निवाये जल से स्नान करें। मस्तिष्क नेत्र

आदि कोमल भागों पर राई के तेल की मालिश न करें।

राई का प्लास्टर या लेप:

1. राई की पुल्टिस बनाने के लिये, वयस्क व्यक्ति के उपयोग हेतू 3 भाग अलसी चूर्ण और 1 भाग राई को ठंडे जल में घोटकर बनायें।
2. बच्चों के लिये राई चूर्ण 1 भाग तथा अलसी चूर्ण 10–15 गुणा अधिक लें।
3. 10–20–30 मिनट में चमड़ी लाल होने पर पुल्टिस या लेप को हटा लें।
4. राई का लेप 1 भाग राई चूर्ण और 3 गुना गेहूँ या चावल का आटा, ठंडे जल में घोलकर आवश्यकतानुसार बनाकर प्रयोग में लायें।
5. राई की पुल्टिस या लेप कपड़े पर लगाकर प्रयोग करें।

विष प्रभाव :

1. राई के 10 ग्राम चूर्ण को शीतल जल में पीसकर, लगभग एक–डेढ़ गिलास जल में डालकर पिला दें, वमन होकर तत्काल विष निकल जाता है। और अन्य वामक औषधियों के समान शरीर में शिथिलता नहीं आती है।
2. अफीम के विष पर विसूचिका की शुरुआती अवस्था में, जुकाम या श्वांस में कफ की अधिकता होने पर तथा मूर्च्छा का उपक्रम होने पर राई के सेवन से वमन कराना अति निर्भय और श्रेष्ठ उपाय है।

कफज्वर : जिह्वा पर सफेद मैल सा जम जाये, भूख प्यास न लगती हो, साथ–साथ हल्का–हल्का ज्वर भी रहता हो, ऐसे लक्षणों में राई का आटा, 500 मिलीग्राम सुबह–शाम शहद के साथ चाटने से लाभ होता है।

1 रजिका कफ वातहनी तीक्ष्णोष्णा रक्तपित्तकृत।
कमीनहरेत्।। (भाव प्रकाश)

Scanned by CamScanner

105 काली राई

वैज्ञानिक नाम	:	*Brassica nigra* (L.) Koch.
कुलनाम	:	Brassicaceae
अंग्रेजी नाम	:	Black mustard
संस्कृत	:	राजिका, राजी, आसुरी, तीक्ष्णगंधा
हिन्दी	:	राई
गुजराती	:	राई
मराठी	:	मोहरी
बंगाली	:	राई, सरिशा
तेलगु	:	अबालु
अरबी	:	खदरल, कुब्र
फारसी	:	सर्शप

परिचय

काली राई के बीज कृष्ण वर्ण के होते है। काली राई भी गुण–कर्म में लाल राई के समान ही परन्तु यह उससे बहुत उग्र होती है।

औषधीय प्रयोग

गले की सूजन : गले की हलकी सूजन पर इसके तेल की मालिश करने से लाभ होता है।

आधाशीशी : राई और कबूतर की बीट को पीसकर लेप करने से आधाशीशी रोग मिटता है।

सिर की गंज : आधी कच्ची और आधी सेकी हुई राई को पीसकर कड़वे तेल में मिलाकर लगाने से सिर के गंजेपन में लाभ मिलता है।

जुकाम : राई के तेल को पैरों और पैरों के तलुवे पर मालिश करने से मस्तक की सर्दी और जुकाम एक रात में मिट जाते है। नाक पर इसके तेल की मालिश करने से नाक का बहना तुरन्त बन्द हो जाता है।

बच्चों की खांसी : बच्चों की छाती पर राई के तेल की मालिश करने से उनकी खांसी मिट जाती है।

मंदाग्नि : राई की फंकी 2–4 ग्राम लेने से कब्जियत की वजह से पैदा होने वाली मंदाग्नि मिट जाती है।

वमन : राई के आटे को पानी में घोलकर पिलाने से बहुत शीघ्र और निरुपद्रव वमन होता है। राई के प्लास्टर को पेट और कलेजे पर लगाने से भयंकर और हठीले वमन भी बन्द हो जाते है।

Scanned by CamScanner

गठिया:

1. राई का प्लास्टर करने से गठिया की वेदना फौरन मिट जाती है।
2. राई के तेल में कपूर मिलाकर लेप करने से भी गठिया में लाभ होता है।

शोथ : राई के तेल की मालिश करने से पट्ठों की पुरानी सूजन उतर जाती है।

आलस्य : इसके ताजे और शुद्ध तेल की मालिश करने से आलस्य मिटता है, चुस्ती तथा फुर्ती आती है।

बिच्छू का विष : कपास के पत्ते और राई को पीसकर लेप करने से बिच्छू का विष उतर जाता है।

दाद : राई को सिरके के साथ पीसकर लेप करने से दाद मिटता है।

बद गांठ : राई का लेप लगाने से बद गांठ बिखर जाती है।

कोष्ठ विद्रधि : राई को जल के साथ पीसकर लेप करने से विद्रधि मिट जाती है।

सर्पविष : राई को अधिक मात्रा में खिलाने से वमन होकर विष का प्रभाव हल्का पड़ जाता है।

रुधिर का जमाव : शरीर के भीतर अगर कहीं रूधिर का जमाव हो जाये तो वहां इसके तेल की मालिश करके सेंक कर देने से जमाव बिखर जाता है।

वात शूल : राई और सहजने की छाल को मठ्ठे में पीसकर लेप करने से वातशूल मिटता है।

पित्तशोथ : पित्त की सूजन में राई की पुल्टिस बांधने से बहुत जल्दी लाभ होता है।

सरसों दाना

Scanned by CamScanner

रीठा

वैज्ञानिक नाम	*Sapindus mukorossi* Gaertn.
कुलनाम	Sapindaceae
अंग्रेजी नाम	Soapnut tree
संस्कृत	अरिष्टक, फेनिल, फेनिल
हिन्दी	रीठा
गुजराती	अरीठा
मराठी	रिठा
पंजाबी	रेठा
तेलगु	फेनिलामु, कुंकुडुकायालु
तमिल	पल्लान कोट्टाई
असमी	हैथामुटी
फारसी	फुदुक

परिचय

रीठे की दो जातियां पाई जाती हैं।

1. *Sapindus mukorossi* : इसके जंगली वृक्ष हिमालय क्षेत्रों में 4,000 फुट की ऊँचाई तक पाये जाते हैं। परन्तु उत्तर भारत, आसाम आदि में इसके मनुष्यों द्वारा लगाये हुए वृक्ष बाग–बगीचों में या गांवों के आसपास पाये जाते हैं।
2. *Sapindus, trifoliatus* : इसके वृक्ष विशेषतः दक्षिण भारत में मिलते है, इसके फल 3–3 एक साथ जुड़े होते हैं। फलों की आकृति वृक्काकार होती है और पृथक होने पर जुड़े हुए स्थान पर हृदयाकार चिन्ह पाया जाता है। ये पकने पर किंचित लालिमा लिए भूरे रंग के होते हैं।

बाह्य–स्वरूप

इसका वृक्ष 50 फुट तक ऊंचा, प्रायः 5 फुट परिधि का होता है। पत्र 5–12 इंच लम्बा होता है। पुष्प श्वेतवर्ण 1/5 इंच लम्बे, रोमश अत्यन्त सघन मंजरियों में आते हैं। फल मांसल 2–3 खण्डीय,

Scanned by CamScanner

1/2–3/4 इंच लम्बे, तरूणावस्था में रोमयुक्त, सूखने पर कृष्णाभ भूरे रंग के, सिकुड़नयुक्त होते हैं। बीज मटर सदृश, काली चिकनी मज्जा में संसक्त रहते हैं। पुष्प नवम्बर–दिसम्बर में आते हैं तथा फल फरवरी से अप्रैल तक तैयार हो जाते हैं।

रासायनिक संघटन

फल में सैपोनिन, शर्करा और पेक्टिन नामक कफघ्न पदार्थ पाया जाता है। बीज में 30 प्रतिशत चर्बी होती है। जिसका उपयोग साबुन बनाने में किया जाता है।

गुण–धर्म

यह त्रिदोष नाशक, गर्भपातन और ग्रहों को दूर भगाता है। रीठा वामक, रेचक, कृमिघ्न कफ निःसारक, गर्भाशय संकोचक होता है। इसका नस्य अर्धावभेदक, मूर्च्छा एवं अपतंत्रक नाशक है। विषघ्न, विशेषकर अफीम का विष दूर करने में प्रयुक्त। इसका विशेष प्रयोग कफ वात रोगों में किया जाता है।[1,2,3]

औषधीय प्रयोग

आधाशीशी : रीठे के फल को 1–2 काली मिर्च के साथ घिसकर नाक में 4–5 बूंद टपकाने से आधाशीशी का रोग तुरंत मिट जाता है।

नेत्र रोग : सरल अभिष्यंद में रीठे के फल को जल में उबालकर इस जल को पलकों के नीचे रखने से लाभ होता है।

दंतरोग : रीठे के बीजों को तवे पर जलाकर पीस ले और इसमे बराबर मात्रा में पिसी हुई फिटकरी मिलाकर दांतों पर मलने से दांतों के सब प्रकार के रोग दूर हो जाते हैं।

अपतन्त वायु : प्रसव के पश्चात् वायु का प्रकोप होने से स्त्रियों का मस्तिष्क शून्य हो जाता है। आंखों के आगे अंधकार छा जाता है। दांतों की बत्तीसी भिड़ जाती है। इस समय रीठे को पानी में घिसकर फेन पैदाकर आंखों में अंजन लगाने से तत्काल वायु का असर दूर होकर स्त्री स्वस्थ हो जाती है।

अपस्मार : बीज, गुठली और छिलके समेत रीठे को पीसकर मिर्गी के रोगियों को नित्य सुंघाने से मिर्गी रोग ठीक हो जाती है।

केशवर्धक :

1. कपूर कचरी 100 ग्राम, नागरमोथा 100 ग्राम और कपूर तथा रीठे के फल की गिरी 40–40 ग्राम, शिकाकाई 25 तोला, आंवले 200 ग्राम, इन सबका चूर्ण करके इनमें से 50 ग्राम मात्रा में पानी मिलाकर लुग्दी बनाकर बालों में मसलना चाहिए। उसके बाद बालों को गरम पानी से खूब स्वच्छ कर ले। इससे सिर के अंदर की जूं–लीकें मर जाती है और बाल मुलायम हो जाते हैं।
2. रीठा, आंवला, सिकाकाई तीनों के मिश्रण से भी बाल धोने से बाल सिल्की, चमकदार, रूसी–रहित और घने हो जाते हैं।

दमा :

1. इसके फल को पीसकर उसकी सुंघनी सुंघाने से तुरन्त लाभ होता है।
2. इसके फल को जल के साथ पीसकर उसमें 1–2 नग काली मिर्च भी पीसकर इस जल की 5–6 बूंद नाक में टपकाने से दमें में लाभ होता है।

परमपूज्य स्वामी रामदेव जी का स्वानुभूत प्रयोग :

रीठा चूर्ण 1 ग्राम, 2–3 ग्राम त्रिकुट चूर्ण को 50 ग्राम पानी में डालकर रखें। प्रातः काल जल को निखार कर अलग शीशी में भर लें। इस जल की 4–5 बूंद प्रातः काल खाली पेट नियमित रूप से नाक में डालने से अन्दर जमा हुआ कफ बाहर निकल जाता है। नासा रन्ध्र फूल जाते हैं तथा सिर दर्द में भी तुरन्त लाभ मिलता है।

खूनी बवासीर : रीठे के फल में से बीज निकालकर फल के शेष भाग को तवे पर जलाकर कोयला कर लें, फिर इसमें इतना ही पपड़ियां कत्था मिलाकर अच्छी तरह से पीस कर कपड़–छन कर लें। इस में से 125 मिलीग्राम औषधि सुबह–शाम मक्खन या मलाई के साथ 7 दिन तक सेवन करे। जब तक दवा चले तब तक नमक और खटाई नहीं खानी चाहिए।

अतिसार : इसकी साढे चार ग्राम गिरी को पानी में मथके जब फेन पैदा हो जाये तो इस जल को बिसूचिका और अतिसार के रोगी को पिलायें।

मूत्रकृच्छ : 25 ग्राम रीठे को रात भर 1 लीटर पानी में भिगोकर उसका निथरा हुआ पानी थोड़ी–थोड़ी मात्रा में पिलाने से मूत्रकृच्छ

रीठा फल

Scanned by CamScanner

में लाभ मिलता है।

नष्टार्तव : रजोरोध में इसके फल की छाल या गिरि को महीन पीसकर शहद में मिलाकर बत्ती बनाकर योनि में रखने से रूका हुआ मासिक धर्म आरम्भ हो जाता है।

प्रसव : शीघ्र प्रसव के लिए इसके फल के फेन में रूई का फोहा भिगोकर योनि में रखने से बच्चा सुख से उत्पन्न हो जाता है।

शूल : इसकी गिरी के 250 मिलीग्राम चूर्ण को शरबत या जल के साथ देने से शूल मिटता है।

वीर्य वृद्धि : रीठे की गिरी को पीसकर उसमें समभाग गुड़ मिलाकर एक चम्मच की मात्रा सुबह–शाम एक कप दूध के साथ सेवन करें।

विष : इसके फल को पानी में पकाकर, अल्प मात्रा में लेने से वमन होकर विष निकल जाता है।

अहिफेन विष : पानी में रीठे को इतना उबालें कि भाप आने लगे, इस पानी को आधा कप की मात्रा में पिलाने से अफीम का विष उतर जाता है।

वृश्चिक विष :

1. इसके फल की मज्जा को तम्बाकू की तरह हुक्के में रखकर पीने से बिच्छु का विष उतरता है।
2. रीठे के फल गिरी को पीसकर उसमें गुड़ समभाग मिलाकर 1–2 ग्राम की गोलियां बनायें, उन्हें पांच–पांच मिनट बाद पानी के साथ 15 मिनट में ही तीन गोली देने से बिच्छु का विष उतरता है।
3. रीठे के फल को पीसकर आंख में अंजन लगाने से तथा दंशित स्थान पर लगाने से भी बिच्छु के विष में लाभ होता है।

विषैले कीट : रीठे की गिरी को सिरके से पीसकर विषैले कीटों के काटने के स्थान पर लगाने से लाभ होता है।

दोष : गरम प्रकृति वालों को इसका अधिक प्रयोग नहीं करना चाहिए।

1. अरिष्टकस्तु मङ्गल्यः कृष्णवर्णोऽर्थसाधनः।
रक्तबीजः पीतफेनः फेनिलो गर्भपातनः।
अरिष्टकस्त्रिदोषघ्नो ग्रहजिद्गर्भपातनः।। (भाव प्रकाश)

2. अरिष्टः कटुकः पाके तीक्ष्णोष्णो लेखनोऽगुरुः।
दोषत्रयहरो गर्भपातनो ग्रहशान्तिकृत्।।
तज्जलं बामकं पानान्नस्याच्छीर्षरुजापहम्।
अर्धशीर्षव्यथां हन्ति वमनाद्विषनाशनः। (नि०स०)

3. रीठाकरंजस्तिक्तोष्णः कटुः स्निग्धश्चवातजित्।
कफघ्नः कुष्ठकंडूतिविषविस्फोटकनाशनः। (रा०नि०)

Scanned by CamScanner

वैज्ञानिक नाम	:	*Moringa oleifera* Lam.
कुलनाम	:	Moringaceae
अंग्रेजी नाम	:	Horse radish tree, Drum stick plant
संस्कृत	:	शोभांजन, शिमु, मोचक, तीक्ष्णगंधा
हिन्दी	:	सहजन, सहिजन, सोहाजन, मुनगा
गुजराती	:	सरगवो, सेकटो
मराठी	:	शेवगा, शेगटा
बंगाली	:	शजिना
पंजाबी	:	सोहांजना
तेलगु	:	मुनगा

परिचय

सहिजन के वृक्ष हिमालय की तराई मे जंगली अवस्था में बहुलता से पाये जाते है। जंगली वृक्षों की फलियाँ और लगाये हुये वृक्षों की फलियाँ मीठी और शाकार्थ व्यवहृत की जाती है। पुष्प वर्ण भेद से शास्त्रकारों ने शोभांजन के श्वेत और रक्त दो भेद किये है, श्वेत जाति कटु और अरुण जाति मीठी होती है। कटुशिमु सर्वत्र सुलभ होती है, परन्तु मीठी शिमु कम पाई जाती है।

बाह्य–स्वरूप

सहिजन के छोटे या मध्यम आकार के वृक्ष होते हैं। छाल और काष्ठ मृदु होता है, जिससे जब वृक्ष फलियों से लद जाते हैं तो डालियां अक्सर टूट जाती हैं। सहजन के लिए यह कहावत मशहूर है– सहिजन अति फूले–फले, तबहुं डारपात की हानि। पत्र संयुक्त, पत्राकार 1–2 इंच लम्बा जिससे पत्रक 6–9 जोड़े चौथाई इंच से पौन इंच लम्बे, अंडाकार, अभिमुख क्रम में लगे रहते है। पुष्प नीलाभ श्वेत वर्ण के गुच्छों में निकलते हैं। फलियाँ 6–18 इंच लम्बी 6 शिराओं से युक्त और धूसर होती हैं। बीज पक्षसहित, त्रिकोणाकार और कटु होते हैं।

रासायनिक संघटन

मूलत्वक में मौरिंगन नामक दो क्षाराभ होते है। मूल में एक सक्रिय प्रतिजीव तत्व टेरिगोस्पर्मिन होता है। जो अनेक जीवाणुओं एवं कैंसर की वृद्धि को रोकता है। पत्रस्वरस में भी जीवाणु नाशक क्षमता पाई जाती है। कांड से एक गोंद निकलता है। जो प्रारम्भ

में सफेद और बाद में लाल भूरे रंग का हो जाता है। मूल में एक अत्यन्त कटु और दुर्गान्धित उड़नशील तेल होता है। बीजों के दबाने से एक स्थिर तेल निकलता है जो स्वच्छ वर्णरहित और गाढ़ा होता है। व्यापार में यह बेन या बेहन तेल के नाम से बिकता है।

गुण–धर्म

इसकी त्वचा और पत्तों का लेप विदाही शोथहर और विद्रधिपाचन है। बीजचूर्ण का नस्य शिरोविरेचन हेतू प्रयुक्त होता है। बीज तेल वेदनास्थापन और शोथहर है। यह नाडी तंत्र को उत्तेजित करता है। आंतरिक प्रयोग में यह रोचन, दीपन पाचन, विदाही, ग्राही, शूलप्रशमन और कृमिघ्न है। मीठा सहजन पिच्छिल और मधुर रस होने के कारण सारक होता हैं। उष्णता के कारण यह हृदय को उत्तेजित करता है, रक्तभारवर्धक एवं शोथहर हैं। यह कफघ्न है। तीक्ष्णता और उष्णता के कारण यह गुर्दे को उत्तेजित करता है। मूत्र की क्षारीयता और मात्रावर्धक है। उष्णता से आर्तवजनन,

Scanned by CamScanner

शुक्रघ्न, मेदघ्न तथा विषघ्न है। यह स्वेदजनन व ज्वरघ्न है। इसके बीजों का प्रयोग लेखन और चक्षुष्य है।

औषधीय प्रयोग

शिरोवेदना : शिरोवेदना में इसके मूल के रस मे समभाग गुड़ मिलाकर 1–1 बूंद नस्य देने से शिरोवेदना में लाभ होता है।

मस्तिष्क ज्वर : इस रोग में भी इसकी छाल को जल मे घिसकर इसकी एक दो बूंद नासिका मे डालने से तथा सेवन से लाभ होता है।

मस्तक पीड़ा :

1. इसके पत्तों के रस में काली मिर्च को पीसकर लेप करने से मस्तक पीड़ा मिटती है।
2. इसके पत्तों को पानी के साथ पीसकर लेप करने से सर्दी या अन्य प्रकार की मस्तक पीड़ा मिटती है।

नेत्ररोग:

1. इसके पत्तों को पीसकर टिकिया बनाकर नेत्रों पर बांधने से श्लेष्माऽभिष्यंद मिटता है।
2. इसके पत्रों के 50 ग्राम रस में 2 चम्मच शहद मिलाकर आँखों में अंजन करने से तिमिरादि सर्व नेत्र रोगों में लाभ होता है।
3. वात, पित्त, कफ या सन्निपात से उत्पन्न नेत्र शोथ मे इसके पत्रों के रस में समभाग मधु मिलाकर 2–2 बूंद आंख में डालने से वेदना का शमन होता है।

स्वरभंग : स्वरभंग में भी इसकी जड़ के क्वाथ से कुल्ले करने से लाभ होता है।

दंतरोग : इसके गोंद को मुंह में रखने से दांत का सड़ना रुक जाता है।

अपस्मार : अपस्मार और स्त्रियों के आवेश के रोग में भी इसकी मूल का क्वाथ 20–50 ग्राम सुबह–शाम पिलाने से लाभ होता है।

श्वास : सहजन की जड़ों का रस और अदरक का रस समभाग मिलाकर 10–15 ग्राम की मात्रा नियमित प्रातः–सायं पिलाने से श्वांस रोग मिटता है।

मंदाग्नि :

1. इसकी ताजी जड़, सरसों और अदरक को समभाग पीसकर 1–1 ग्राम की गोली बनाकर 2–2 गोली का प्रातः–सायं सेवन करने से तिल्ली व मंदाग्नि मे लाभ होता है।
2. मुख और गले के छाले मिटाने के लिये इसकी 2 चम्मच जड़ के चूर्ण को 400 मिलीलीटर पानी में उबालकर चतुर्थांश शेष क्वाथ से गंडूष करें।

पाचन शक्ति : इसकी जड़ के 10 ग्राम रस में सौंठ 2 ग्राम डालकर सुबह–शाम पिलाने से पाचन शक्ति बढ़ती है।

अफारा उदरशूल : इसकी 100 ग्राम छाल में 5 ग्राम हींग और 20 ग्राम शुंठी मिलाकर जल के साथ पीसकर 1–1 ग्राम की गोलियां बना लें, इनमें से 1–1 गोली दिन में 2–3 बार खाने से उदरशूल अफारा, गैस की पीड़ा शान्त होती है।

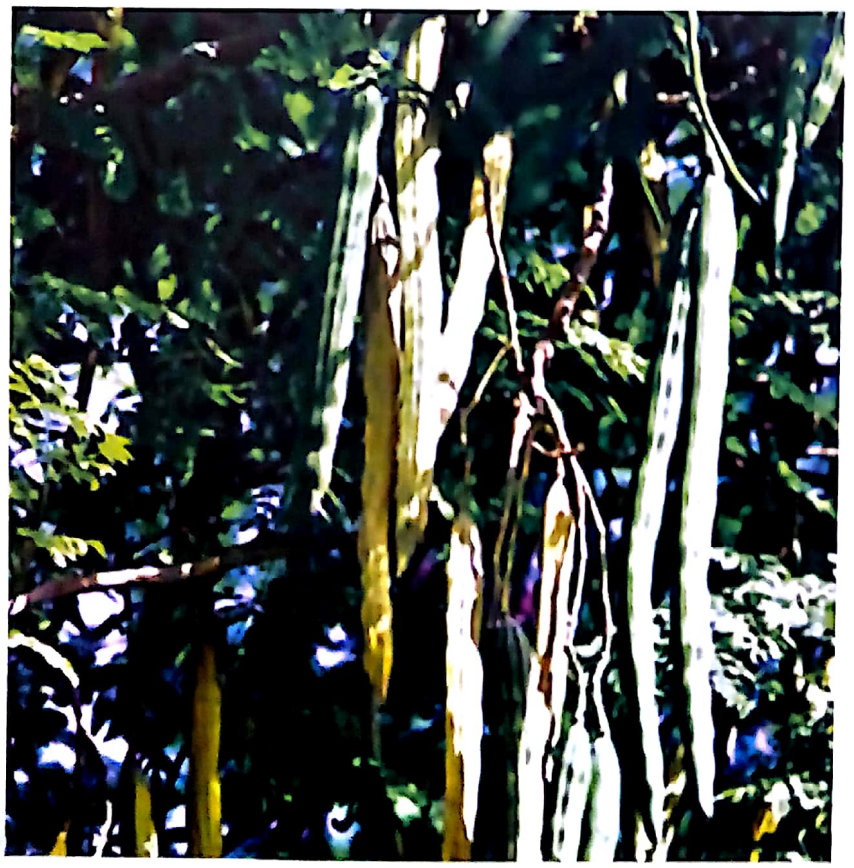

आंत्रकृमि : सहजन की फलियों का शाक खाने से आंत्रकृमि मर जाती है। अथवा आंतों में कीड़े नहीं पड़ते है।

मूत्रकृच्छ : इसके 10 ग्राम गोंद को नित्य 7 दिन तक दही के साथ खाने से मूत्रकृच्छ मिटता है।

जलोदर : इसकी 50 ग्राम जड़ का 200 ग्राम पानी में तैयार किया गया हिम या फांट थोड़ा–थोड़ा पिलाने से जलोदर मिटता है।

वृक्काश्मरी : इसकी छाल या मूल का क्वाथ 20 ग्राम दिन में 3 बार पिलाना चाहिये।

आंवल: इसकी छाल के 100 ग्राम क्वाथ में 20 ग्राम गुड़ मिलाकर पिलाने से आंवल जल्दी गिर जाती है।

आंतरिक सूजन : इसकी छाल को जल में घिसकर 10 ग्राम की मात्रा में सेवन करने से सब प्रकार की सूजन उतर जाती है। इसकी छाल को स्वदेशी पेन्सिलीन कहा जाता है।

शोथ : न्यूमोनिया, पसलियों का शूल, उदर शूल आदि में इसकी छाल का लेप बाह्य–रूप से करने से सूजन मिटकर आराम मिलता है। अंदर या बाहर, हर प्रकार की सूजन में इसका लेप लाभदायक है।

Scanned by CamScanner

आमवात : इसके बीजों के तेल की संधिवात, आमवात तथा वातरक्त में मालिश करने से लाभ होता हैं।

पुरुषार्थ : इसके 8–10 पुष्पों को 250 ग्राम दूध में उबालकर प्रातः–सायं पीने से पुरूषार्थ बढ़ता है।

दाद : दाद पर इसकी मूल की छाल जल में पिसकर लेप करने से लाभ होता है।

स्थान दर्द : सहजन के पत्ते, लहसुन, हल्दी, नमक तथा काली मिर्च सबको समभाग एक साथ पीसकर कटे हुये स्थान पर लगाने से सूजन उतर जाती है तथा ज्वर ठीक हो जाता है। इस कल्क की 10–15 ग्राम की मात्रा का सुबह–शाम सेवन करने से भी लाभ होता है।

ज्वर : इसकी 20 ग्राम ताजी जड़ों को 100 ग्राम पानी में उबालकर पिलाने से नियतकालिक ज्वर छूट जाता है।

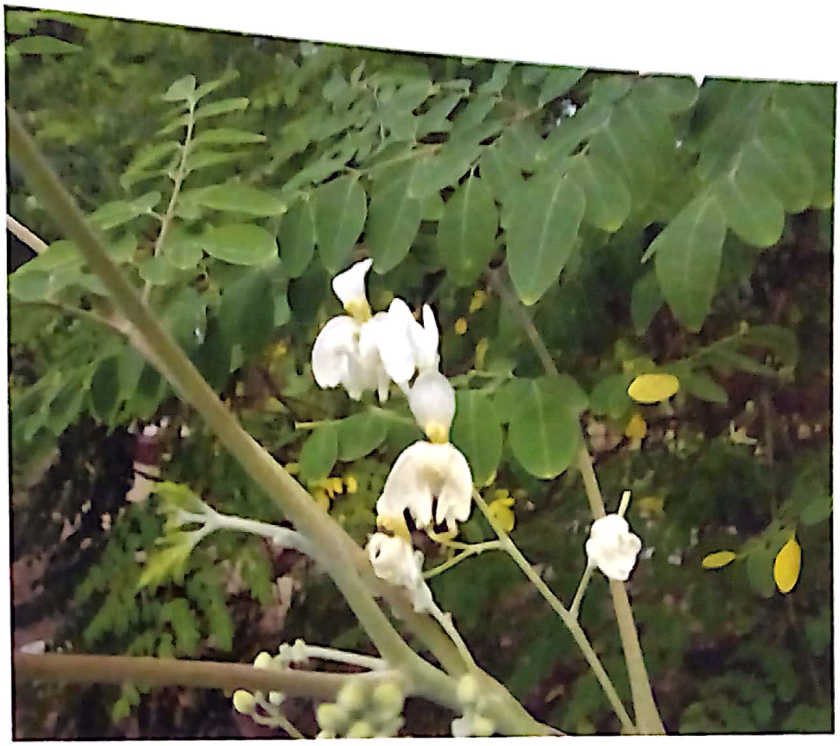

सहिजन का फूल

कैंसर : यकृत कैंसर में इसकी 20 ग्राम छाल का क्वाथ बनाकर आरोग्य वर्धिनी 2 गोली के साथ दिन में तीन बार सेवन करने से लाभ होता हैं।

विद्रधि : इसकी जड़ की छाल और बच्छ–नाग को पीसकर लेप करने से विद्रधि मिटती है।

बाह्य–लेप :

1. इसकी ताजी जड़ को अदरक और सरसों के साथ पीसकर लेप करने से गठिया मिटती हैं।
2. इसके गोंद का लेप करने से गठिया की सूजन मिटती हैं।
3. इसके पत्तों को पानी के साथ पीसकर गुनगुना कर लेप करने से वायु की पीड़ा मिटती हैं।
4. इसके पत्तों को बराबर के तेल के साथ महीन पीसकर, गुनगुना कर लेप करने से घुटनों की पुरानी पीड़ा मिटती है।
5. इसके पत्तों को तेल के साथ पीसकर लेप करने से और धूप में बैठने से चोट व मोच की पीड़ा मिटती है।
6. इसकी छाल और राई को पीसकर लेप करने से कान के नीचे की सूजन मिटती हैं।
7. इसकी जड़ की छाल को पीसकर लेप करने से स्नायु रोग मिटता हैं।
8. इसकी जड के कल्क को सरसों के तेल में पकाकर जलाकर मलने से खुजली मिटती हैं।
9. इसकी जड को पीसकर उष्ण करके लेप करने से श्लीपद मिटता है।
10. इसके गोंद को तिल के तेल में गर्म कर कान में 2–2 बूंद टपकाने से कर्णशूल मिटता है।
11. इसकी जड का 20 मि०ली० रस, सैंधा नमक 125 मि०ग्रा०, मधु एक चम्मच और तेल 50 मि०ली० को गर्म कर कान में 2–2 बूंद टपकाने से कान की शूल मिटती है।
12. सहजन की जड और देवदारू की जड़ को समभाग कांजी के साथ पीसकर गुनगुना कर लेप करने से दुःसाध्य अपची मिटती है।

विविध : यकृत तिल्ली रक्तवाहिनी नसों की पीडा, धर्नुस्तम्भ, स्नायु दुर्बलता किसी अंश का सूनापन, पीप वाली फुन्सी और कुष्ठ में इसकी फलियों का शाग सेवन करना बहुत लाभकारी है।

1. शिग्रुः सरः कटुः पाके तीक्ष्णोष्णो मधुरोलघुः।
दीपनः रोचनो रुक्षः क्षारस्तिक्तो विदाहकृत।।
संग्राह्यशुक्रलो हृद्यः पित्तरक्तप्रकोपणः
चक्षुष्यः कफवातघ्नो, विद्रधिश्वयथुक्रिमीन्।। (भाव प्रकाश)

2. चक्षुष्यं शिग्रुजं बीजं तीक्ष्णोष्णं विषनाशनम्।
अवृष्यं कफवातघ्नं तन्नस्येन शिरोऽर्तिहृत्।। (भाव प्रकाश)

3. शिग्रुतोलानि तीक्ष्णानि लघुन्युष्णवीर्याणि कटूनि कटुविपाकानि सराण्यनिलकफकृमिकुष्ठप्रमेह शिरोरोगापहराणि चेति। (सुश्रुत)

4. शिग्रुस्तिक्तः कटुश्चोष्णः कफशोफसमीरजित्।
कृम्यामविषमेदोघ्नो विद्रधिप्लीहगुल्मनुत्।। (ध०नि०)

5. सौतं, सुहागा, सेंधा, गोंधी। सहिजन के रस में बरिया बोंधी।।
सत्तर शूल और अस्सी बाई। कहे धनन्तर छन में जाई।
(लोकोक्ति)

Scanned by CamScanner

शरपुंखा वात

वैज्ञानिक नाम	:	*Tephrosia purpurea* (L.) Pers.
कुलनाम	:	Fabaceae
अंग्रेजी नाम	:	Purple tephrosia, Wild indigo
संस्कृत	:	शरपुंखा, प्लीह शत्रु, नील वृक्षाकृति
हिन्दी	:	सरफोंका
गुजराती	:	शरपंखो
मराठी	:	उन्हाली, शीरपंखा
बंगाली	:	बननील
तेलगु	:	वेपलि
फारसी	:	वर्गसुफार

परिचय

समस्त भारतवर्ष में, तथा हिमालय क्षेत्रों में 6,000 फुट की ऊंचाई तक इसके स्वयंजात पौधे होते है। पुष्प भेद से शरपुंखा के दो भेद होते हैः रक्त पुष्पी और श्वेत पुष्पी। प्रायः शरपुंखा के नाम से लाल या बैंगनी रंग के फूल वाली वनस्पति का ग्रहण एवं प्रयोग किया जाता है। शरपुखां पर फूल वर्षा ऋतु में तथा फल शरद् ऋतु मे लगते है।

बाह्य–स्वरूप

इसके बहुशाखी पादप 1–3 फुट ऊँचे, सीधे, कांड बेलनाकार, चिकने व किंचित रोमशः, पत्तियां, विषम पक्षवत् जिनमें 5–9 जोड़ें पत्रक होते है, पत्रक 1 इंच लम्बे, 1/2 इंच चौडे, प्रति भालाकार नताग्र या रोमशाग्र होते है। पत्रकों को तोड़ने पर बाण के समान नुकीले टूटते हैं। पुष्प लाल या बैंगनी रंग के 3–6 इंच लम्बी मञ्जरियों में निकलते हैं, फली 1–2 इंच लम्बी, सीधी किंचित चपटी रोमश, कुंठिताग्र एक चोंच जैसी नोक, बीज 4–10 छोटे वृक्काकार पीतवर्ण द्विदल तथा इनका बाह्य छिलका चितकबरा होता है।

रासायनिक संघटन

शरपुखां के पौधे से 6 प्रतिशत राख प्राप्त होती है, जिसमें अल्प मात्रा में मैंगनीज, क्लोरोफिल, भूरे रंग का रालीय पदार्थ, मोम,

Scanned by CamScanner

क्षारीय एल्ब्युमिन, रंजक द्रव्य एवं क्वेसेटीन या क्वेरसाइट्रीन के समान एक द्रव्य होता है।

गुण-धर्म

यह कफ वातशामक, प्लीहोदर नाशक है। इसका–बाह्यलेप शोथहर, कुष्ठघ्न, विषघ्न, जन्तुघ्न व्रणरोपण, रक्त रोधक और दन्त्य है। आतरिक प्रयोग मे यह दीपन, अनुलोमन, पित्तसारक, कृमिघ्न और प्लीहघ्न है। यह रक्तशोधक और कफ निःसारक है। यह मूत्रल और गर्भाशय उत्तेजक है। कुष्ठघ्न, ज्वरघ्न व विषघ्न है। श्वेत शरपुंखा अधिक गुणकारी और रसायन है।

औषधीय प्रयोग

दंतरोग : शरपुंखा के मूल के 100 ग्राम क्वाथ में हरड़ की लुग्दी 10 ग्राम डालकर 100 ग्राम तेल में पकायें, जब तेल का जलीयांश जल जाये तब उतारकर, ठण्डा होने पर रूई के फोहे में लगाकर दंत शूल के लिए प्रयोग करना चाहिए। दंत रोगो में इसके मूल को कूटकर दुखते दांत के नीचे रखने से भी बहुत लाभ होता है।

कास : खांसी में इसके सूखे मूल का धुआं सूंघने से लाभ होता है।

श्वास रोग : श्वास रोग में शरपुंखा का 2 ग्राम लवण मधु के साथ दिन में तीन बार चटाना चाहिये।

गुल्मरोग : इसके क्षार में समान भाग हरड़ का चूर्ण मिलाकर चार ग्राम की मात्रा में भोजन के बाद सुबह–शाम देने से गुल्म रोग मिटता हैं।

मन्दाग्नि : शरपुंखे की 10 ग्राम कड़वी जड़ को 200 ग्राम पानी में उबालकर सुबह–शाम पिलाने से मंदाग्नि मिटती हैं।

संग्रहणी : शरपुंखे के 20 ग्राम क्वाथ में 2 ग्राम सौंठ डालकर प्रातः–सायं पीने से संग्रहणी मिटती है।

अफारा : इसकी जड़ के 10–20 ग्राम क्वाथ में भुनी हुई 250 से 500 मिलीग्राम हींग मिलाकर प्रातः–सायं पिलाने से अफारा मिटता है।

उदरशूल : इसकी ताजी जड़ की छाल 10 ग्राम को 2–3 नग काली मिर्च के साथ पीसकर गोली बनाकर दिन में तीन बार देने से हठीला और दुःसाध्य उदरशूल मिटता है।

अतिसार: शरपुंखे के 5 ग्राम क्वाथ में 1–2 नग लौंग डालकर दिन में 3–4 बार पीने से अतिसार मिटता है।

उदर कृमि :

1. शरपुंखे के 10 ग्राम क्वाथ में वायबिडंग का 2 ग्राम चूर्ण समभाग मिलाकर रात में सोते समय पिलाने से बच्चो के पेट के कृमि नष्ट हो जाते है।
2. इसके 5 से 10 ग्राम बीजों का प्रयोग उष्ण जल के साथ बच्चों के कृमिरोग में लाभकारी है।

विसूचिका : इसकी जड़ों को पीसकर दो ग्राम की मात्रा मे सुबह–शाम पिलाने से हैजे में लाभ होता है।

मूत्रकृच्छ : मूत्रकृच्छ में इसके 20–25 पत्तों को पीसकर पानी के साथ उनमें 3–4 नग काली मिर्च डालकर पिलाने से बहुत लाभ होता है।

बवासीर : शरपुंखे के पत्ते और भांग के पत्तों को समान मात्रा में पीसकर उनकी लुग्दी बनाकर, गुदा पर बांधने से खूनी बवासीर मिटती है।

प्लीहावृद्धि:

1. इसकी जड के 10 ग्राम कल्क को 250 ग्राम छाछ के साथ दिन में दो बार पिलाने से बढ़ी हुई तिल्ली कम हो जाती है।
2. यकृत एवं प्लीहावृद्धि में इसके मूल को दातुन की तरह चबाकर इसका रस अन्दर उदर में उतारने से बहुत लाभ होता है।
3. प्लीहावृद्धि में शरपुंखा के पादप को जड़ सहित उखाड़कर छाया में सुखाकर चूर्ण बनाकर 3 से 5 ग्राम की मात्रा में सुबह–शाम सेवन करने से प्लीहा रोग ठीक हो जाता है।
4. यकृत प्लीहा वृद्धि में शरपुंखे की मूल की 10 से 20 ग्राम कल्क का प्रयोग 2 ग्राम हरड और एक गिलास मट्ठे के साथ प्रातः–सायं करने से लाभ होता हैं।

चर्मरोग: इसके बीजों के तेल को कंडू, खुजली आदि दुःसह्य चर्म रोगों पर लगाने से लाभ होता है।

कुष्ठ: शरपुंखा के पत्रों का 10–20 मिलीलीटर स्वरस दिन में दो

शरपुंखा का पंचांग (सूखा)

Scanned by CamScanner

तीन बार पीने से कुष्ठ रोग में लाभ होता है।

व्रण:

1. शरपुंखा की 15–20 ग्राम मूल को जल में पीसकर उसमें 2 चम्मच मधु मिलाकर व्रण पर लेप करने से दुष्ट व्रण का रोपण शीघ्र हो जाता है।[3]
2. शरपुंखा, काकजंघा, नवजात भैंसे का प्रथम मल, लज्जालु इनमें से किसी एक को आवश्यकतानुसार लेकर लेप कर देने से सद्यक्षत नष्ट होता है।[4]
3. शरपुंखे की जड़ के एक ग्राम चूर्ण को तंडुलोदक के साथ पीने से अतिशय रक्तस्राव शान्त होता है।[5]

दाह: शरपुंखा के 10–20 ग्राम बीजों को एक गिलास ठंडे पानी में भिगोकर मसल कर, छानकर पिलाने से शरीर की दाह और ऊष्मा मिटती हैं।

फोड़े फुन्सी: शरपुंखे के 10–20 ग्राम क्वाथ में मधु 2 चम्मच मिलाकर खाली पेट सुबह–शाम पिलाने से रूधिर शुद्ध होता है और शरीर के फोड़े फुन्सी मिट जाते है।

1. शरपुंखा प्लीहशत्रुर्नीलवृक्षाकृतिश्च सा।
शरपुंखा यकृत्प्लीहगुल्मव्रणविषापहः।।
तिक्तः कषायः कासास्रश्वासज्वरहरोलघुः (भाव प्रकाश)
2. शरपुंखा कटूष्णा कृमिवातरूजापहा।
श्वेता त्वाशुगुणाढ्या स्यात् प्रशस्ता च रसायने।।
कण्ठपुंखा कटूष्णा च कृमिशूलविनाशिनी। (रा०नि०)
3. मधुयुक्ता शरपुखां दुष्टव्रणरोपणी कथिता।
शरपुंखायू लघुभ्यां लेपः।। (भैषज्य रत्नावली)
4. शरपुंखा काकजंघा प्रथमं माहिषिसुतम्।
मलं लज्जा च सद्यस्क व्रणघ्नं पृथगेव तु।।
(भैषज्य रत्नावली)
5. मूलश्चं शरपुखां पेयथेत्तडुलाम्बुम।
पीत्वा च भाषायात्राम्बू अतिरक्त शान्तयेत।।
(भैषज्य रत्नावली)

Scanned by CamScanner

सत्यानाशी

उदारि

वैज्ञानिक नाम	:	*Argemone mexicana* L.
कुलनाम	:	Papaveraceae
अंग्रेजी नाम	:	Prickly poppy, Mexican poppy
संस्कृत	:	स्वर्णक्षीरी, काञ्चनक्षीरी, पीतदुग्धा, कटुपर्णी
हिन्दी	:	पीला धतूरा, फिरंगीधतूरा, सत्यानाशी, स्याकांटा, भड़भांड
गुजराती	:	दारुड़ी
मराठी	:	काटे धोत्रा, मिल धात्रा
बंगाली	:	सोना खिरनी, शियालकाँटा
पंजाबी	:	भटकटैया करियाई, कटसी, सत्यानाशी
तैलगु	:	ब्रह्मदंडी, इट्टूरि
तमिल	:	कुश्मकं, कुडियोट्टि

परिचय

यह एक अमेरिकन वनस्पति है, परन्तु भारतवर्ष में अब यह सब जगह उत्पन्न होती है। इस पादप के किसी भी अंग को तोड़ने से उसमें से स्वर्ण सदृश, पीतवर्ण दूध निकलता है, इसलिये इसका नाम स्वर्णक्षीरी भी है। इसका फल चौकोर, कंटकित, प्यालानुमा होता है, जिसमें राई के समान छोटे–छोटे कृष्ण बीज भरे रहते हैं, जो दहकते कोयलों पर डालने से भड़भड़ बोलते हैं। उत्तर प्रदेश में इसे भड़भाँड़ कहते हैं। इसके पूरे पौधे पर कांटे होते हैं।

बाह्य–स्वरूप

सत्यानाशी के 2–4 फुट ऊँचे झाड़ का कांड छोटा, पत्र लम्बे कटे–कटे, कंटकित, मध्य शिरा मोटी, श्वेत और अन्य शिरायें भी सफेद होती है। पुष्प चमकीले पीले रंग के, फल एक–डेढ़ इंच लम्बे चौकोर, कंटकित तथा बीज अनेक, राई के समान बारूद जैसे छोटे–छोटे कृष्ण वर्ण के होते है। इसकी जड़ को चोक कहते हैं।

रासायनिक संघटन

इसमें बर्बेरीन, प्रोटोपिन नामक क्षाराभ, बीजों में 22–26 प्रतिशत तक अरूचिकर तिक्त स्थिर तेल होता है।

Scanned by CamScanner

गुण–धर्म

यह कफपित्त हर है। बाह्य प्रयोग में इसका दूध, पत्र स्वरस, तथा बीज तेल, व्रणशोधन, व्रणरोपण तथा कुष्ठघ्न है। इसके मूल का लेप शोथहर और विषघ्न है। बीज वेदनास्थापन है। आभ्यान्तर प्रयोग में इसके मूल तथा बीजों का तेल रेचन है। यह हृल्लास–कारक और कभी–कभी वामक भी होता है। मूल कृमिघ्न है।[1] इसके मूल का स्वरस रक्तशोधक तथा दूध शोथहर है। मूल तथा दूध विषम ज्वरघ्न है। इस वनस्पति के पंचाग का धनक्वाथ रोचक, जड़ कृमिघ्न और कुष्ठनाशक और पीला दूध मूत्रल, कुष्ठनाशक व्रणशोधक, व्रणरोपण, शोथघ्न, ज्वर को दूर करने वाला होता है।

औषधीय प्रयोग

नेत्र रोग:

1. इसके दूध की एक बूंद में, तीन बूंद घी मिलाकर नेत्रों में अंजन करने से नेत्र शुष्क रोग, अधिमंथ रोग और नेत्रों का अंधापन दूर होता है।[2]
2. सुवर्ण क्षीरी का क्षार एक ग्राम, 50 ग्राम गुलाब जल में मिलाकर प्रतिदिन दो बार दो–दो बूंद नेत्रों में डालने से नेत्र शोथ, नेत्रों की लाली, धुंध, जाली तथा नेत्रफूली दूर होकर नेत्रों को लाभ पहुंचाता है।
3. इसके पत्तों का स्वरस भी नेत्रों में 2–2 बूंद डालने से सब प्रकार के नेत्र रोग दूर होते हैं।

श्वास कास : श्वास रोग तथा कास में इसके मूल का चूर्ण आधा से 1 ग्राम उष्ण जल या दूध के साथ प्रातः–सायं पिलाने से कफ बाहर निकल जाता है, अथवा इसका पीला दूध 4–5 बूंद बतासे में डालकर खाने से लाभ होता है।

कफ प्रकोप :

1. सत्यानाशी के पंचाग का 500 ग्राम रस निकालकर उसको आग पर उबालना चाहिए। जब वह रबडी के समान गाढा हो जाये तब उसमें पुराना गुड़ 60 ग्राम और राल 20 ग्राम मिलाकर, खरल करें, 250–250 मिलीग्राम की गोलियां बना लेनी चाहिए, 1–1 गोली दिन में तीन बार गरम पानी के साथ देने से दमे में आशातीत लाभ होता है।
2. अथवा इसके पत्रों के रस का घनक्वाथ बनाकर इसमें बैन्जोइक एसिड समभाग मिलाकर चने के बराबर गोलियां बनाकर, 1–1 गोली दिन में तीन बार श्वांस रोगी को खिलाने से लाभ होता है।

स्नोफीलिया : स्नोफीलिया के रोगी को भी इसकी 1 ग्राम मात्रा दिन मे दो बार दूध से प्रयोग करने पर लाभ होता है।

उदरशूल : इसके 3–5 मिलीलीटर पीले दूध को 10 ग्राम घी के साथ पिलाने से उदरशूल मिटता है।

रेचन : इसका तेल विरेचक है, परन्तु सब मनुष्यों पर इसका प्रभाव समान नहीं होता, किसी को 3–4 दस्त होते हैं, तो किसी को 15–16, परन्तु इसके प्रयोग में प्रारम्भ में ही वमन हो जाने पर भी निर्बलता नहीं आती।

Scanned by CamScanner

मूत्रविकार : मूत्रनली में यदि जलन हो तो इसके 20 ग्राम पंचाग को 200 ग्राम पानी में भिगोकर तैयार हिम या फांट पिलाने से मूत्रवृद्धि होती है और मूत्रनली की दाह मिटती है।

कामला : 10 ग्राम गिलोय के रस में इसके तेल की 8–10 बूंद डालकर प्रातः–सायं पिलाने से कामला मिटता है।

शूल: इसके तेल की 30 बूंद एक ग्राम सौंठ के साथ देने से शूल मिटता है।

जलोदर :

1. जलोदर में इसका (पंचाग) स्वरस 5–10 ग्राम दिन में 3–4 बार पिलाने से मूत्र खुलकर आता है तथा जमा हुआ पानी बाहर निकल जाता है।
2. 2–3 ग्राम सैंधा नमक में इसके तेल की 4–5 बूंदें डालकर फंकी देने से भी लाभ होता है।

सिफिलिस : कटुपर्णी के पंचाग का रस निकालकर इसमें से 5 ग्राम लेकर दूध में मिलाकर दिन में 3 बार पिलाना चाहिए तथा इसके छालों पर दूध भी लगाना चाहिए।

सुजाक : इसके 2–5 मिलीलीटर पीले दूध को मक्खन और कीड़ा मारी के साथ देने से अथवा इसके पत्तों के 5 ग्राम रस को 10 ग्राम घी में मिलाकर दिन में दो तीन बार देने सुजाक में लाभ होता है।

नपुंसकता : नपुंसकता दूर करने के लिए कटुपर्णी की एक ग्राम छाल तथा बरगद का दूध दोनों को गरम कर चने के बराबर गोलियां बनाकर 14 दिन तक पान के साथ प्रातः–सायं सेवन करने से नपुंसकता दूर होती है।

कुष्ठ रोग :

1. कुष्ठ रोग और रक्त पित्त में इसके बीजों का तेल शरीर पर मालिश करने से और पत्रों का स्वरस 5 से 10 ग्राम, 250 ग्राम दूध में मिलाकर प्रातः–सायं पिलाने से लाभ होता है।
2. सुवर्णक्षीरी को पुराने व्रण एवं खुजली में लगाने से लाभ होता है।
3. छाले, फोड़े, फुंसी, विस्फोटक, खुजली दाह, फिरंग, उपदंश आदि पर इसके पंचाग का रस या पीला दूध लगाने से लाभ होता है।
4. कुष्ठ रोग में इसके स्वरस में थोड़ा नमक डालकर लम्बे समय तक सेवन से लाभ होता है। प्रतिदिन 5 से 10 ग्राम रस का सेवन लाभकारी है।

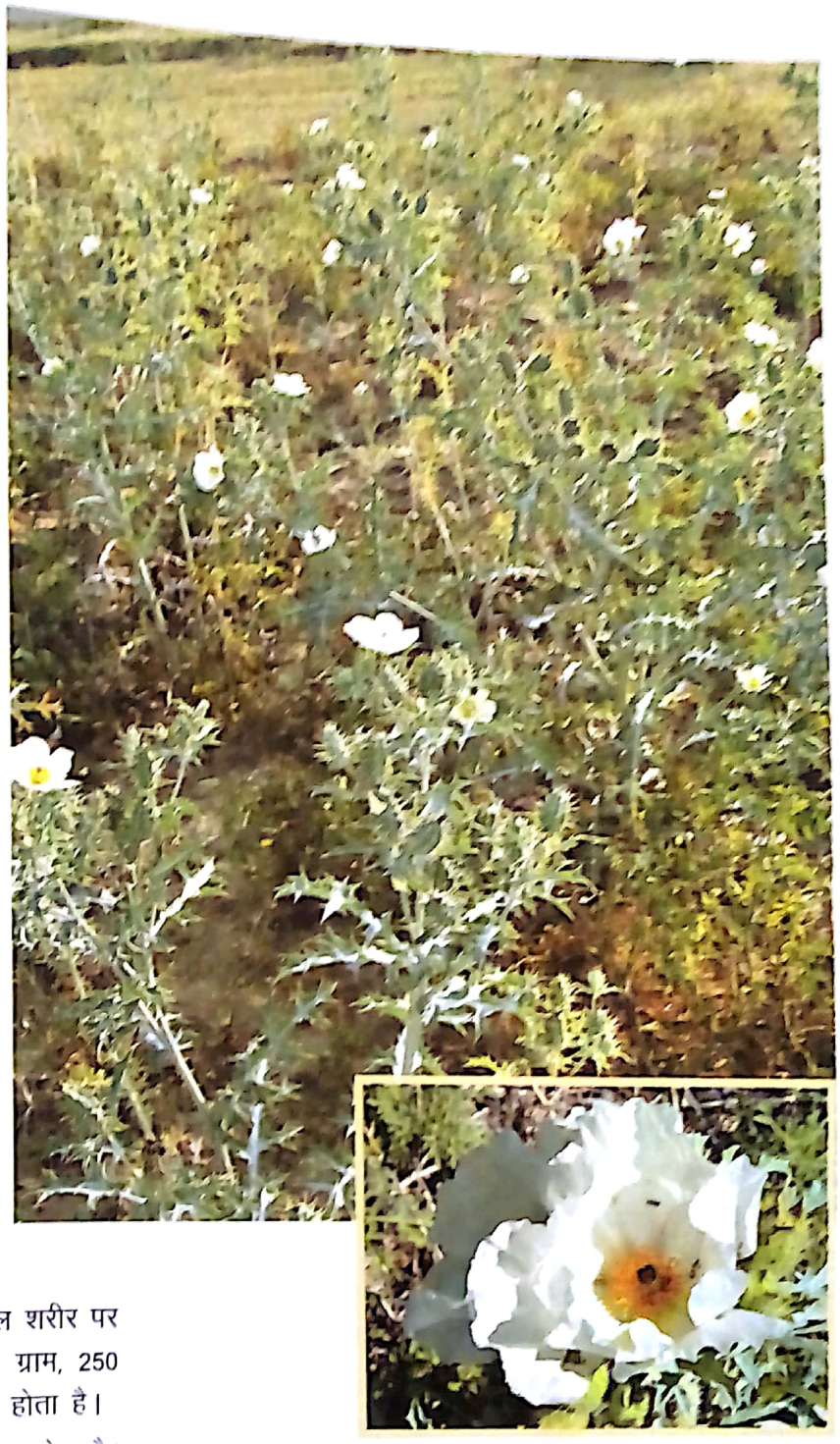

श्वेत सत्यानाशी - *Argemone ochroleuca*

दाद : दद्रु रोग में इसके पत्र स्वरस या तेल को लगाने से शांति मिलती है।

विसर्प : इसमें भी इसका तेल लगाने से लाभ होता है।

व्रण : न भरने वाले घावों पर इसका दूध लगाने से पुराने और बिगड़े हुए फोड़े स्वच्छ हो जाते हैं।

1. हेमाह्वा रेचनी तिक्ता भेदन्युत्क्लेशकारिणी।
   कृमिकण्डू विषानाहकफपित्तास्रकुष्ठनुत्।। (भाव प्रकाश)
2. तस्य दाश्मि बिन्दुमात्रं नेत्रेलिप्तम घृतप्लुतम्।
   शुक्लम् ब्रह्मादि मारनं च नेत्रांध्यम् च विनाशयेत्।। (गण–निघंटु)

Scanned by CamScanner

110 सौंठ (अदरक)

वैज्ञानिक नाम	:	*Zingiber officinale* Rosc.
कुलनाम	:	Zingiberaceae
अंग्रेजी नाम	:	Ginger
संस्कृत	:	आर्दक, आर्द्रशाक
हिन्दी	:	आदी, अदरक, सौंठ
गुजराती	:	आदु
मराठी	:	आलें
बंगाली	:	आदा, सूंठ
तैलगु	:	सल्लम, शोंठि
द्राविड़ी	:	हमिशोठ
अरबी	:	जजबील, रतन
कन्नड़	:	शूंठि
फारसी	:	शंगवीर

परिचय

अदरक भारतवर्ष के सब स्थानों में बोया जाता है। भूमि के अन्दर उगने वाला कन्द आर्द्र अवस्था में अदरक, व सूखी अवस्था में सौंठ कहलाता है।

बाह्य–स्वरूप

यह उर्वरा तथा रेत मिश्रित भूमि में पैदा होने वाली गुल्म जाति की वनस्पति का कन्द है, हर कोई इसे जानता है। इसके पत्ते बांस के पत्तों से मिलते जुलते तथा एक या डेढ़ फीट ऊँचे लगते हैं।

रासायनिक संघटन

अदरक में आर्द्रता 80.9, प्रोटीन 2.3, वसा 0.9, सूत्र 2.4, कार्बोहाइड्रेट 12.3, खनिज 1.2 प्रतिशत, कैल्शियम 20, फास्फोरस 60, लौह 2.6 मि०ग्रा० प्रति 100 ग्राम तथा कुछ आयोडीन और क्लोरीन भी होता है। विटामीन ए, बी, और सी भी होते है। सौंठ में नमी 10–9, प्रोटीन 15.4, सूत्र 6.2, स्टार्च 5.3, कुल भस्म 6.6, उड़नशील तेल 1–2.6 प्रतिशत होता है। उड़नशील तेल छिलके वाली सौंठ से प्राप्त किया जाता है, क्योंकि अदरक के छिलके में ही तेल कोषाणु विशेष रूप से मिलते हैं। यही तेल अदरक से भी निकाला जा सकता है, इस तेल का नाम सौंठ तेल (ऑयल आफ जिंजर) है। इसमें कटुता नहीं होती। इस तेल में जिंजी बेरीन तथा जिंजीबराल आदि तत्व होते है।

सौंठ में उपस्थित रहने वाला कटु तत्व उड़नशील नहीं होता। अतः सौंठ के चूर्ण को अल्कोहल या ईथर में रखने पर एक गाढ़ा गहरे भूरे रंग का तेलीय राल, जिसे जिंजरीन[2] भी कहते हैं, प्राप्त होता है। द्रव्य की सारी कटुता इसी में होती है। यह लगभग 6.5 प्रतिशत होता है। इसके अतिरिक्त तेलीय राल में सुगन्धित तेल 6–28 प्रतिशत तथा अकटु पदार्थ 30 प्रतिशत होते है। कटु तत्वों में जिजंरोल, शोगाओल तथा जिजंरीन प्रमुख है।

गुण–धर्म

यह उष्ण होने से कफ–वात शामक है। सर्दी का नाश करने वाला, शोथहर और वेदनास्थापन है। यह नाड़ियों को उत्तेजना

Scanned by CamScanner

देने वाला और वातशामक है। यह तृप्तिघ्न, रोचन, दीपन, पाचन, वातानुलोमन, शूल प्रशमन तथा अर्शोघ्न है। उष्ण होने के कारण हृदय एवं रक्तवह संस्थान को उत्तेजित करता है। यह शोथहर तथा रक्त शोधक है। अदरक कटु और स्निग्ध होने के कारण कारण यह स्त्रोतोवरोध का भी निवारण करती है।

कफघ्न और श्वास हर है। यह मधुर विपाक होने से वृष्य और उष्ण होने से उत्तेजक है। यह ज्वरघ्न और शीत प्रशमन है। सौंठ एक उत्तम आमपाचन है। अतः शरीरस्थ आमदोष का पाचन कर आम से उत्पन्न होने वाले विविध विकारों को दूर करती है। तीक्ष्णता के

औषधीय प्रयोग

शिरोवेदना : दूध से चतुर्थांश सौंठ का कल्क मिलाकर, नस्य लेने से नाना दोषों से उत्पन्न तीव्र शिरोवेदना नष्ट होती है।

प्रतिश्याय : 2 चम्मच अदरक के रस में मधु डालकर प्रातः–सायं सेवन करने से श्वास कास तथा प्रतिश्याय आदि रोग शान्त होते हैं।

नजला : 2 चम्मच अदरक का रस गर्म करके उसमें शहद मिलाकर पीने से नजले–जुकाम का वेग कम होता है। शीत प्रशमन होता है।

दमा : जो रोगी पिप्पली तथा सैंधा नमक इनके मिश्रित चूर्ण को अदरक के रस के साथ सोने के समय सेवन करता है, वह सात दिन के अन्दर ही श्वास रोग से मुक्त हो जाता है।[3]

मूर्च्छा : इसके रस की नस्य देने से ज्वर में होने वाली मूर्च्छा मिटती है।

दंतशूल : सर्दी की दन्त पीड़ा में इसके टुकडे को दांतों के बीच दबाने से लाभ होता है।

कर्णशूल : इसका रस गुनगुना कर 2–5 बूंद कान में डालने से कर्णशूल मिटती है।

निमोनिया : अदरक रस में 1 या दो वर्ष पुराना घी व कपूर मिलाकर गरम कर छाती पर मालिश करें।

आम पाचन : सौंठ, अतीस, नागरमोथा, इनका क्वाथ आम का पाचन करता है अथवा सौंठ, अतीस, नागरमोथा का कल्क, केवल पथ्या का चूर्ण अथवा सौंठ का चूर्ण मिलाकर गरम पानी के साथ सेवन करने से भी आम का पाचन होता है। (मात्रा–500 मि०ग्रा० से 2 ग्रा० तक)।[2]

संग्रहणी : सौंठ, नागरमोथा, अतीस, गिलोय, इन्हें समभाग लेकर जल से क्वाथ करे। इस क्वाथ को प्रातः–सायं पीने से मंदाग्नि, निरन्तर कोष्ठ का आम दोष युक्त रहना एवं आम संयुक्त ग्रहणी रोग शान्त होता है।[1] (मात्रा 20 से 25 मि०ली०)

ग्रहणी : गिलोय, अतीस, सौंठ, नागरमोथा, इन चारों का क्वाथ आमयुक्त ग्रहणी रोग को हरता है। ग्राही, दीपन तथा पाचन है। (मात्रा 20 से 25 मि०ली० दिन में दो बार)

दीपन :

1. 2 ग्राम सौंठ का चूर्ण घृत के साथ अथवा केवल सौंठ का चूर्ण उष्ण जल के साथ प्रतिदिन प्रातः काल खाने से भूख बढ़ती है।
2. प्रतिदिन भोजन के प्रारम्भ में लवण एवं अदरक की चटनी खाने से जीभ एवं कंठ की शुद्धि होती है। अग्नि प्रदीप्त तथा हृदय बलवान होता है।[4]
3. इसका अचार खाने से भूख बढ़ती है।

अजीर्ण : यदि प्रातः काल अजीर्ण (रात्रि का भोजन न पचने) की शंका हो तो हरड़, सौंठ तथा सैंधा नमक का चूर्ण जल के साथ चम्मच खा लेवें। दोपहर अथवा सांयकाल थोड़ा भोजन कर लेवें।[1]

अरुचि :

1. सौंठ और पित्तपापड़ा का पाक ज्वरनाशक, अग्नि प्रदीप्त करने वाला तृष्णा तथा भोजन की अरुचि को शान्त करने है।[2] इसे 5–10 ग्राम की मात्रा में नित्य सेवन करें।
2. सौंठ, चिरायता, नागरमोथा, गुरुच का पाक्यभी ज्वर नाशक अग्नि प्रदीप्त करने वाला, तृष्णा एवं भोजन की अरूचि को शान्त करने वाला होता है।[3]

उदर रोग : सौंठ, हरीतकी, बहेड़ा, आँवला इनको समभाग लेकर कल्क बनाले। गाय का घी तथा तिल का तेल ढाई किलोग्राम, दही का पानी ढाई किलोग्राम, इन सबको मिलाकर विधिपूर्वक घी का पाक करें, तैयार हो जाने पर छानकर रख लें। इस घृत का पान 10–20 ग्राम की मात्रा में प्रातः–सायं करने से सभी प्रकार के उदररोगों का नाश होता है तथा कफज, वातज एवं गुल्मरोग में भी इसका प्रयोग होता है।[8]

मंदाग्नि :

1. अजवायन, सैंधा नमक, हरड, सौंठ इनके चूर्णो को समपरिमाण में एकत्रित करें। मात्रा 500 से 250 मि०ली० तक। यह चूर्ण शूल को नष्ट करता है। तथा मन्द अग्नि को प्रदीप्त करता है।[3]
2. इसके 10–20 ग्राम रस में समभाग नींबू का रस मिलाकर पिलाने से मंदाग्नि दूर होती है।

वमन : इसके 10 ग्राम रस में, 10 ग्राम प्याज का रस मिलाकर पिलाने से लाभ होता है।

बहुमूत्र : इसके 2 चम्मच रस में मिश्री मिला प्रातः–सायं सेवन करने से लाभ होता है।

अर्शजनित वेदना : दुरालभा और पाठा, वेल का गूदा और पाठा, अजवाइन व पाठा अथवा सौंठ और पाठा इनमें से किसी एक योग

Scanned by CamScanner

का सेवन करने से अर्शजनित वेदना का शमन हो जाता है।

मूत्रकृच्छ : सौंठ, कटेली की जड़, बला मूल, गोखरु इन सबको 2–2 ग्राम मात्रा तथा 10 ग्राम गुड़ को 250 ग्राम दूध में उबालकर प्रातः–सायं पीने से मल–मूत्र की रुकावट का, ज्वर का तथा शोथ का नाश होता है।

अण्डकोषवृद्धि : इसके 10–20 ग्राम स्वरस में 2 चम्मच मधु मिलाकर पीने से वातज अंडकोषवृद्धि मिटती है।

कामला : अदरक, त्रिफला और गुड का मिश्रण देने से कामला मिटता है।

अतिसार :

1. सौंठ, खस, विल्वगिरी, मोथा, धनियाँ, मोचरस तथा नेत्रबाला का क्वाथ अतिसार नाशक तथा पित्त–कफ ज्वर नाशक है।[3]
2. धनिया 10 ग्राम, सौंठ 10 ग्राम इनका विधिवत क्वाथ करके रोगी को प्रातः–सायं सेवन करने से वातश्लेष्मज्वर, शूल और अतिसार नष्ट होता है।
3. सौंठ और इन्द्र जौ के समभाग चूर्ण को चावल के पानी के साथ पीने को दें, जब चूर्ण पच जाए, उसके बाद चांगेरी, तक्र, दाडिम का रस डालकर पकायी यवागू अतिसार में खाने को दें।[5]

वातरक्त : अंशुमती के क्वाथ से 640 ग्राम दूध को पकाकर उसे 80 ग्राम मिश्री मिलाकर पीने के लिये दें। उसी प्रकार पिप्पली और सौंठ का क्वाथ तैयार करके 20 मि०ली० प्रातः–सायं वातरक्त के रोगी को पीने के लिये दें।

वातशूल : सौंठ तथा एरण्डमूल के क्वाथ में हींग और सौवर्चल नमक का प्रक्षेप देकर पीने से वात शूल नष्ट होता है।[2]

शोथ :

1. सौंठ, पिप्पली, जमालगोटा की जड़, चित्रक मूल, वाय विडंग इन सभी द्रव्यों को समान भाग लें और दूनी मात्रा में हरीतकी चूर्ण लेकर इस चूर्ण का सेवन 3–6 ग्राम की मात्रा में गरम जल के साथ प्रातः–सायं करें।[6]
2. सौंठ, पिप्पली, पाण, गज पिप्पली, छोटी कटेरी, चित्रकमूल, पिप्पलामूल, हल्दी, जीरा मोथा इन सभी द्रव्यों को समभाग लेकर इनके कपडछन चूर्ण को मिलाकर रख ले, इस चूर्ण को 2 ग्राम की मात्रा में गुनगुने जल के साथ दिन में 3 बार सेवन करने से त्रिदोष जनित शोथ तथा चिरकाल जनित शोथ का विनाश होता है।
3. अदरक का 10 से 20 ग्राम स्वरस गुड मिलाकर प्रातः काल पी ले। सब प्राकर की शोथ शीघ्र ही नष्ट हो जाती है। (पथ्य केवल बकरी का दूध)

शूल : सौंठ के क्वाथ के साथ काला नमक, हींग तथा सौंठ के मिश्रित चूर्ण के सेवन करने से कफवातज हृच्छूल, पार्श्व शूल, पृष्ठशूल, उदरजल, तथा विसूचिका, प्रभृति रोग नष्ट होते हैं। यदि मल बन्ध होता है तो इसके चूर्ण को जौ के क्वाथ के साथ पीना चाहिये।

सधिपीडा : अदरक के एक किलोग्राम रस में 500 ग्राम तिल का तेल डालकर आग पर पकाना चाहिये, जब रस जलकर तेल मात्र रह जाये, तब उतारकर छान लेना चाहिये। इस तेल की शरीर पर मालिश करने से जोड़ों की पीडा मिटती है।

ज्वर तृषा : सौंठ, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, खस लाल चन्दन, सुगन्ध बेला इन सबको समभाग लेकर बताये गये क्वाथ को थोड़ा–थोड़ा पीने से ज्वर तथा प्यास शान्त होती है। यह उस रोगी को देना चाहिये जिसे ज्वर में बार–बार प्यास लगती है।[1]

कुष्ठ : सौंठ, मदार की पत्ती, अडूसा की पत्ती, निशोथ, बडी इलायची, कुंदरू इन सबका समान–समान मात्रा में बने चूर्ण को पलाश के क्षार और गोमूत्र में घोलकर बने लेप को लगाकर धूप में तब तक बैठे जब तक वह सूख न जाए, इससे मण्डल कुष्ठ फूट जाता है और उसके घाव शीघ्र ही भर जाते हैं।[4]

ज्वर : समस्त ज्वरों में सौंठ एव धमासा का कषाय पंचविध कषाय बनाकर पीयें।

अदरक कच्चा

अदरक सूखा (सौंठ)

Scanned by CamScanner

दाह ज्वर : सौंठ, गन्धबाला, पित्तपापड़ा खस, मोथा, लाल चन्दन इनका क्वाथ ठंडा करके सेवन करने से तृष्णा–वमन पित्तज्वर तथा दाह का निवारण होता है।[2]

हैजा : अदरक का 10 ग्राम, आक की जड़ 10 ग्राम, इन दोनों को खरल कर इसकी काली मिर्च के बराबर गोली बनालें। इन गोलियों को गुनगुने पानी के साथ देने से हैजे में लाभ पहुँचता है इसी प्रकार अदरक का रस व तुलसी का रस समान भाग लेकर उसमें थोड़ी सी शहद अथवा थोड़ी सी मोर के पंख की भस्म मिलाने से भी हैजे में लाभ पहुँचता है।

इन्फ्ल्युएंजा : 6 ग्राम अदरक रस में, 6 ग्राम शहद मिलाकर दिन में 3–4 बार सेवन करें।

सन्निपात ज्वरः त्रिकुट, सैंधा नमक और अदरक का रस मिलाकर कुछ दिनों तक सुबह–शाम चटायें।

शरीर शैत्य : सन्निपात की दशा में जब शरीर ठंडा पड जाये तो इसके रस में थोड़ा लहसुन का रस मिलाकर मालिश करने से गरमाई आ जाती है।

1. मुस्तपर्पटकोशीर चन्दनोदीच्यनागरैः।
श्रृतंशीतं जलं दद्यात् पिपासा ज्वरशान्तये। (चरक)

2. मत ऊर्ध्व प्रवक्ष्यन्ते कषाया ज्वर नाशनाः।
पाक्यं शीत कषायं वा मुस्त वर्षपरकं जिबेत।। (चरक)

3. सनागरं पपर्टकं पिवेद् वा सदुरालभम्।
किराततिक्तं मुस्तंगुडूची विश्वभेषजम्।
पाठामुशीरं सोदीच्यं पिवेद् वा ज्वरशान्तये।
ज्वरघ्ना दीपनश्चैते कषाया दोष पाचनाः।।
तृष्णा रुचि प्रशमनामुखवैरस्यनाशनाः। (चरक)

4. चित्रकमेला बिम्बी वृषकं त्रिवृदर्कनागरम्।
चूर्णीकृतमष्टाहं भावयितव्यं पलाशस्य।।
क्षारेण गवां मूत्रसूत्रेण तेन तेनास्य मंडलान्याशु।।
मिद्यन्ते विलयन्ति च लिप्तान्यर्कामितप्तानि।। (चरक)

5. सनागरा मिन्द्रयवान पामयेत् तंडूलाम्बुना।
सिद्धां भवाम् जीर्णे च चाङ्गरीत कदाडिमैः।। (चरक)

6. योगान् संशभनाच्छ्णु।
पिप्पली नागरं पन्तति चित्रकं द्विगुणाभागम्।
विङ्गरायुत चूराभितेतदुष्णांम्बुना पिवेत। (चरक)

7. कृष्णा सपाढा राज पिप्पली च निदिग्धिका चित्रक नागरे च।
सपिप्पली मूलरजन्यजजी मुस्त च चूर्ण सूख होयपीताम्।। (चरक)

8. नागरत्रिफलाप्रस्थं घृततेलात्तथाऽऽढकम्।
मस्तुन साधयित्वैतत् पिबेत् सर्वोदरापहम्।
कफ मारुत सम्भूतै गुल्मे चैतत प्रशस्यते।। (चरक)

9. अंशुमत्या श्रृतः प्रस्थः पचसो द्विसितोपलः।
पाने प्रशस्यतै तद्वत् पिप्पलीनागरैः श्रृतः।। (चरक)

10. दुःस्पर्शकेन विल्वेन यवान्या नागरेण वा।
एकैकेनापि संयुक्ता पाठा हन्त्यर्शसां रुजम्।। (चरक)

11. नागरातिविषामुस्तक्वाथः स्यादामपाचनः।
मुस्तान्तकल्कः पथ्या वा नागरं चोष्णावारिणा। (चरक)

12. पक्त्वा ज्वरे कषायं वा मुस्तपर्पटकं श्रृतम्।
सनागरं पर्पटकं पिबेद् वा सदुरालभिम्।। (भैषज्य रत्नावली)

13. विश्वाम्बु पर्पटोशीर धन चन्दन साधितम्।
दद्यात् सुशीतलं वारि तृटछर्दिज्वरदाहनुत।।(भैषज्य रत्नावली)

14. नामरो शरी बिल्वाष्ट् धाम्य मोचरसाम्बुभि।
कृत क्वाथो भवेद् ग्राही पित्तश्लेष्म ज्वरापहः। (भैषज्यरत्नावली)

15. धन्याकं विश्व संयुक्तमामघ्नं वह्निदीपनम्।
वातश्लेष्मज्वरहरं, शूलातीसारनाशनम्।। (भैषज्य रत्नावली)

16. शुंठी समुस्तातिविषां गुडूची पिवेज्जलेन क्वथितं समांशम्।
मन्दानलत्वे सततामामानुवन्धे ग्रहणीठादे च।। (भैषज्य रत्नावली)

17. गुडूच्यतिविषशुण्ठीमुस्तैः क्वाथः कृतोजयेत।
आमानुपक्तां ग्रहणीं ग्राही दीपन पाचनः।। (भैषज्य रत्नावली)

18. समयवशूक नागरचूर्ण लीढं घृतेन गोसर्गे।
कुरुते क्षुधां सुखाम्भः पीतं विश्वौषधं वैकम्।। (भैषज्य रत्नावली)

19. भोजनाग्रे सदा पथ्यं, लवणार्द्रकभक्षणम्।
अग्नि सदीपनं रुच्यं जिह्वाकण्ठ विशोधनम्।।

20. भवेद्यदा प्रातरजीर्णशप्रा तदाऽभयां, नागर सैन्धवाभ्याम्।
विचूर्णितां शीतजलेन भुक्तवा भुंज्जयादशप्रं मितमन्नकाले।। (भैषज्य रत्नावली)

21. विश्वभैषज मूलं क्वाथयित्व जलं पिबेव।
हिङ्ग सौवर्चलोपेतं सद्य शूल निवारणम् ।। (भैषज्य रत्नावली)

22. दीप्यकं सैन्धव पथ्या नागरञ्च चतुः समम्।
चूर्णशूलं जयत्याशु मन्दस्याग्नेश्च दीपनम्।। (भैषज्य रत्नावली)

23. चूर्ण समं रुचक हिङ्ग महौषधानां शुंय्यम्बुमा कफ समीरणा। सम्मवासुः। हत्पार्श्व पृष्ठ जठणर्त्ति विषूचिकासु तथा यवरसेन विड्विकधे।। (भैषज्य रत्नावली)

24. अद्रिकस्य रसः पीतः पुरणा गुडः मिश्रितः।
अजाक्षीणशिनां शोध्रं सर्वशोथ हरो मवेत्।। (भैषज्य रत्नावली)

25. गिरिकर्ण फलं रसं मूलचं नस्य माचरेत्
मूलं वा बन्धेयव् कर्णो।।

Scanned by CamScanner

सेहुंड

वैज्ञानिक नाम	:	*Euphorbia neriifolia* L.
कुलनाम	:	Euphorbiaceae
अंग्रेजी नाम	:	Milk bush, Milk hedge
संस्कृत	:	सेहुंड, स्नुही, सुधा, समन्त, दुग्धा
हिन्दी	:	थूहर, सेहुण्ड
गुजराती	:	कंटालो, थोर
मराठी	:	वाय नियडुइंग
बंगाली	:	मनसारिज
पंजाबी	:	दंडे, थोहर, थोर
मलयालम	:	इल्लैकल्लि
अरबी	:	जकूम

परिचय

सेहुंड की कई जातियाँ होती है। साधारणतया जिसे सेहुंड कहते हैं उसका कांड व शाखायें कांटों से परिपूर्ण होती हैं। इसे बगीचों के चारों और बाड के रूप में लगाया जाता है। इसकी कई किस्में हैं, जिनमें थूहर और सीज है – इनकी डालियाँ पतली, पोली और मुलायम होती हैं। थूहर की जातियों में त्रिधारा, चर्तुधारा, पंच, षष्ठ और चतुर्दश धारा तथा विंश धारा भी होती है।

त्रिधारा थूहर एक प्रसिद्ध वनस्पति है जो सारे भारतवर्ष में सूखे स्थानो में अकसर पाई जाती है। इसकी डालियाँ त्रिधारी और पंचधारी होती है। इसके पत्तें बहुत–छोटे होते हैं, किसी किसी झाड़ में नहीं भी लगते हैं।

बाह्य–स्वरूप

इसका छोटा वृक्ष मांसल 6–20 फुट तक ऊँचा होता है। तना और शाखाएं कंटकित, संधियुक्त, गोलाकार या अस्पष्ट पंचकोशीय होता है। कांटे छोटे उपपत्रीय युग्म अनुलम्ब या कुन्तली रेखाओं में उभारों पर स्थित होते हैं। पत्र 6–12 इंच लम्बे, मांसल, अभिलट्वाकार, आयताकार शाखाओं के अग्रभाग पर समूहबद्ध होते हैं। पुष्प हरित पीत अधः मुख होते हैं।

गुण–धर्म

थूहर रेचक, तीक्ष्ण, अग्निप्रदीपक, चरपरा, भारी और शूल, अष्ठीलिका, आफारा, कफ गुल्म, उदर रोग, वात, उन्माद, प्रमेह, कुष्ठ, बवासीर, सूजन, मेद, पथरी, पांडु, व्रण, ज्वर, प्लीहा, विष और दूषी विष को नष्ट करने वाली है।

थूहर का दूध :
उष्ण वीर्य, स्निग्ध, चरपरा, हल्का, गुल्म, कुष्ठ, उदर रोग कृमियों को तथा दीर्घ उदर रोग व कोष्ठबद्धता में विरेचन के लिए हितकर है।

थूहर का कांड :
बहुत से कांटों वाला और अल्प कांटों वाला होता है। आचार्य चरक के मत में बहुकांटो वाला अधिक तीक्ष्ण होता है। दो या तीन वर्ष के पुराने सेहुंड को पतझड़ के अन्त में, उसमें किसी अस्त्र से चीर कर दूध निकालना चाहिये।[1] सेहुंड, पलाश, शीशम, त्रिफला यह सब मेदोनाशक एवं शुक्रदोष को मिटाने वाला है। प्रमेह अर्श, पांडुरोग नाशक एवं शर्करा को दूर करने के लिये श्रेष्ठ है।[1]

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

नेत्र रोग: थूहर के रस में तिला के तेल में काजल को खरल करके सुखाकर, आँख में अंजन करने से आँख का दुःखना बन्द हो जाता है।

खांसी :

1. थूहर के दो पत्तों को आग पर गरम करके, मसलकर, रस निकाल कर थोड़ा सा नमक मिलाकर, पीने से खांसी में आराम होता है।
2. इसके अन्त के कोमल डंडों को आग में गर्म कर उनका रस निकालकर, उसमें गुड़ मिलाकर पिलाने से बच्चे को वमन और विरेचन होकर खांसी मिटती है।
3. थूहर का साग बना कर खिलाने से कफ और श्वांस मिटता है।
4. त्रिधारा के रस में अड़ूसे के 10–20 पत्तों को पीसकर छोटी–छोटी गोलियां बनाकर 1 से 2 गोली दिन में दो–तीन बार चूसने से खांसी मिटती है।

कर्ण शूल : इसके रस को गरम कर कानों में 2–2 बूंद डालने से कान का दर्द दूर होता है।

बहरापन : 10–20 ग्राम थूहर के दूध को सरसों के तेल में पकाकर, जब तेल मात्र शेष रह जायें, तब 2–2 बूंद तेल कान में डालने से बहरापन दूर होता है।

दांत निकालने के लिए : इसका दूध हिलते हुये दांत पर लगाने से वह दांत सहज से गिर जाता है परन्तु दूसरे दांत पर दूध नहीं लगना चाहिये।

दंतशूल : त्रिधारा के दूध में रुई का फोहा भिगोकर उसको घी में जलाकर दाढ में रखने से उसका दर्द मिटता है।

आंत्रकृमि: त्रिधारा की जड़ और हींग को पीस कर पेट पर लेप करने से बच्चे की आंतो के भीतर के कीड़े मर जाते हैं।

रेचन :

1. उदर रोगों में काली मिर्च को इसके दूध में डुबोकर सुखा लें। तीव्र रेचन की आवश्यकता होने पर 1–2 दाने खिलाने से रेचन हो जाता है।
2. हरड़, पीपल और निशोथ आदि रेचक औषधियों को इसके दूध में तर करके खिलाने पर तीव्र विरेचन होकर जलोदर, सूजन व अफारा मिट जाता है।

जलोदर : इसके रस को लम्बे समय तक ज्वर आने के कारण पैदा हुये जलोदर रोग में तथा विस्फोटक रोगों में 5–10 मिलीलीटर की मात्रा में प्रयोग लिया जाता है।

अर्श : थूहर के दूध और हल्दी के चूर्ण को समभाग लेकर मिलाकर लेप तैयार करें, इस लेप को लगाने से अर्श नष्ट हो जाता है।[8]

सूजन : पेशियो की सूजन पर इसका दूध लगाने से सूजन बिखर जाती है और पकती भी नहीं है।

व्रण : थूहर, अर्क, करंज तथा चमेली के पत्तों को गोमूत्र के साथ पीसकर लेप करने से दूषित व्रण, अर्श और नाड़ी व्रण नष्ट होते हैं।

मस्से : त्वचा के ऊपर जो मस्से और दूसरे कठोर फोड–फुन्सीं हो जाते हैं, वे इसके दूध को लगाने से मिट जाते हैं।

अन्य प्रयोग : जिस घर की छत पर त्रिधारा के गमले पड़े हों उस पर बिजली नहीं गिरती।

स्वानुभूत प्रयोग : किसी भी प्रकार के चर्म रोग में हमने अपने रोगियों पर देखा है कि सेहुंड का स्वरस निकाल कर उसमें बराबर का सरसों का तेल मिलाकर, पकाकर लगाने पर सोराइसिस तक ठीक हो जाता है।

(1) सेहुण्डः सिंह तुण्डः स्याद्वज्रा ब्रजद्रुमोऽपि च।
सुधा समन्त दुग्धा च स्नुक स्त्रियां स्यातस्नुही गुडा।।
(भाव प्रकाश)

(2) सेहुण्डोरेचनस्तीक्ष्णो दीपनः कटुको गुरुः।
शूलामाष्ठीलिका फगुल्मोदरानिलान्।। (भाव प्रकाश)

(3) उन्मादमेहकुष्ठार्शः शोथमेदोश्मपाण्डुताः।
व्रणशोथज्वरप्लीह विषदूषीविषंहरेत्।। (भाव प्रकाश)

(4) उष्णवीर्यं स्नुहीक्षीरं स्निग्धं च कटुकं लघु
गुल्मिनां कुष्ठिनां चापि तथैवोदररोगिणाम्।।
हितमेतद्विरेकार्थं ये चान्ये दीर्घरोगिणः (भाव प्रकाश)

(5) द्विविधः स मतो यश्च बहुभिश्चैव कंटकैः।
सुतीक्ष्णैः कंटकैरल्पैः प्रवरो बहुकंटकः।।
स नाम्ना स्नुग्गुडा नन्दा सुधा निस्त्रिंशपत्रकः।
तं विपाट्याहरेत् क्षीरं शस्त्रेण मतिमान् भिषक्।।
द्विवर्षं वा त्रिवर्षं वा शिशिरान्ते विशेषतः (चरक)

(6) मुष्ककपलाशधवचित्रक मदनवृक्षकशिंश
पावजवृक्षास्त्रि–फला चेति। (सुश्रुत)

(7) श्यामामहाश्यामात्रिवृद्दन्तीशंखिनीतिल्वककम्पिल्लक। (सुश्रुत)

(8) स्नुही क्षीर युक्त हरिद्रा चूर्णमालेपः।। (सुश्रुत)

(9) पूतीकार्क सुङ्नरेन्द्रद्रुमाणां। (सुश्रुत)

Scanned by CamScanner

शंखपुष्पी

वैज्ञानिक नाम	:	*Convolvulus microphyllus* Sieb. ex Spreng.
कुलनाम	:	Convolvulaceae
अंग्रेजी नाम	:	Shankh pushpi
संस्कृत	:	शंख मालिन, शंखपुष्पी, शंखाह्य
हिन्दी	:	शंखाहुली, शंखपुष्पी
गुजराती	:	शंखावली, संखावली
मराठी	:	शंखाहुली
बंगाली	:	शंखाहुली

परिचय

वर्षा ऋतु में समस्त भारतवर्ष में पथरीली एवं परती भूमि मे नैसर्गिक रूप से उत्पन्न शंखपुष्पी के प्रसरणशील छोटे–छोटे घास के समान पौधे पाये जाते हैं। बहुत से स्थानों पर यह बारह मास देखी जा सकती है। मूलस्तम्भ प्रायः बहुवर्षायु होता हैं। पुष्प के रंग भेद से इसकी तीन जातियां पाई जाती है, (1) श्वेत, (2) नील (3) औषध कर्म में श्वेत फूल वाली शंखपुष्पी का ही व्यवहार करना चाहिये। प्रस्तुत विवरण इसी के विषय में है।

बाह्य–स्वरूप

काष्ठीय मूल स्तम्भ से 4–12 इंच लम्बी, रोमश, शखायें कुछ ऊँचा उठकर, बाद में जमीन पर फैल जाती है। पत्र 1/2 इंच से $1^1/_2$ इंच तक लम्बे, कुछ मोटे वृन्त की ओर संकरे सिरे की और चौड़े तथा चिकने होते हैं, मलने से मूली के पत्ते जैसी गंध आती है। फूल, श्वेत या फीके अथवा गहरे गुलाबी रंग के, फनेल के आकार के गोल होते हैं। फल भूरे रंग का, छोटा, चिकना और चमकदार होता है, इसमें भूरे या काले रंग के 4 बीज होते हैं। पूरे क्षुप पर जामुनी या भूरें रंग के रोये होते हैं।

रासायनिक संघटन

इसमे एक क्षाराभ शंखपुष्पीन, एवं दो स्फटिकीय द्रव्य पाये जाते है।

गुण–धर्म

कषाय, शीतवीर्य, स्निग्ध, पिच्छिल, तिक्त, मेध्य, रसायनी, अपस्मार आदि मानसिक रोगों को दूर करने वाली, स्मृति कान्ति तथा बलवर्धक। कुष्ठ, कृमि और विष को नष्ट करने वाली है।[1]

प्रयोज्य अंग : पत्र पुष्प, फल बीज, मूल – पचांग

औषधीय प्रयोग

स्मरणशक्ति वर्धनार्थ :

1. 3 से 6 ग्राम तक शंखपुष्पी का चूर्ण शक्कर व दूध के साथ हमेशा प्रातः काल लेने से स्मरण शक्ति बढ़ती है। अध्ययन से उत्पन्न थकावट दूर होती है।
2. शुंखपुष्पी 2–4 ग्राम एवं बच मीठी का लगभग 1 ग्राम चूर्ण बच्चों को देते रहने से, वह बहुत बुद्धिशाली एवं चतुर होते हैं।
3. प्रातः काल शंखपुष्पी स्वरस 10–20 मिलीग्राम अथवा चूर्ण 2–4 ग्राम को गाय घी एवं शक्कर के साथ 6 मास तक सेवन करने से वृद्धावस्था की झुर्रिया दूर होकर शरीर मे बल एवं स्मरण शक्ति तथा मेधा की वृद्धि होती है।
4. शंखपुष्पी का 3–6 ग्राम चूर्ण, शहद मिलाकर चाटे और ऊपर से दूध पीयें। इसके सेवन से बुद्धि बढ़ती है।

Scanned by CamScanner

अपस्मार :

1. शंखपुष्पी का रस 2 ग्राम सुबह शाम शहद में मिलाकर पिलाने से अपस्मार रोग में लाभ हो जाता है।
2. शंखपुष्पी, बच और ब्राह्मी को बराबर–बराबर लेकर चूर्ण कर लें। इस चूर्ण को 3 ग्राम की मात्रा में दिन में तीन बार देने से अपस्मार, हिस्टीरिया और उन्माद रोग में लाभ हो जाता है।
3. छाया में सुखाई हुई शंखपुष्पी 1 कि०ग्रा०, शर्करा 2 कि०ग्रा०, दोनों को पीसकर छान दें और बोतलों में भरकर रख लें। इस चूर्ण को 5 ग्राम से 10 ग्राम तक की मात्रा में दूध के साथ लेने से मस्तिष्क बलवान होता है।
4. शंखपुष्पी का रस 10 से 20 ग्राम तक, कूठ का चूर्ण 500 मिलीग्राम थोड़े शहद के साथ लेते रहने से उन्माद अपस्मार मिटता है ।
5. इसका स्वरस 10–20 मिलीग्राम मधु के साथ देने से सब प्रकार के उन्माद में अच्छा लाभ होता है।

शिरोवेदना : शंखपुष्पी 1 ग्राम, खुरासानी अजवायन 250 मिलीग्राम, उष्ण जल के साथ देने से शिर की वेदना सिर्फ 5 मिनट में दूर हो जाती हैं।

वमन : इसके पंचाग के दो चम्मच रस में एक चुटकी काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर मधु के साथ बार–बार पिलाने से वमन पर नियन्त्रण हो जाता है।

शैय्यामूत्र : बच्चे रात्रि में सोते समय मूत्र कर देते हैं, उनको रात्रि

शंखपुष्पी–नीलपुष्प (Evolvulus alsinoides)

में सोते समय शंखपुष्पी चूर्ण 2 ग्राम व काले तिल 1 ग्राम मिलाकर दूध के साथ देना चाहिये।

मधुमेह :

1. शंखपुष्पी के 6 ग्राम चूर्ण को, सुबह–शाम गाय के मक्खन के साथ या पानी के साथ सेवन करने से मधुमेह में बहुत लाभ होता है।
2. मधुमेह की कमजोरी को दूर करने के लिये, इसका 2–4 ग्राम चूर्ण अथवा स्वरस 10–20 मिलीग्राम लेना हितकारी है।

लू लगने पर ज्वर में जब रोगी बेसुध हो जाता है, और प्रलाप करने लगता है, उस समय नींद लाने के लिये शंखपुष्पी चूर्ण 5–10 ग्राम चूर्ण को दूध एवं मधु के साथ देने से बहुत लाभ होता है।

रक्तस्त्रावः शंखपुष्पी का 10–20 मिलीग्राम स्वरस मधु के साथ देने से रक्त बहना तुरन्त बन्द हो जाता है।

उच्चरक्त चापः ताजी शंखपुष्पी का 10–20 मिलीग्राम स्वरस सुबह, दोपहर तथा शाम, कुछ दिनों तक सेवन करने से उच्चरक्त चाप से हमेशा के लिये छुटकारा मिल जाता है।

1. शंखपुष्पी हिमा तिक्ता मेधाकृत् स्वर–कारिणी।
ग्रहभूतादिदोषघ्नी, वशीकरण सिद्विदा।। (रा०नि०)
2. शंखपुष्पी सरा स्वर्या कटुस्तिक्ता रसायनी।
अनुष्णा वर्णमेधाग्निबलायुः कान्तिदा हरेत्।।
अपस्मारमथोन्मादमनिद्रां च तथा भ्रमम्।। (के०)

Scanned by CamScanner

वैज्ञानिक नाम	:	*Asparagus racemosus* Willd.
कुलनाम	:	Liliaceae
अंग्रेजी नाम	:	Asparagus
संस्कृत	:	शतावरी, नारायणी, इन्द्रीवरी, शतपदी, शतवीर्या, बहुसुता, शतमूली
हिन्दी	:	शतावर
गुजराती	:	शतावरी
मराठी	:	शतावरी
बंगाली	:	शतमूली
तैलगू	:	पिन्न पिचर, चल्ला गड्डा
कन्नड	:	आषाढि
फारसी	:	गुर्जदस्ती
अरबी	:	मिसरी

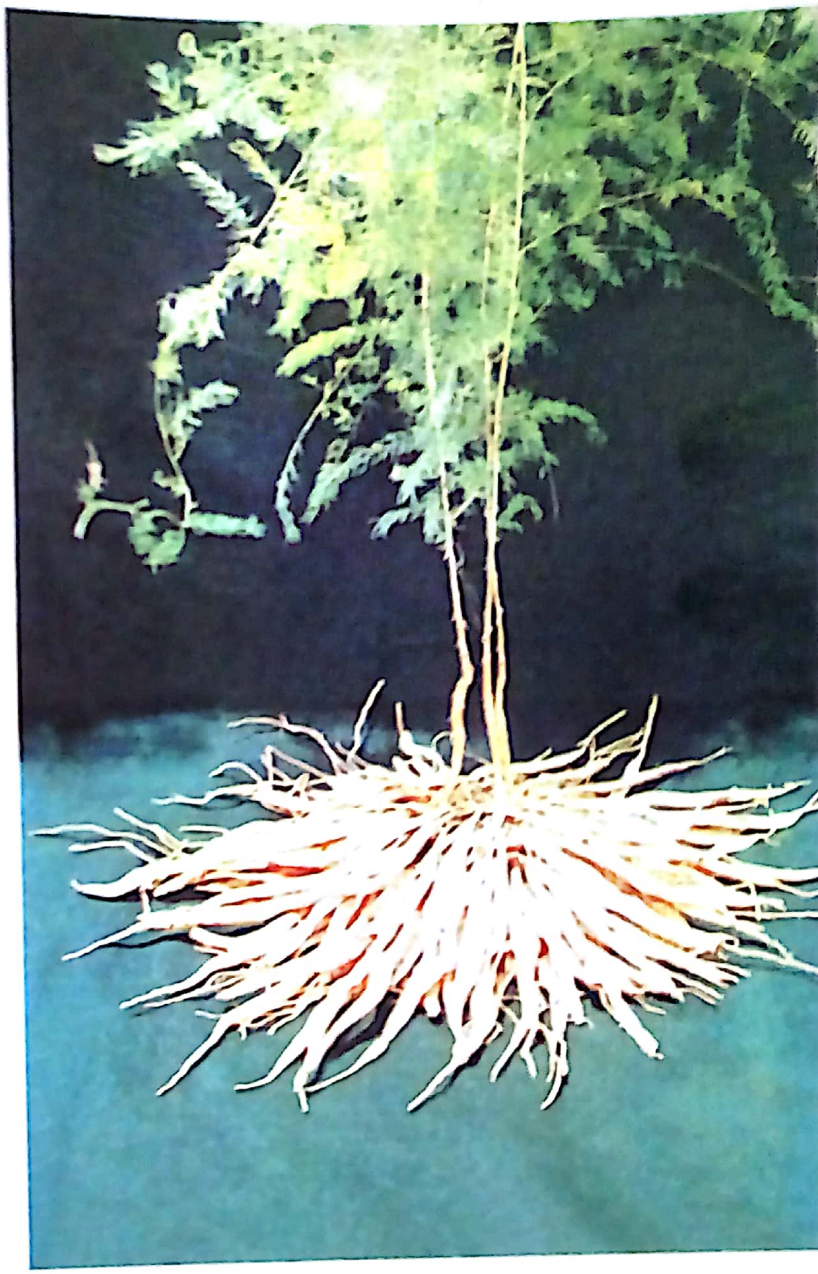

परिचय

शतावरी की बेल पूरे भारतवर्ष में पाई जाती है।

बाह्य–स्वरूप

इसकी कंटक युक्त झाडीनुमा आरोहिणी लता होती है। कांटे 1/4–1/2 इंच लम्बे, सीधे या कुछ वक्र होते है। पत्र पर्वसन्धि में 2–6 एक साथ गुच्छे में हंसिया के आकार के नीचे की ओर झुके हुए होते हैं। पुष्प मञ्जरी 1–2 इंच लम्बी एकल या गुच्छवद्ध सरल या शाखायुक्त होती है। फल मटर के आकार के कठोर गुठली के रूप में होते हैं। जो पकने पर लाल हो जाते हैं। इसकी जड में सफेद और लम्बे कन्द होते हैं, यह लम्बे कन्द ही बाजार में शतावर के नाम से बिकती है।

गुण–धर्म

इसके गुण–धर्म के विषय में आयुर्वेदाचार्यो के मत निम्न प्रकार से हैं:

1. भावप्रकाश निघण्टुकार के अनुसार यह गुरु, शीत, तिक्त रसायन है, यह बुद्धिवर्धक, अग्निवर्धक, वात, पित्त, शोक निवारक, शुक्र दुर्बलता को दूर करने वाली तथा स्तन्य क्षय को दूर करने वाली है।[1]
2. आचार्य सुश्रुत के मत में शतावरी सूखा रोग कमजोरी में भी बल प्रदायक है तथा दूषित शुक्र का शोधन करती है, बुद्धिवर्धक एवं अग्निवर्धक है।
3. धन्वन्तरी निघंटुकार के अनुसार शतावर जीर्ण–से–जीर्ण रोगी को पुनः बल तथा रोग से लडने की सामर्थ्य प्रदान करती है अर्थात् शरीर इसके सेवन से रोग निवारक क्षमता को पुनः प्राप्त करता है। यह वात पित्तशामक, शुक्रजनन, शीतल, मधुर एक दिव्य रसायन है।[3]
4. शतावरी (वृद्धरूहा) शुक्रजनन होती है शतावरी, सारिवा, पुनर्नवा, एरण्ड, हंसराज ये सब पित्त एवं वायु का नाश करने

Scanned by CamScanner

वाले तथा गुल्म कासरोग का भी नाश करने वाले है।[4]

5 आचार्य चरक ने शतावर को बल्य और वय:स्थापन मधुरस्कंध बताया है। आधुनिक वैज्ञानिक प्रयोगों से यह निष्कर्ष निकला है कि शतावर की जड़ हृदय को प्रभावित कर बल प्रदान करती है। हृदय की संकोचन क्षमता बढ़ाती है। प्रत्येक धड़कन के साथ शरीर के समस्त अंगों को शुद्ध रक्त की प्राप्ति होती है। आधुनिक चिकित्सा शास्त्रियों के अनुसार यह गर्भाशय उत्तेजना शामक है। गर्भाशय की गति को संतुलित करता है।

औषधीय प्रयोग

अनिद्रा रोग: शतावर की खीर में घी मिलाकर खाने से अनिद्रा रोग दूर होता है।

स्तौंधी : घी में शतावरी के कोमल पत्रों का शाक बनाकर सेवन करने से स्तौंधी दूर हो जाती है।

मस्तक पीड़ा : शतावर की ताजी जड़ को कूट, रस निकाल उसमें बराबर तिल का तेल डालकर उबाल लेना चाहिये। इस तेल की सिर पर मालिश करने से मस्तक पीड़ा और आधाशीशी मिटती है।

स्वर भंग : शतावर, खरैटी और शक्कर को मधु के साथ चाटने से स्वरभंग मिटता है।

वातजकास : शतावरी के किंचित गरम क्वाथ में पीपल का 1 ग्राम चूर्ण मिलाकर दिन में 3 बार पिलाने से वातज कास और शूल नष्ट हो जाता है।

सूखी खांसी : 10 ग्राम शतावरी, 10 ग्राम अड़ूसे के पत्ते और 10 ग्राम मिश्री को 150 ग्राम पानी के साथ उबालकर दिन में 3 बार पीने से सूखी खांसी मिटती है।

श्वास मूर्छा : इसका कल्क एक भाग, घी एक भाग, दूध चार भाग इन सबको उबालकर घी सिद्ध करके बलानुसार पीने से अम्लपित्त, रक्त पित्त, वात और पित्त के विकार, श्वास, मूर्च्छा और तृष्णा आदि रोग मिटते हैं।

दुग्ध वृद्धि : दूध के साथ इसके 10 ग्राम चूर्ण की फंकी देने से स्त्री का दूध बढ़ता है अथवा शतावरी को गाय के दूध में पीस कर सेवन करने से दूध मधुर और पौष्टिक भी हो जाता है।

रक्तातिसार : गीली शतावर को दूध के साथ पीस–छानकर दिन में 3–4 बार पीने से रक्त अतिसार मिटता है।

पुरूषार्थ : इसका पाक बनाकर सेवन करने से अथवा दूध के साथ इसके चूर्ण की खीर बनाकर खाने से पुरुषार्थ बढ़ता है।

धातुवृद्धि : गीली शतावर को चीरकर बीच के तिनके निकाल कर दूध के साथ पीसी मिश्री मिलाकर पीने से धातु बढ़ती है।

मूत्रविकार : शतावर और गोखरू का शर्बत बनाकर पीने से मूत्रविकार मिट जाता है।

कमजोरी : शतावरी का घृत मर्दन करने से शरीर की निर्बलता मिटती है।

वीर्य वृद्धि : 5–10 ग्राम शतावरी घृत को नित्य प्रयोग करने से वीर्य बढ़ता है।

मूत्रकृच्छ : 20 ग्राम गोखरू के पंचांग के साथ समभाग शतावर को आधा किलो पानी में उबालकर, छानकर उसमें 10 ग्राम मिश्री और 2 चम्मच मधु

Scanned by CamScanner

मिलाकर थोड़ा-थोड़ा पिलाने से मूत्रदाह और मूत्र की रुकावट मिटती है या शतावरी व गोखरू का दुग्धावशेष क्वाथ, प्रातः-सायं सेवन करने से तथा पथ्य में रहने से मूत्रकृच्छ ठीक होता है।

मूत्रकृच्छ : शतावर की जड़ के क्वाथ में मधु और शक्कर मिलाकर पीने से त्रिदोषज मूत्रकृच्छ मिटता है।

अश्मरी : इसके 20–50 ग्राम रस में बराबर गाय का दूध मिलाकर पीने से पुरानी पथरी शीघ्रता से गल जाती है।

प्रमेह : 20 ग्राम शतावर के रस को 80 ग्राम दूध में मिलाकर पीने से सम्पूर्ण प्रमेह का नाश होता है।[2]

अन्तरार्श : अर्श के मस्से जो बाहर से दिखाई नहीं पड़ते, वह शतावरी का चूर्ण 2–4 ग्राम दूध के साथ सेवन करने से दूर हो जाते हैं।

पित्तज प्रदर: इसके 10–20 ग्राम स्वरस में 1 चम्मच मधु मिलाकर सुबह-शाम पीने से पित्तज प्रदर मिटता है।

वात-ज्वर : समभाग शतावर और गिलोय के 10 ग्राम रस में थोड़ा गुड़ मिलाकर पीने से या अथवा दोनों के 50–60 ग्राम क्वाथ में 2 चम्मच मधु मिलाकर पीने से वात-ज्वर मिट जाता है।

विषनाश : इसकी जड़ का रस दूध मे मिलाकर, पिलाने से विष

की शान्ति होती है।

व्रण रोपण : शतावरी के 20 ग्राम पत्तों का कल्क बनाकर दुगने घी में तल कर अच्छी तरह पीस कर, व्रणों पर लगाते रहने से पुराने

Scanned by CamScanner

बडी शतावरी

से पुराना व्रण भी भर जाता है।

पित्तज रोग : शतावर के रस में मधु मिलाकर, दाह, शूल तथा अन्य सब पैत्तिक रोगों की शान्ति के लिये पीना चाहिये।[1]

स्वप्नदोष हर चूर्ण : ताजी शतावर की जड़ का चूर्ण 250 ग्राम, मिश्री 250 ग्राम कूट–पीसकर लें तथा 6–11 ग्राम की मात्रा 250 ग्राम दूध के साथ सुबह–सायं देने से प्रमेह, स्वप्नदोष दूर होकर शरीर पुष्ट होता है।

स्वानुभूत प्रयोग : हम लोग एक बार आसाम के आदिवासी इलाके में घूम रहे थे। हमने देखा कि एक भैंस दूध नहीं दे रही थी। उसका थन सूजा हुआ था, वहां के लोगों ने शतावर की आधा कि०ग्रा० जड़ों को भैंस को खिलाया तो सूजा हुआ थन (थनैला) तुरन्त ठीक हो गया। पूछने पर पता चला कि यदि शतावर की जड़ ताजी न हो तो सूखी जड़ 100 ग्राम देने से भी थनैला ठीक हो जाता है।

1. शतावरी हिमातिक्ता स्वाद्वी गुर्वी रसायनी
सुस्निग्ध शुक्रलाबल्यास्तन्यमेदोऽग्निपुष्टिदा।।
चक्षुष्यागतपित्रास्य, गुल्मातीसारशोथाजित (कै०नि०)

2. वातपित्तहरी वृष्या स्वादुतिक्ता शतावरी।
महती चैव हृद्या च मेध्याग्निबलवर्धिनी।। (सुश्रुत)

3. शतावरी हिमातिक्ता रसेस्वादुक्षयास्रजित।
वातपित्तहरी वृष्यारसायनवरा स्मृता।। (ध०नि०)

4. जीवकर्षभककाकोली मुद्गपर्णी माषपर्णी मेदा वृद्धरुहा जटिला कुलिङ्गा इति– देशेभासि शुक्र जननानि भवन्ति।
भुक्तवां वरी क्षीरयुतां विलासी भुक्ते शतं सुन्दरी! सुन्दरीणाम्।
(वैद्य जीवन)

Scanned by CamScanner

शीशम

114

वैज्ञानिक नाम	:	*Dalbergia sissoo* Roxb. ex DC.
कुलनाम	:	Fabaceae
अंग्रेजी नाम	:	Sissoo, The blackwood, Rosewood
संस्कृत	:	शिंशपा, कृष्णसारा, पिच्छिला, भस्मगर्भा
हिन्दी	:	शीशम, शीशो
गुजराती	:	सीसम
मराठी	:	शिशव
बंगाली	:	शिशुगाध, शिशू
पंजाबी	:	सीसम, शरई
तैलगु	:	इरूबुदु, शिशुपा
कन्नड़	:	बिरिडि

परिचय

शीशम का काष्ठ भवनों और फर्नीचर में प्रयोग किया जाता है। समस्त भारतवर्ष में शीशम के लगाये हुये अथवा स्वयंजात वृक्ष मिलते हैं। इस वृक्ष की लकड़ी और बीजों से एक तेल प्राप्त किया जाता है, जो औषधियों में प्रयोग किया जाता है।

बाह्य–स्वरूप

शीशम के 100 फुट तक ऊँचे पर्णापीत वृक्ष होते हैं। इसकी छाल मोटी, भूरे रंग की तथा लम्बाई के रूख में कुछ विदीर्ण होती है। नई शाखाएं कोमल एवं अवनत होती हैं। पत्र एकान्तर, पत्रक संख्या में 3–5 एकान्तर, 1–3 इंच लम्बे, रूपरेखा में चौड़े लट्वाकार होते हैं। पुष्प पीताभ–श्वेत, फली लम्बी, चपटी तथा 2 से 4 बीज युक्त होती है। इसका सारकाष्ठ पीताभ भूरे रंग का होता है। इसकी एक दूसरी प्रजाति का सारकाष्ठ कृष्णाभ भूरे रंग का होता है।

रासायनिक संघटन

काष्ठ में एक तेल पाया जाता है और फलियों में टैनिन और बीजों में भी एक स्थिर तेल पाया जाता है।

गुण–धर्म

शीशम, कड़वा, चरपरा, कसैला, शोथहर, उष्णवीर्य, गर्भपात कराने वाला, मेद, कोढ़, श्वेत–कुष्ठ वमन, कृमि, बस्ति रोग, व्रणदाह, रक्तविकार, सूजन तथा कफ को नष्ट करने वाला है।[1] शिंशपा – कड़वा, उष्ण, कण्डुदोषघ्न, बस्ति रोग नष्ट करने वाला, वर्ण्य, हिक्का, शोथ तथा विसर्प को नष्ट करने वाला है।[2] शिंशपा सार – स्नेहन, तिक्त, कड़वा, कसैला, दुष्ट व्रणों का शोधन करने वाला, कृमि–कफ–कुष्ठ नष्ट करने वाला है।[3] शीशम, अर्जुन, ताड़, चंदन यह सब साल सारादिगण, कुष्ठनाशक, प्रमेह – पांडु रोगनाशक, कफ और मेद के शोधक हैं। शीशम, पलाश, त्रिफला, चित्रक यह सब मेदोनाशक तथा शुक्र दोष को मिटाने वाले, प्रमेह, अर्श, पांडु रोगनाशक एवं शर्करा को दूर करने वाले हैं। शीशम, अगरू इन लकड़ियों का स्नेह दद्रु, कुष्ठ, कृमि में प्रयोग होता है।

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

नेत्ररोग : शीशम के पत्रों का रस और मधु मिलाकर इसकी बूंदें आंखों में डालने से दुःखती आंखें ठीक होती हैं।

स्तनों की सूजन : इसके पत्तों को गरम कर स्तनों पर बाँधने से और इसके काढ़े से स्तनों को धोने से स्तनों की सूजन उतरती है।

उदर दाह : उदर की जलन में 10–15 मिलीलीटर पत्र स्वरस देने से लाभ होता है। पाण्डुरोग में भी पत्र स्वरस 10–15 मिलीलीटर प्रातः–सायं देने से लाभ होता है।

विसूचिका : सुगंधित और चरपरी औषधियों के साथ इसकी गोलियां बनाकर विसूचिका में देते हैं।

पूयमेह, मेह : पूयमेह और लालामेह में 10–15 मिलीलीटर पत्र स्वरस दिन में 3 बार देने से लाभ होता है।

मूत्रकृच्छ : मूत्रकृच्छ की अत्यंत पीड़ा में इसके पत्तों का 50–100 मिलीलीटर क्वाथ दिन में 3 बार पिलाने से लाभ होता है।

रजोरोध / कष्टार्त्तव : सार चूर्ण 3–6 ग्राम अथवा क्वाथ 50–100 मिलीलीटर रजोरोध या कष्टार्त्तव में दिन में 2 बार देने से लाभ होता है।

रक्त प्रदर : 10–15 मिलीलीटर पत्र स्वरस रक्त प्रदर में प्रातः–सायं देने से लाभ होता है।

परमपूज्य स्वामी रामदेव जी का स्वानुभूत प्रयोग

शीशम के 8–10 पत्ते, व मिश्री 25 ग्राम दोनों को मिलाकर घोट–पीसकर प्रातः काल सेवन करें। कुछ ही दिनों के सेवन से मासिक धर्म में होने वाला रक्तस्राव सामान्य हो जाता है। श्वेत प्रदर तथा पुरूषों का प्रमेह रोग भी ठीक हो जाता है। सर्दियों में या ठण्ड के मौसम में इस प्रयोग के साथ–साथ 4–5 काली मिर्च भी प्रयोग में लेनी चाहिऐ। मधुमेह के रोगी बिना मिश्री के प्रयोग में लायें।

चर्म रोग : शीशम का तेल चर्म रोगों पर लगाने से लाभ पहुँचता है। नीली खुजली, शरीर की जलन, दुष्ट व्रणों पर शीशम का तेल लगाने से लाभ होता है।

कुष्ठ :

1. शीशम के 10 ग्राम सार कषाय को, 500 ग्राम पानी में उबाल लें, आधा शेष रहने पर उसमें सार का ही शर्बत मिलाकर नित्य 40 दिन तक प्रातः–सायं पीने से कोढ़ में बहुत लाभ होता है।
2. इसके पत्तों के लुआब को तिल के तेल में मिलाकर, छिली हुई चमडी पर लगाने से शान्ति रहती है।
3. इसके पत्तों का 50–100 मिलीलीटर क्वाथ प्रातः–सायं पिलाने से फोड़े–फुन्सी मिटते हैं। कोढ़ में भी इसके पत्तों या बुरादों का क्वाथ पिलाया जाता है।
4. इसके पत्तों या बुरादे का 50–100 मिलीलीटर क्वाथ पिलाने से फोड़े–फुन्सी मिटते हैं।

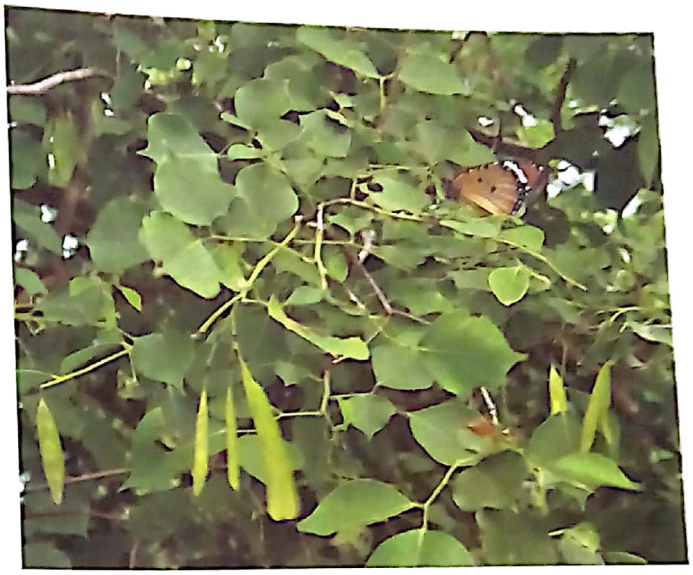

रक्त विकार :

1. शीशम के 3–6 ग्राम बुरादे का शरबत बनाकर पिलाने से रक्त विकार मिटता है।
2. इसके 1 किलोग्राम बुरादे को, 3 किलो पानी में भिगोकर रख लें, फिर उबाल लें, जब आधा रह जाये तो छान लेवें, उसमें 750 ग्राम बूरा डालकर शर्बत बना लें, यह शर्बत रक्तशोधक है।

गृधसी : शीशम की 10 किलो छाल का मोटा चूरा 23.5 किलोग्राम जल में उबालें, पानी का आठवां भाग जब बाकी रहे तब ठंडा होने पर कपड़े में छानकर फिर इसको चूल्हे पर चढ़ाकर गाढा करें। इस गाढ़े पदार्थ की 10 ग्राम की मात्रा में घी युक्त दूध पाक के साथ 21 दिन तक दिन में 3 बार लेने से गृधसी रोग मिटता है।

ज्वर : प्रत्येक प्रकार के ज्वर में शीशम का सार 20 ग्राम, पानी 320 ग्राम, दूध 160 ग्राम, इनको मिलावें। दूध मात्र शेष रहने पर दिन में 3 बार पिलावें, यह दूध प्रत्येक तरह के ताप को मिटाता है।[5]

1. शिशपा कटुका तिक्ता कषाया शोथहारिणी।
   उष्णवीर्या हरेन्मेदः कुष्ठश्वित्रवमिक्रिमीन्।
   बस्तिरूग्व्रणदाहास्र बलासान् गर्भपातिनी (भाव प्रकाश)
2. कटूष्णं कण्डुदोषघ्नं बस्तिरोगविनाशम्।
   शिंशपायुगलं वर्ण्यं हिक्काष्शोथविसर्पजित् (ध०नि०)
3. शिंशपासारस्नेहास्तिक्तकटुकषाया दुष्टव्रणशोधनाः
   कृमिकफकुष्ठानिलहराश्च। (सुश्रुत)
4. मुष्ककपलाशंधवचित्रकमदनं वृक्षकशिंशपावज्रवृक्षा–
   स्त्रिफलचेति।। (सुश्रुत)
5. उदकाद् द्विगुणं क्षीरं शिंशपासारसंयुतम्।
   तत् क्षीरोशेष क्वथितं पेयं सर्वज्वरापहम्।। (सुश्रुत)

Scanned by CamScanner

सिरस (शिरीष)

वैज्ञानिक नाम	:	*Albizia lebbeck* (L.) Willd.
कुलनाम	:	Mimosaceae
अंग्रेजी नाम	:	Siris tree
संस्कृत	:	शिरीष, भण्डिल, शुक पुष्प, शुकप्रिय
हिन्दी	:	सिरीस, सिरस
गुजराती	:	काकीयो, सरस, सरसडो
मराठी	:	शेवगा, शेगटा
पंजाबी	:	सरीह, शरीं, सिरस
तैलगु	:	दिरसेनमु, दिरासना
अरबी	:	सुल्तानुल्–अशजार
फारसी	:	दरख्तेजक्रिया

परिचय

समस्त भारतवर्ष में 8,000 फुट की ऊंचाई तक सिरस के जंगली और लगाये हुए वृक्ष पाये जाते हैं। इसकी लाल, श्वेत और कृष्ण कई जातियां मिलती हैं। कुछ वृक्ष छोटे और कुछ बहुत ऊंचे होते हैं। यह पर्णपाती और छायादार वृक्ष हैं। इसकी फलियों और पुष्पों में भेद होने से यह काला, पीला, श्वेत कई प्रकार का होता है।

बाह्य–स्वरूप

इसका वृक्ष मध्यमाकार तथा शाखाएं चहुँ ओर फैली हुई, कांड त्वक भूरे रंग की खुरदरी विदीर्ण, बाह्य स्तर लम्बे–लम्बे चप्पड़ों से युक्त होता है। अंतर छाल रक्त, कड़ी एवं खुरदरी केन्द्र में सफेद रंग की होती है। पत्र द्विधा पक्षवत्, इमली के पत्तों जैसे परन्तु उनसे कुछ बड़े, पुष्प अवृन्त तथा पीताभ श्वेत चंवर जैसे सुगन्धित, शिम्बी 4–12 इंच लम्बी चपटी, पतली इसमें 6–22 तक बीज होते हैं। वर्षाकाल में पुष्प और शरद्काल में फल लगते हैं जो काफी समय तक पेड़ों पर लगे रहते हैं।

रासायनिक संघटन

इसकी छाल में सैपोनिन, टैनिन एवं रालीय तत्व पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

सिरस त्रिदोष शामक, वेदनास्थापन, वर्ण्य, विषघ्न, शिरोविरेचन तथा चक्षुष्य है। यह स्तम्भन, विसर्पघ्न, कासघ्न, वृष्य, कुष्ठघ्न और विषघ्न है। यह प्रमेह, पांडु रोगनाशक, कफ और मेद का शोधक है।

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

मूर्च्छा : सिरस के बीज और काली मिर्च समान भाग लेकर बकरी के मूत्र के साथ पीसकर आंख में अंजन करने से सन्निपात मूर्च्छा मिटती है।

उन्माद रोग :

1. सिरस के बीज, मुलेठी, हींग, लहसुन, सौंठ, वच और कूठ समान भाग लेकर, सबको बकरे के मूत्र में घोंटकर अंजन बनायें। इसकी नस्य देने से तथा इसका अंजन लगाने से उन्माद रोग नष्ट हो जाता है।
2. सिरस के बीज और करंज के बीजों को पीसकर लेप करने से, उन्माद, अपस्मार और नेत्र रोग मिटते हैं।

नेत्र विकार :

1. इसके पत्तों के रस का अंजन करने से नेत्र पीड़ा मिटती है।
2. रतौंधी के अंदर इसके पत्तों का काढ़ा पिलाने से और इसके स्वरस का अंजन करने से बहुत लाभ होता है।
3. इसके पत्तों के रस में कपड़ा भिगोकर सुखा लें। तीन बार भिगोयें और सुखायें। फिर इस कपड़े की बत्ती बनाकर चमेली के तेल में जला काजल बना लें। इस काजल के प्रयोग से नेत्रों की ज्योति बढ़ती है।

कर्ण पीड़ा : सिरस के पत्ते और आम के पत्तों के रस को गुनगुना कर कान में टपकाने से कर्ण पीड़ा मिटती है।

दंत रोग :

1. सिरस मूल की क्वाथ का गंडूष करने से तथा मूलत्वक चूर्ण से मंजन करने से पके हुए मसूड़ों का रोग मिटता है और दांत मजबूत होते हैं।
2. सिरस के गोंद और काली मिर्च को पीसकर मंजन करने से दंत पीड़ा मिटती है।

गंडमाला :

1. सिरस के 6 ग्राम बीजों को पीसकर उनकी प्रातः–सायं फंकी लेने से गंडमाला की पेशियों की सूजन उतरती है। इसके बीजों को पीसकर लेप करने से भी गंडमाला की सूजन उतरती है।
2. सिरस के बीज 1 भाग के चूर्ण को, दुगुने मधु में मिलाकर कोरी हांडी में डालें, मुंह अच्छी प्रकार बंद करके, दो सप्ताह तक धूप में रखें, दो सप्ताह के बाद निकालकर प्रतिदिन 10 ग्राम तक प्रातः–सायं प्रयोग करें।

खांसी : पीले सिरस के पत्तों को घी में भूनकर दिन में तीन बार देने से खांसी मिटती है।

अतिसार : इसके बीजों के चूर्ण की फंकी दिन में तीन बार देने से अतिसार मिटता है।

जलोदर : सिरस की छाल का क्वाथ पिलाने से जलोदर की सूजन उतरती है।

सिफलिस : पत्तों की राख, घी या तेल में मिलाकर लगाने से सिफलिस की चांदी को जल्दी सुखा देती है।

अंडकोष की सूजन : इसकी छाल को पीसकर लेप करने से अंडकोषों की सूजन मिटती है।

मूत्र विकार :

1. सिरस के 10 ग्राम पत्तों को घोट–छानकर, मिश्री मिलाकर प्रातः–सायं पिलाने से मूत्रकृच्छ मिटता है।
2. सिरस के बीजों के तेल को दूध की लस्सी में डालकर पीने से भी मूत्रकृच्छ मिटता है।

अर्श :

1. 6 ग्राम सिरस के बीज और 3 ग्राम कलियारी की जड़ को पानी से पीसकर लेप करने से अर्श का नाश होता है।
2. इसके तेल का लेप करने से अर्श मिट जाता है।
3. सिरस के बीज कूठ, आक का दूध, पीपल और सैंधा नमक, समान भाग लेकर सबको एकत्र कर पीस लें। ये लेप अर्श को शीघ्र नष्ट करता है।
4. कलियारी की जड़, दंती मूल और चीता समान भाग लेकर सबको एकत्र पीस लें। ये लेप अर्श का शीघ्र नाश करता है।
5. मुरगे की बीट, गुंजा (चौंटली), हल्दी, पीपल समभाग लेकर जल के साथ पीसकर लेप बनायें। यह लेप अर्श को शीघ्र नष्ट करता है।

Scanned by CamScanner

चर्म रोग :

1. कृमि कुष्ठ आदि चर्म रोग तथा दुष्ट व्रणों में सिरस का तेल लगाने से लाभ होता है।
2. श्वेत सिरस की छाल का शीत निर्यास, लोशन की तरह घाव, खुजली और दूसरे चर्म रोगों में उपयोग में लिया जाता है।
3. इसके पत्तों की पुल्टिस बनाकर फोड़े–फुन्सियों और सूजन के ऊपर बांधने से लाभ होता है।
4. इसके पुष्प ठंडे हैं। गर्मी के फोड़े–फुंसी और पित्त शोथ पर इनका लेप करते हैं।
5. सिरस के बीज अर्बुद और गाँठ को गलाने में लाजवाब हैं।

व्रण : सिरस की छाल के क्वाथ से धोते रहने से और पत्रों की राख का मरहम लगाने पर व्रण शुद्ध होकर भर जाता है।

व्रण रोपणार्थ :

1. सिरस की छाल, रसांजन और हरड़ का चूर्ण छिड़कें या शहद मिलाकर लगाने से लाभ होता है।
2. इसके पत्तों की पुल्टिस चाहे जैसी गाठें हों, उन पर आधा–आधा घंटे बाद बदल कर बांधने से उनको ऊपर लाकर फोड़ देती है।

विस्फोटक : सिरस की छाल, तगर, जटामॉसी, हल्दी और कमल सममाग ठंडे पानी में महीन पीसकर लेप करने से समस्त विस्फोटक नष्ट होते हैं।

विष विकार :

1. सिरस की छाल, मूल छाल, बीज और फूलों के चूर्ण को गौमूत्र के साथ दिन में 3 बार पिलाने से सब प्रकार के विष विकार में लाभ होता है।
2. सिरस की जड़, छाल, पत्र, पुष्प और बीजों को गौमूत्र में पीसकर लेप करने से सब प्रकार के विष नष्ट होते हैं।

मंडूक विष : सिरस के बीजों को थूहर के दूध में पीसकर लेप करने से मंडूक के दंश का विष उतर जाता है।

कीट दंश : इसके पुष्पों को पीसकर विषैले जीवों के दंश पर लेप करने से लाभ होता है।

शक्तिवर्धक : इसकी छाल का चूर्ण 1 से 3 ग्राम तक घी

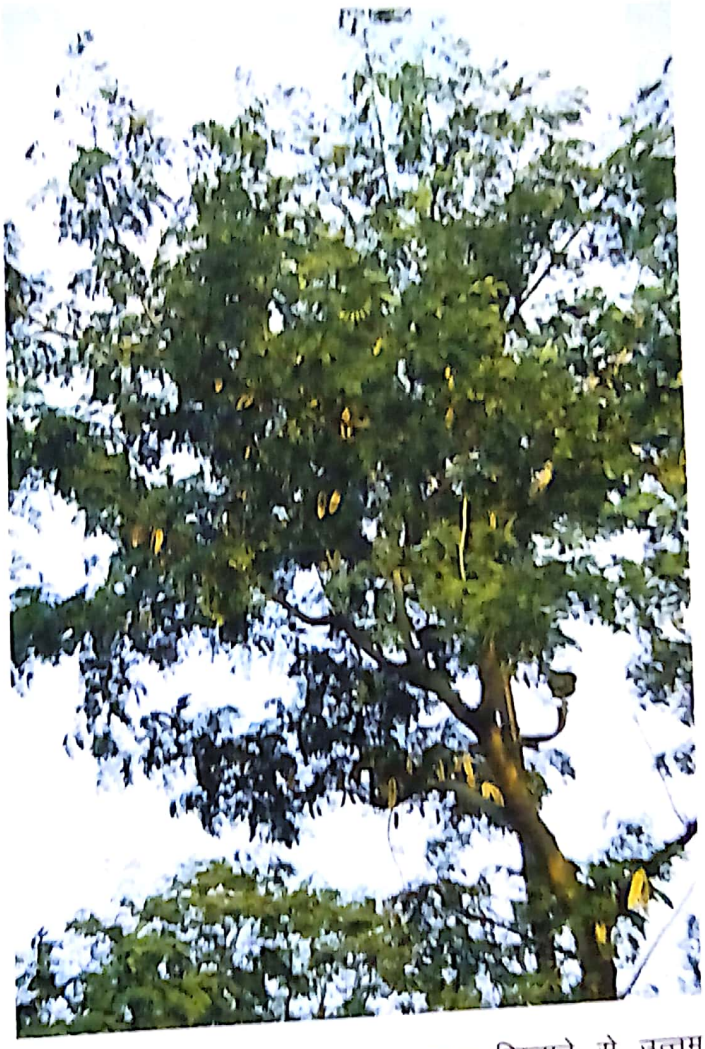

के साथ मिलाकर प्रतिदिन सुबह–शाम खिलाने से उत्तम शक्तिवर्धक और रक्त शोधक वस्तु का काम करता है।

वीर्यपुष्टि : इसके बीजों का 2 ग्राम चूर्ण, दुगुनी शक्कर मिलाकर प्रतिदिन गरम दूध के साथ प्रातः–सायं लेने से वीर्य बहुत गाढ़ा हो जाता है।

विसर्प रोग : इसकी छाल के महीन चूर्ण को सौ बार भिगोये हुए घी में मिलाकर लेप करने से विसर्प रोग मिटता है।

कुष्ठ : सिरस के पत्ते 15 ग्राम और काली मिर्च 2 ग्राम, दोनों को पीसकर 40 दिन तक पीने से कुष्ठ मिट जाता है।

1. शिरीषो मधुरोऽनुष्णस्तिक्तश्च तुवरोलघुः।
दोषशोथविसर्पघ्नः कासव्रणविषापहः।। (भाव प्रकाश)

2. तिक्तोष्णो विषहा वर्ण्यस्त्रिदोषशमनो लघुः।
शिरीषः कुष्ठकण्डूघ्नस्त्वग्दोषश्वासकासहा।। (कै०नि०)

Scanned by CamScanner

सूरजमुखी

वैज्ञानिक नाम	:	*Helianthus annuus* L.
कुलनाम	:	Asteraceae
अंग्रेजी नाम	:	Sunflower, Lady elewen
संस्कृत	:	सूर्यावर्त्त, सुवर्चला
हिन्दी	:	सूरजमुखी, हुरहुल
गुजराती	:	सूरजमुखी
मराठी	:	सूच्यफूला, ब्रहमीका
बंगाली	:	सूरजमुखी
फारसी	:	आफताबी, गुले आफताब
अरबी	:	अक्षवान
तैलगु	:	आदित्य भक्ति

परिचय

सूरजमुखी दिनभर सूर्य के चारों ओर घूमता रहता है। जिस दिशा में भी सूर्य होता है, सूरजमुखी का पुष्प उसी दिशा में अपना मुँह कर लेता है। इसके फूल सूर्योदय पर खिलते हैं, तथा सूर्यास्त के समय बंद हो जाते हैं। श्वेत, बैंगनी और पीले पुष्प सुरजमुखी में मिलते हैं। इसके पौधे गांवों के आस-पास परित्यक्त भूमि में, बगीचों, सड़कों के किनारे तथा जोते हुए खेतों में मिलते हैं। बैंगनी पुष्प का सूरजमुखी विशेषत: बिहार एवं उड़ीसा से लेकर गुजरात तथा दक्षिणी भारत में पाया जाता है। गुण-कर्म की दृष्टि से तीनों ही प्रकार के सूरजमुखी प्राय: मिलते हैं तथा एक दूसरे के प्रतिनिधि के रूप में ग्राह्य हैं।

बाह्य-स्वरूप

सूरजमुखी के पौधे 1-4 फुट ऊँचे, पत्तियाँ 5 पत्रकों वाली परन्तु ऊपर के पत्र विपन्नक होते हैं। पुष्प श्वेत, बैंगनी और पीले मुंडकों में फूल के मध्य भाग में केसर कोष रहते हैं, और इन्हीं के मध्य में बीज रहते हैं। इसके पौधों का रोपण बीज द्वारा ही होता है।

रासायनिक संघटन

सूरजमुखी के ताजे पौधे को कुचलने से एक तेल प्राप्त होता है, जिसमें लहसुन तथा सरसों के समान गुण-कर्म होते हैं। शुष्क पौधो में यह नहीं पाया जाता। बीजों से एक स्थिर तेल प्राप्त होता है।

गुण-धर्म

इसका प्रधान कर्म कफ और वात का शमन करना है। इसके पंचाग के अल्कोहल सत्व में कैंसर विरोधी क्रिया पाई जाती है। यह दीपन पाचन, अनुलोमन, शूलघ्न और कृमिघ्न है, विशेषत: केचुओं का नाशक एवं कोष्ठ वात प्रशमन है। तीनों प्रकार के सूरजमुखी

Scanned by CamScanner

स्थानिक प्रयोग से राई के समान क्रिया करते है, ये दाहजनन, उत्तेजक, पूतिहर, वेदना स्थापन हैं।

औषधीय प्रयोग

आधाशीशी : सूरजमुखी के पत्तों के रस में इसके बीजों का खरल कर, कपाल पर दो तीन दिन तक लेप करने से, आधाशीशी की वेदना बंद हो जाती है।

कर्णरोग :

1. कर्ण शूल एवं पूतिकर्ण में पत्र कल्क एवं स्वरस से सिद्ध तेल कान में डालने से लाभ होता है। इसका पत्र स्वरस अकेला भी प्रयोग किया जा सकता है।
2. कान में यदि कीड़े पड़ गये हो तो इसके पत्र स्वरस में थोड़ा सा त्रिकटु (सौंठ, काली मिर्च, पीपल) का समभाग चूर्ण मिलाकर गुनगुना कर एक से दो बूंद कान में डालने से कान के कीड़े मर जाते हैं।

गलगंड : सूरजमुखी का मूल और लहसुन दोनों को पीसकर, टिकिया बनाकर गले पर बाँधने से गलगंड फूट जाता है और बह कर साफ हो जाता है मगर इसकी वेदना बहुत होती है।

उदरशूल : बच्चों के उदरशूल तथा आध्मान में इसके फूलों के रस की दस बूंदे दूध में डालकर पिलाने से लाभ होता है।

रेचन : रेचन के लिये इसके बीजों के तेल की एक बूंद नाभि में गिराने से रेचन क्रिया होकर पेट साफ हो जाता है।

मूत्रकृच्छ : इसके बीजों को बारीक पीसकर बासी पानी के साथ पीने से लाभ होता है।

अर्श : इसके बीजों का चूर्ण 3 ग्राम लेकर उसमें 3 ग्राम शक्कर मिलाकर प्रतिदिन प्रातः–सायं खाने से वायु की वजह से होने वाले बवासीर नष्ट हो जाता है, मगर पथ्य में घी, खिचड़ी और छाछ का ही प्रयोग करना चाहिये।

योनिदाह : सूरजमुखी की जड़ को मांड में घिसकर लगाने से लाभ होता है।

अश्मरी : इसकी जड़ को गाय के दूध में पीसकर पिलाने से अश्मरी शीघ्र निकल जाती है।

केंचुआ कृमिनाशक :

1. 1 से 3 ग्राम की मात्रा में इसके बीज खिलाने से केंचुआ व उदरगत कृमि का निर्हरण होता है।
2. डेढ ग्राम से 3 ग्राम तक बीजों का चूर्ण, शक्कर मिलाकर दिन में दो बार दो दिन तक देते हैं, और तीसरे दिन एरंड तेल का विरेचन देते हैं, इससे विशेषतः गंडूपद कृमि निकल जाते हैं।

सूजन :

1. फोडे के ऊपर इसके पत्ते बांधने से उनकी सूजन बिखर जाती है।
2. दुष्ट व्रणों को इसके पत्तों के क्वाथ से धोने से लाभ होता

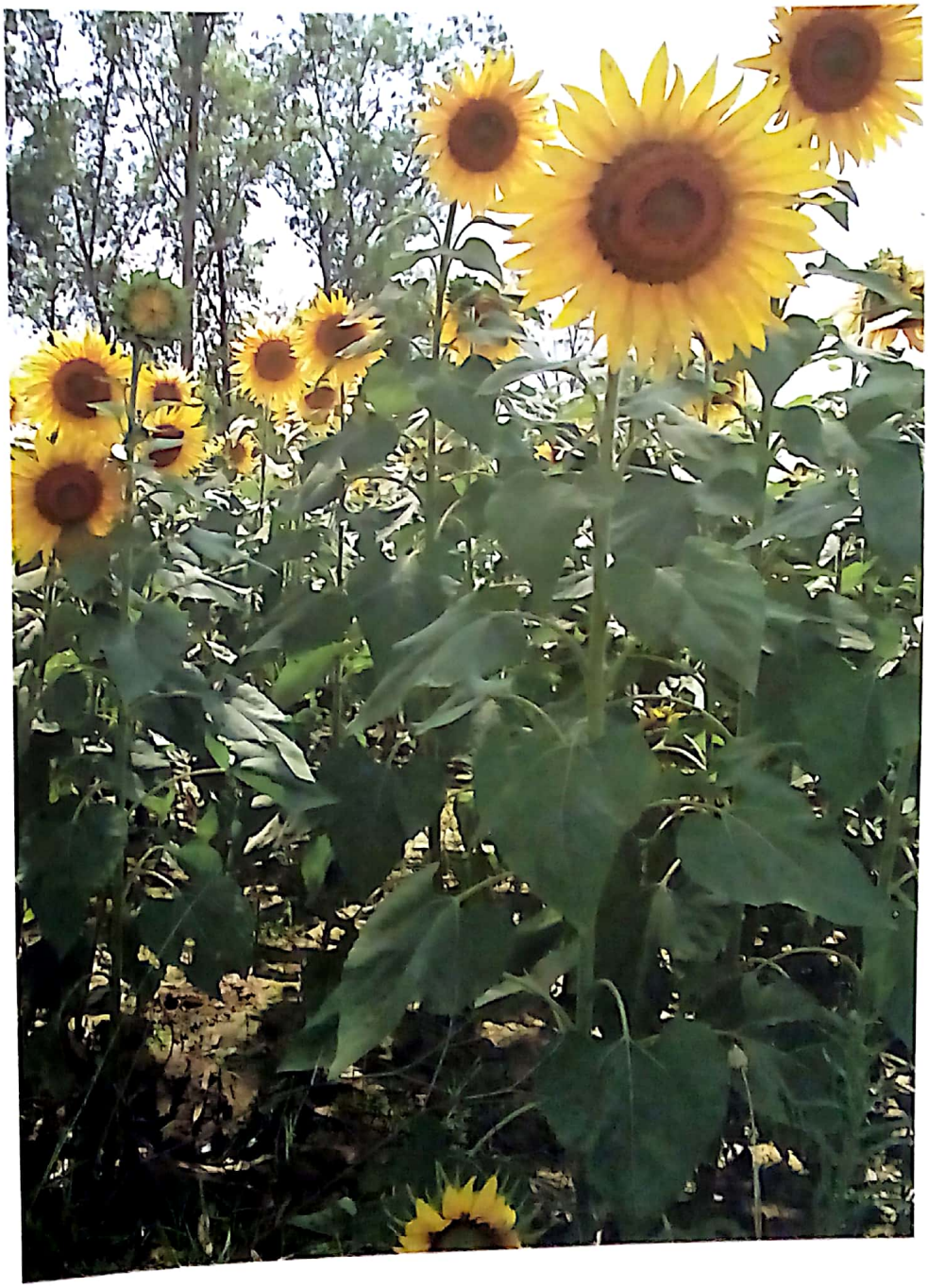

Scanned by CamScanner

है। जीर्ण श्लीपद आदि में पत्तियों को पीसकर लेप करते हैं, जिससे स्फोट निकलते हैं और फोड़ा फूटने पर पानी निकलने से सूजन कम हो जाती है।

ज्वर :

1. इसकी 10 ग्राम जड़ का क्वाथ 20 मि०ली० बनाकर सुबह–शाम पिलाने से हल्का ज्वर छूट जाता है।
2. इसकी जड़ कान में बाँधने से भूतज्वर छूट जाता है।
3. सूरजमुखी के पत्र और काली मिर्च समभाग पीसकर काली मिर्च के बराबर गोलियां बना लें। इन गोलियों में से 1–1 गोली तीन दिन तक सुबह, दोपहर तथा सायं देने से शीतज्वर छूट जाता है।
4. इसके पत्रों का क्वाथ 60 ग्राम की मात्रा में दिन में दो बार पिलाने से पैराटायफाइड या पानी झरा ज्वर छूटता है।
5. वातपित्तनुग श्वास में इसके पंचांग का चूर्ण त्रिकटु, दूध तथा घी के साथ खिलाकर उसके पश्चात् चावल तथा घी खिलाने से श्वास रोग में लाभ होता है।

कोलेस्ट्राल : सूरजमुखी के बीजों को अंकुरित कर खाया जा सकता है, इससे कोलेस्ट्राल की मात्रा नियमित रहती है।

उपदंश : इसके पत्तों को खटाई की तरह घोंटकर उनका फोक बाँधने से उपदंश मिटता है।

विष : इसके 15 ग्राम बीजों को पीसकर पिलाने से सब प्रकार के विष उतरते हैं।

विशेष : सूरजमुखी के पौधे, रोग उत्पन्न करने वाली आर्द्र तथा दुर्गन्धयुक्त वायु का शोषण करने की क्षमता रखते हैं। पृथ्वी से जो विष समान भाप उठकर संक्रामक मलेरिया ज्वर के रूप से देश भर में फैलती है, उस विष रूपी मलेरिया भाप को सोखने की क्षमता सूरजमुखी के पौधे में है। इसके पौधे रोपने से वायु शुद्ध होती है तथा मलेरिया ज्वर, संधिवात तथा आर्द्रता से उत्पन्न होने वाली व्याधियां नष्ट हो जाती है।

1. तिलपर्णी कटूष्णा स्यात्तीक्ष्णा विस्फोटकारिणी।
विदाहि कृमि शूलघ्नी स्वेदला कफवात नुत्।।
(द्रव्य गुण विज्ञान)

2. सूर्यावर्त भवं बीजं श्लक्ष्णं वसदिपेषितम्।
व्युषितोदकसम्पीतं कृच्छ्रं हन्ति सुदारूणम्।।
(भैषज्य रत्नावली)

Scanned by CamScanner

वैज्ञानिक नाम	:	*Valeriana wallichii* DC.
कुलनाम	:	Valeriaraceae
अंग्रेजी नाम	:	Indian valerian
संस्कृत	:	तगर, नत, वक्र, कुटिल, नहुष, शठ, दीपन
हिन्दी	:	तगर
गुजराती	:	तगर, गंठोडा
मराठी	:	तगर मूल
पंजाबी	:	सुगन्धबाला
अरबी	:	सारून
फारसी	:	आसारून
बंगाली	:	तगर पादुका
तैलगु	:	गन्धि तरग, कुचेट्टे

परिचय

तगर के स्वयजात क्षुप कश्मीर से भूटान तक, हिमालय क्षेत्रों में 10,000 फुट की ऊँचाई तक तथा खासिया की पहाडियों पर 4 से 6 हजार फुट की ऊँचाई तक पाये जाते है। इसके सुखाये हुए टेढे–मेढे यौगिक काड या गाठदार प्राय: टेढे–मेढे मूलस्तम्भ बाजारों में 'सुगन्ध बाला' के नाम से बिकते हैं। तगर विलायती वैलरिअन का उत्तम प्रतिनिधि है। केन्द्रीय नाडी सस्थान पर अपने अवसाद प्रभाव के कारण हिस्टीरिया एवं स्त्रियो में उदरगत वायु एवं मासिक धर्म की विकृति से होने वाले नाडी सक्षोभ की अवस्था में इसका प्रयोग बहुत उपयोगी सिद्ध होता है। बाजार मे इसका टिंचर एवं द्रव निर्यास भी बिकता है।

बाह्य–स्वरूप

तगर के बहुवर्षायु शाकीय रोम व पौधे, जिनका मूलस्तम्भ भूमि में, अनुप्रस्थ दिशा में फैला रहता है, प्राय: 6 से 18 इंच ऊंचे और गुच्छेदार होते हैं। मूलीय पत्र स्थायी, सवृत हृदयाकार, लट्वाकार, 1–3 इंच लम्बे तथा 1–1, 1/2 इंच चौडे खंडित या दतुर तीक्ष्णाग्र होते हैं। कांडीय पत्र थोडे छोटे अखंड या सपक्ष होते हैं।

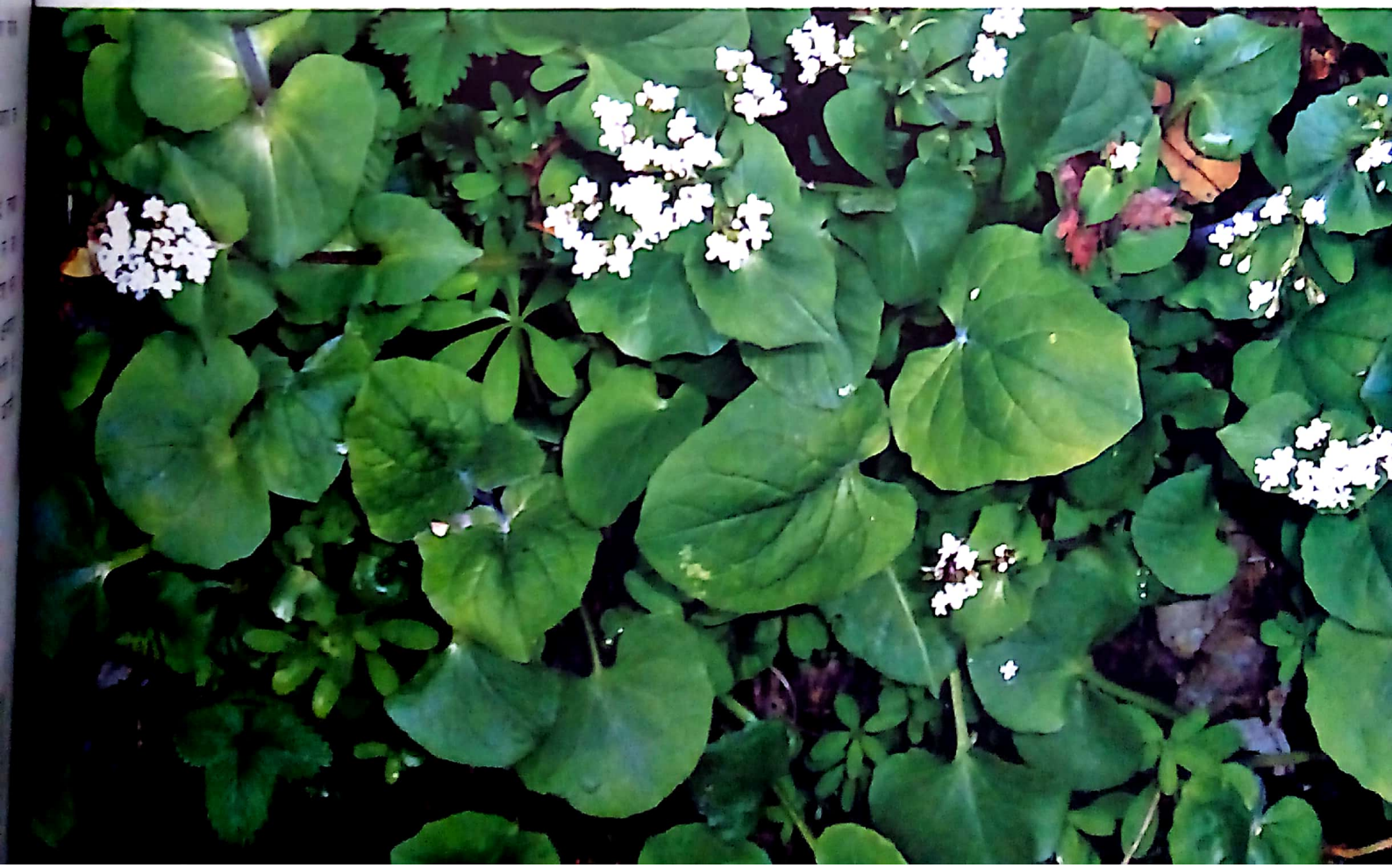

Scanned by CamScanner

पुष्प मंजरी 1–3 इंच व्यास की तथा पुष्प श्वेत कुछ–कुछ गुलाबी, एकलिंगी होते हैं। फल पर भी प्रायः रोम पाये जाते हैं।

रासायनिक संघटन

सुगन्धबाला में 0.5% से 2.12% तक एक उड़नशील तेल पाया जाता है, जो इसका मुख्य सक्रिय तत्व है, इस तेल में सेस्क्विटर्पीन, वैलेरिक एसिड तथा र्प्यीन एल्कोहल आदि तत्व पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त एरेकिडिक एसिड तथा वसाम्ल भी पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

त्रिदोषहर, वेदनास्थापन, आक्षेप हर, मेध्य, दीपन, शूल प्रशमन, सारक, यकृत उत्तेजक, कफघ्न, श्वास हर, हृदयोत्तेजक, मूत्रजनन, चक्षुष्य, कुष्ठघ्न आदि।

औषधीय प्रयोग

नेत्ररोग : इसके पत्तों को पीसकर आँखों के बाहरी भागों में लेप करने से आंख का दुःखना बंद हो जाता है।[2]

हृदय : थोड़ी मात्रा में देने से यह रक्ताभिसरण क्रिया को उत्तेजना देती है। इसका फांट बनाकर देने से यह हृदय की शक्ति और नाड़ी की शक्ति को बढ़ाती है। अधिक मात्रा में यह हानिकारक है।

तगर मूल

आक्षेप व मधुमेह : मस्तिष्क और मज्जा तन्तुओं की खराबी से पैदा हुये मधुमेह और बहुमूत्र में तगर को थोड़ी मात्रा में (लगभग चौथाई ग्राम से 1 ग्राम तक) ताजे फल से दिन में 2 या 3 बार देने से लाभ होता है। यह मस्तिष्कीय रोग उन्माद अपस्मार व विष विकारों में भी लाभप्रद है।[1]

मासिक धर्म : सुगन्धबाला का 1–3 ग्राम चूर्ण या 50–100 मिलीलीटर क्वाथ मासिक धर्म को नियमित करता है। यह निद्राकारक है तथा पुरातन प्रमेह में भी लाभकारी है।

स्नायु रोग व बाइटें : इसके मूल को कूटकर उसमें 4 भाग जल व बराबर मात्रा में तिल का तेल मिलाकर मंदाग्नि पर पकाकर पकने पर छानकर रखें। प्रयोग से बाइटें मिटते हैं। सभी तरह के स्नायु शूल व नसों की कमजोरी में यह लाभप्रद है।

संधिवात :

1. तगर को यशद भस्म के साथ देने से गठिया, पक्षाघात, गले के रोग, सन्धिवात इत्यादि रोग दूर होते हैं।
2. वंक्षण संधि की पीड़ा में तगर की हरी जड़ की छाल 3 ग्राम को छाछ में पीसकर पीना चाहिये।[3]

घाव : पुराने घावों और फोड़ों पर इसका लेप करना चाहिये। इससे घाव जल्दी भर जाता है व घाव दूषित नहीं होता है।

1. तगरं कटुकं तिक्तं कटुपाकरसंलघु।
स्निग्धोष्णंतुवरं भूतमदापस्मारनाशनम्।।
विषचक्षुः शिरोरोगरक्तदोषामयापहम्।। (कै०नि०)

2. तगरस्य शिफां सार्द्रां पिष्ट्वा तक्रेण सह पिबेत्।
वडक्षणानिलरोगार्त्तः स क्षणादेव मुच्यते।। (भैषज्य रत्नावली)

Scanned by CamScanner

तेजपात

118

वैज्ञानिक नाम	:	*Cinnamomum tamala* (Ham.) Nee & Eberm.
कुलनाम	:	Lauraceae
अंग्रेजी नाम	:	Indian cinnamon
संस्कृत	:	तमालपत्र
हिन्दी	:	तेजपात, तेजपत्ता
गुजराती	:	लमालपत्र
मराठी	:	तमाल पत्र
बंगाली	:	तेजपात
पंजाबी	:	तमाल पत्र
तैलगु	:	दिरसेनामु
अरबी	:	साजजे हिन्दी
फारसी	:	सादरस्

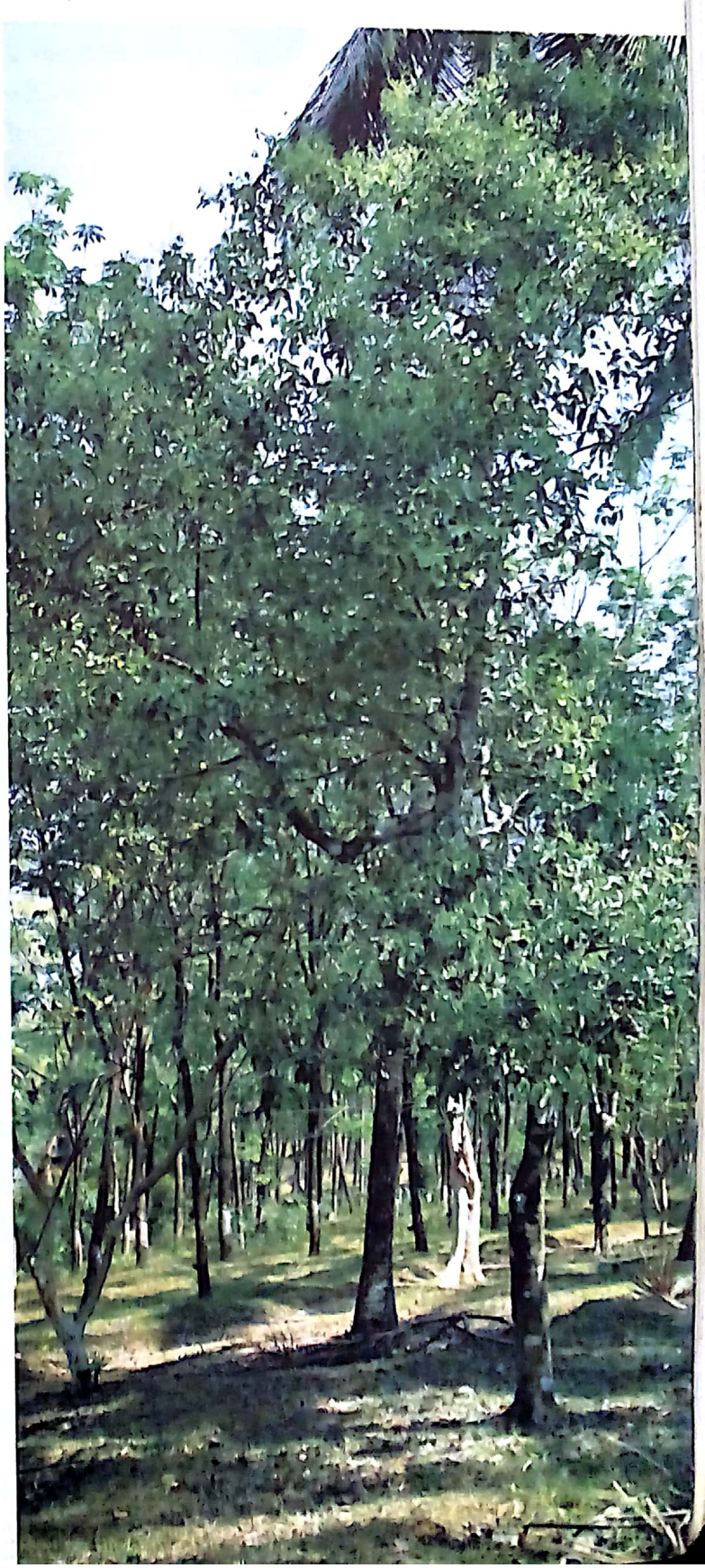

परिचय

उष्ण एवं समशीतोष्ण हिमालय प्रदेश में 3,000 से 6,000 फुट की ऊंचाई तक तमाल पत्र के जंगली वृक्ष पाये जाते हैं। इसके सुखाये हुये पत्ते बाजारों में तेजपात के नाम से बिकते हैं। पत्तियों का रंग जैतूनी हरा, तथा ऊर्ध्व पृष्ठ चिकना, 3 स्पष्ट शिराओंयुक्त तथा इसमें लौंग एवं दालचीनी की सम्मिलित मनोरम गन्ध पाई जाती है।

रासायनिक संघटन

पत्तियों में एक उड़नशील तेल पाया जाता है। जिसका मुख्य घटक युजिनोल है। इसके अतिरिक्ति तर्पीन तथा सिन्नेमिक ऐल्डिहाइड भी पाया जाता है।

गुण–धर्म

हल्का, तीक्ष्ण, कड़वा, मधुर, उष्ण, दीपन–पाचन, वातानुलोमक, मस्तिष्क को बल देने वाला, पेशाब को साफ करने वाला, आमाशय को शक्ति देने वाला, आमाशय के लिये हितकारी तथा सौमनस्यजनन है।

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

सर्दी-जुकाम :

1. चाय पत्ती की जगह तेजपात के चूर्ण की चाय पीने से छींकें आना, नाक बहना, जलन, सिर दर्द में शीघ्र आराम मिलता है। पत्तो को सूँघना भी गुणकारी है।
2. इसकी छाल 5 ग्राम और छोटी पिप्पली 5 ग्राम को पीसकर 2 चम्मच शहद के साथ चटाने से खांसी और जुकाम मिटता है।

सिर दर्द : 10 ग्राम तेजपात के पत्तो को जल में पीसकर, कपाल पर लेप करने से ठंड या गर्मी से उत्पन्न सिर दर्द में आराम मिलता है। आराम होने पर लेप साफ कर लें।

सिर की जुंए : तेजपात के 5–6 पत्तों को एक गिलास पानी में इतना उबालें कि पानी आधा रह जाये। इस पानी से रोजाना सिर में मालिश करने के बाद नहायें।

नेत्र रोग : इसको पीसकर आंख में लगाने से आंख का जाला और धुंध मिट जाती है। आंख में होने वाला नाखूना रोग भी इसके प्रयोग से कट जाता है।

दांतो का मैल :

1. तेजपात के पत्तों का बारीक चूर्ण सुबह–शाम दांतों पर मलने से दांतो में चमक आ जाती है।
2. तेजपात के डंठल को दांतों में चबाते रहने से दांतों से खून आने की तकलीफ में आराम होता है।

दमा और श्वास :

1. तेजपात और पीपल को 2–2 ग्राम की मात्रा में अदरक के मुरब्बे की चाशनी में बुरक कर चटाने से दमा और श्वांस नली का उपद्रव मिट जाता है।
2. सूखे तेजपात के पत्तों का चूर्ण एक चम्मच की मात्रा में एक कप गर्म दूध के साथ सुबह–शाम नियमित सेवन करने से लाभ होता है।.

खांसी : एक चम्मच तेजपात का चूर्ण शहद के साथ सेवन करने से खांसी में आराम मिलता है।

हरी तेजपात

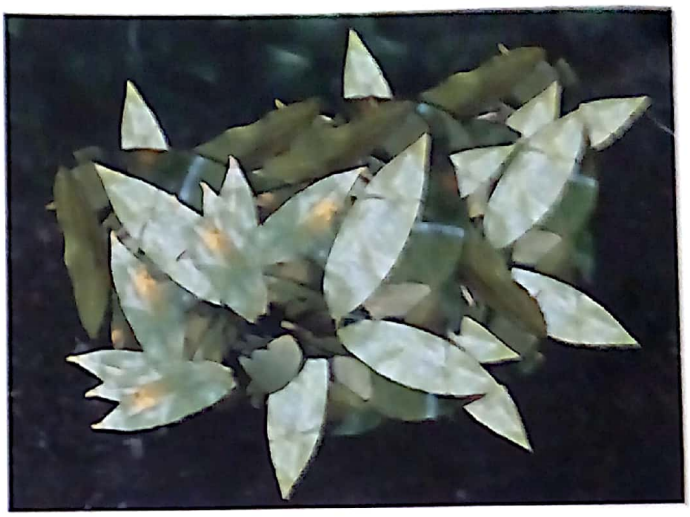

सूखी तेजपात

हकलाहट : तेजपात के पत्ते नियमित रूप से चूसते रहने से हकलाहट में लाभ होता है।

अरूचि : तेजपात का रायता सुबह–शाम खाते रहने से अरूचि दूर होती है।

पेट फूलना : इसके पत्तों का काढा पिलाने से पसीना आता है और आतों की खराबी से पेट का फूलना, दस्त लगना आदि में आराम हो जाता है।

उबकाई : इसके 2–4 ग्राम चूर्ण की फंकी लेने से उबकाई मिटती है।

पीलिया और पथरी : इसके नियमित रूप से 5–6 पत्ते चबाने से रोग की तीव्रता कम होती है।

सुख प्रसव : इसके पत्तों की धूनी देने से बच्चा सुख से उत्पन्न हो जाता है।

गर्भाशय शुद्धि के लिये :

1. तेजपात के पत्तों का महीन चूर्ण 1–3 ग्राम तक तक मात्रा में प्रातः–सायं सेवन करने से गर्भाशय शुद्ध होता है।
2. तेजपात के क्वाथ में बैठाने से गर्भाशय की पीड़ा शान्त होती है।
3. प्रसूता को इसके पत्तों का काढ़ा 40–60 मिलीग्राम प्रातः–सायं पिलाने से दूषित रक्त तथा मल आदि निकल कर गर्भाशय शुद्ध हो जाता है।

वायुगोला : इसकी छाल का चूर्ण 2–4 ग्राम पीसकर फांकने से वायु गोला मिटता है।

संधिवात : इसके पत्तों का जोड़ों पर लेप करने से सन्धिवात में लाभ होता है।

रक्तस्राव : शरीर के किसी भी अंग से रक्तस्राव होने पर एक चम्मच तेजपात का चूर्ण, एक कप पानी के साथ 2–3 बार सेवन करने से रोग में लाभ होता है।

निवारण : मस्तगी और बिहीका शर्बत

प्रतिनिधि द्रव्य : बालछड़

Scanned by CamScanner

तिल

वैज्ञानिक नाम	:	*Sesamum orientale* L.
कुलनाम	:	Pedaliaceae
अंग्रेजी नाम	:	Gingelly sesame
संस्कृत	:	तिल, तिल तेल
हिन्दी	:	तिल, तिल्ली का तेल
गुजराती	:	तल, मीठु तेल
मराठी	:	तिल, गोड़ा तेल
बंगाली	:	तिल
फारसी	:	कुंजद, रोगन कुंजद
अरबी	:	शीरज, सिमसिम, समसम, हल

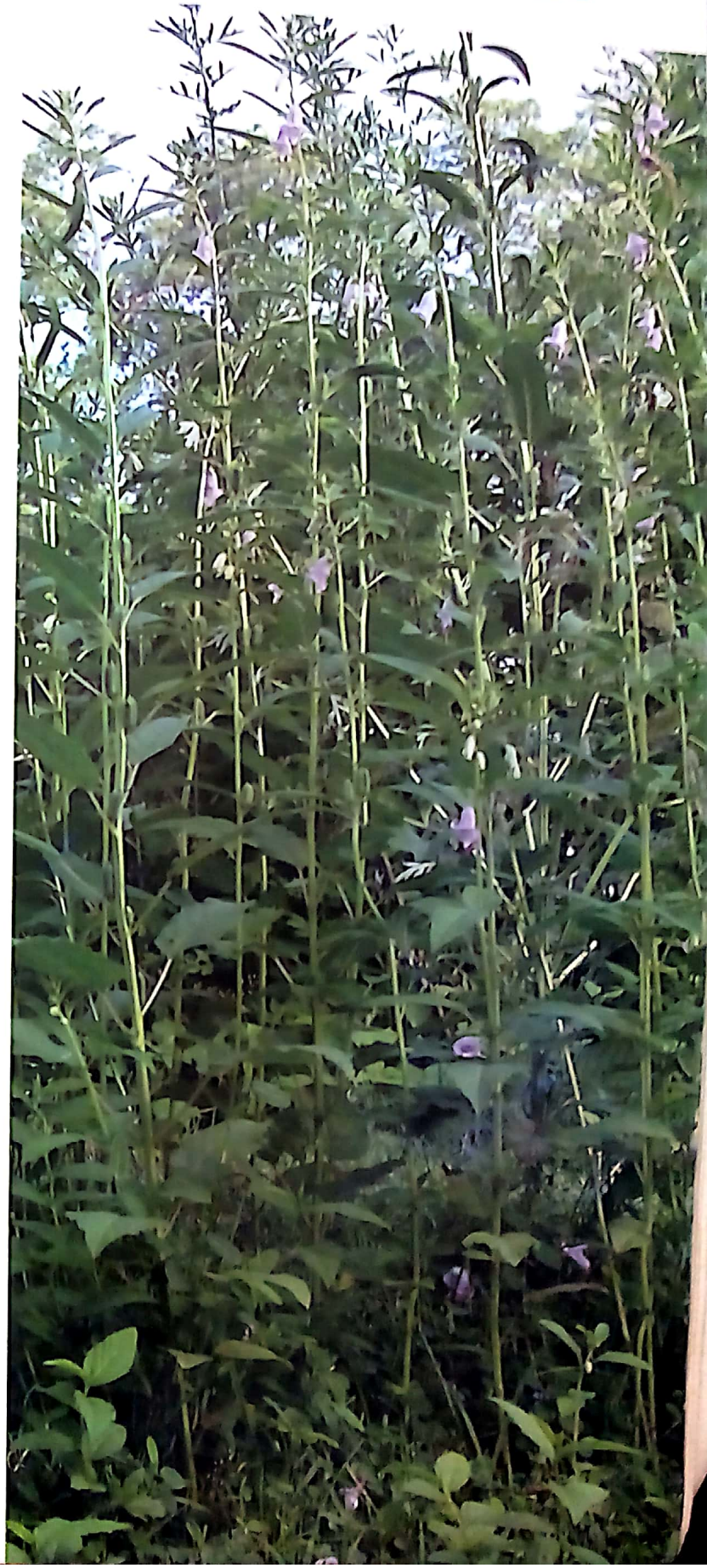

परिचय

तिल और तिलों के तेल से सब परिचित हैं। जाड़े की ऋतु में तिल के मोदक बड़े चाव से खाये जाते हैं। रंग भेद से तिल तीन प्रकार का होता है, श्वेत, लाल एवं काला। औषधि कर्म में काले तिलों से प्राप्त तेल अधिक उत्तम समझा जाता है। भारतवर्ष में तिल की प्रचुर मात्रा में खेती की जाती है। तिल (बीज) एवं तेल भारतवर्ष के प्रसिद्ध व्यावसायिक द्रव्य है।

बाह्य–स्वरूप

तिल के एक वर्षायु, कोमल, रोमावृत 1–3 फुट ऊंचे क्षुप हल्की दुर्गन्ध युक्त होते हैं। इस पौधे पर जगह–जगह स्रावी ग्रंथियां पाई जाती हैं। ऊपरी भाग की पत्तियाँ सरल, एकान्तर, मालाकार, आयताकार, पत्राग्र प्रायः रेखाकार, मध्य भाग में लटवाकार, किनारे दन्तुर तथा निचले भाग की पत्तियाँ अभिमुख तथा खंडित होती हैं। पुष्प डेढ इंच तक लम्बे, बैंगनी श्वेताभ वर्ण के रोमश एवं बैंगनी या पीले बिन्दुओं से युक्त होते हैं। फली 2 इंच लम्बी, लम्ब गोल चतुष्कोणाकार तथा अग्रपर कुंठित सी होती है। जिसमें से अलसी के समान चपटे, किन्तु उससे छोटे अनेक क्षुद्र बीज निकलते हैं।

रासायनिक संघटन

तिलों से एक धुंधले पीताभ वर्ण का द्रव प्राप्त होता है, जिसे तिल तेल अथवा आम भाषा में मीठा तेल कहते हैं। इसमें बहुत हल्की रूचिकर गंध होती है। इस तेल में प्रोटीन, अल्प मात्रा में कोलीन सेक्रोज एवं लेसिथीन आदि तत्व पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त

Scanned by CamScanner

बीजों में सिमेमिआ, सिसेमोलिन, लाइपेज, निकोटिनिक एसिड तथा प्रधानत: ओलिक एवं लिनोलीक एसिड के तथा अल्पत: स्टियरिक, पामिटिक एवं अरेकिडिक एसिड के ग्लिसराइडस पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

तिल रस में चरपरे–कड़वे–मधुर–कसैले–भारी, पाक में चरपरे–स्वादिष्ट, स्निग्ध–उष्ण, कफ तथा पित्त को नष्ट करने वाले, बलदायक, केशों को हितकारी, स्पर्श में शीतल, त्वचा को हितकारी, दूध को बढ़ाने वाले, व्रणरोग में लाभकारी, दांतों को उत्तम करने वाले, मूत्र का प्रवाह कम करने वाले, ग्राही, वात नाशक, दीपन और मेध्य है। कृष्ण तिल सर्वोत्तम व वीर्यवर्धक है, सफेद तिल मध्यम हैं, लाल तिल हीन गुण वाले है।

औषधीय प्रयोग

दंत रोग

1. तिल दांतों के लिए हितकर है। प्रतिदिन 25 ग्राम तिलों को चबा–चबा कर खाने से दांत मजबूत होते हैं।
2. मुंह में तिल को भरकर 5–10 मिनट रखने से पायरिया ठीक होकर दांत मजबूत हो जाते हैं।

नेत्ररोग : तिल पुष्पों पर शरद ऋतु में पड़ी ओस की बूंदों को मलमल के कपड़े या किसी और प्रकार से उठाकर शीशी में भरकर रख लें। इन ओस कणों को आंख में टपकाते रहने से नेत्रों के सब प्रकार के रोग मिटते हैं।

केश :

1. इसकी जड़ और पत्तों के क्वाथ से बाल धोने से बालों पर काला रंग पैदा हो जाता है।
2. काले तिलों के तेल को शुद्ध अवस्था में बालों में लगाने से बाल असमय सफेद नहीं होते। प्रतिदिन सिर में तेल की मालिश करने से बाल सदैव मुलायम, काले और घने रहते हैं।
3. गंजेपन में जब सिर के बालों में रूसी पड़ गई हो तब तिल के फूल तथा गोक्षुर, बराबर लेकर घी तथा मधु में पीसकर सिर पर लेप करने से गंजापन दूर होता है।

खांसी :

1. तिल के 100 मिलीग्राम काढ़े में 2 चम्मच शक्कर डालकर पीने से खांसी में लाभ होता है।
2. तिल और मिश्री को उबालकर पिलाने से सूखी खांसी मिटती है।

जठराग्नि : तिल के सेवन से जठराग्नि प्रदीप्त होकर मेधा बढ़ती है। इससे बुद्धि, स्मरण शक्ति तथा ग्रहण शक्ति बढ़ती है।

अर्श :

1. अर्श में तिल को जल के साथ पीसकर मक्खन के साथ दिन में तीन बार भोजन से 1 घण्टा पहले चाटने से लाभ होता है। रूधिर का निकलना बंद हो जाता है।
2. तिल को पीसकर गरम कर अर्श पर पुल्टिस की तरह बांधना चाहिए।

बवासीर : तिल के तेल की बस्ति (एनिमा) देने से गुदा के अंदर काफी दूर तक आँते स्निग्ध होकर मल के गुच्छे निकल जाते हैं, जिससे बवासीर में राहत महसूस होती है।

रक्तातिसार : तिलों के 5 ग्राम चूर्ण में बराबर मिश्री मिलाकर बकरी के चार गुने दूध के साथ सेवन करने से रक्तातिसार में लाभ होता है।

आमातिसार :

1. तिल के पत्रों को पानी में भिगोने से पानी में लुआब आ जाता है, यह चेप या लुआब बच्चो की विसूचिका, अतिसार, आमातिसार, प्रतिश्याय और मूत्र नली के रोगों में पिलाने से लाभ होता है।
2. आमातिसार में यदि दस्त बंद न हो तो इसके पत्तों के लुआब में थोड़ी अफीम डालकर प्रात:–साय पिलाना चाहिए।

गर्भाशय के विकार :

1. गर्भाशय में रूधिर के जमाव को बिखेरने के लिए 625–625 मि० ग्रा० तिलों का चूर्ण दिन में 3–4 बार सेवन करना चाहिए और उष्ण जल में बैठना चाहिए एवं जल कमर तक पहुंचना चाहिए।
2. मासिक धर्म यदि कष्ट से आता हो तो तिलों का 100 मिलीग्राम क्वाथ बनाकर पिलाना चाहिए।
3. तिल के 100 मिली ग्राम क्वाथ में 2 ग्राम सौंठ, 2 ग्राम काली मिर्च और 2 ग्राम पीपल का चूर्ण बुरककर कर दिन में तीन बार पिलाने से मासिक धर्म की रूकावट मिटती है।
4. रूई के फोहे को तिल के तेल में भिगोकर योनि के अग्रभाग

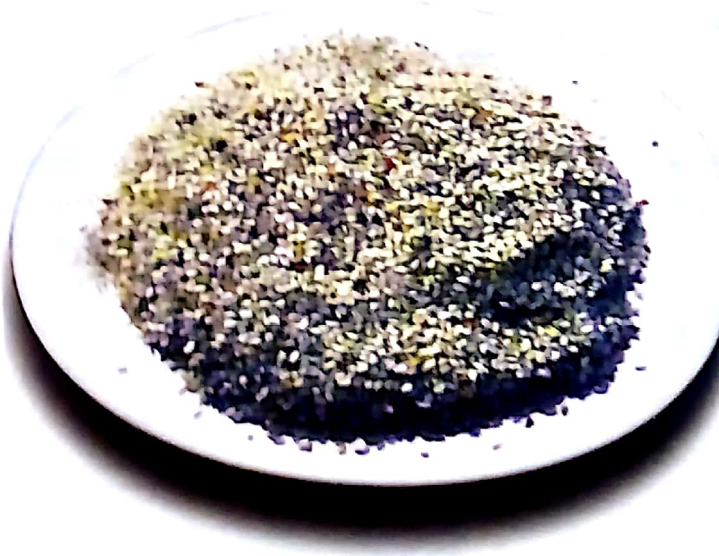

तिल–श्वेत

Scanned by CamScanner

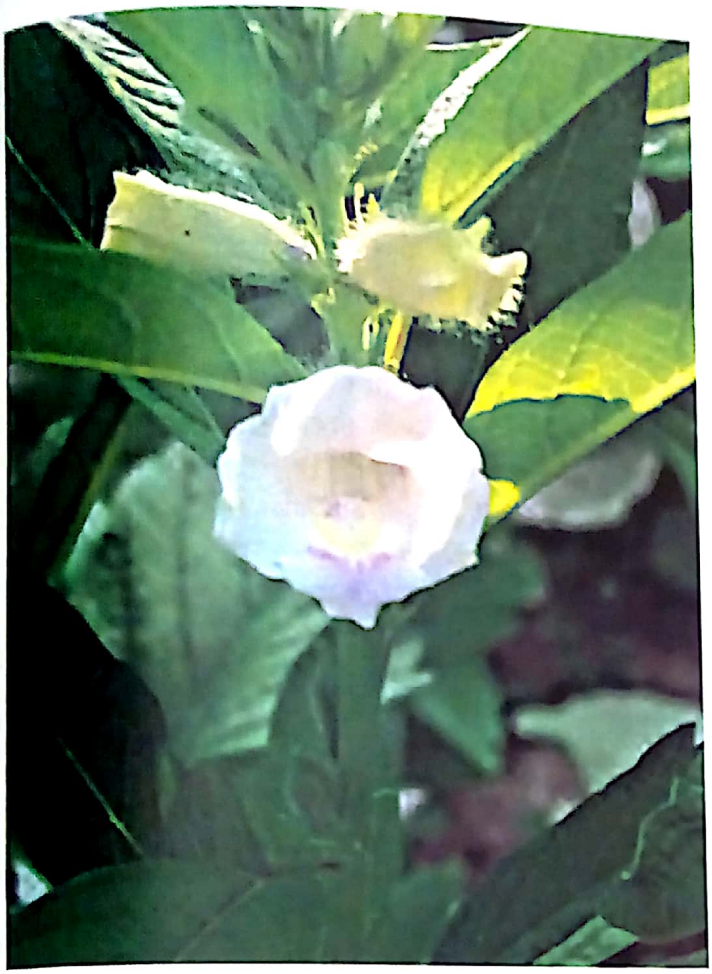

पर रखने से श्वेत प्रदर मिट जाता है।

5. 10 ग्राम तिल और 10 ग्राम गोखरू को रातभर पानी में भिगोकर प्रातःकाल उनका चेप निकालकर उसमें थोड़ा बूरा डालकर पिलाने से बंद हुआ मासिक धर्म फिर जारी हो जाता है।
6. तिलों के तेल में पीस, हल्के गरम कर नाभि के नीचे लेप करने से नसों की सर्दी की पीड़ा मिटती है।
7. मासिक धर्म को नियमित करने के लिए तिलों का चूर्ण आधा ग्राम की मात्रा में दिन में 3–4 बार जल के साथ लेने से ऋतु स्त्राव नियमित हो जाता है।
8. तिल का काढ़ा बनाकर लगभग 100 मिलीग्राम सुबह शाम पीने से मासिक–धर्म नियमित हो जाता है।

पथरी :

1. तिल की छाया शुष्क कोमल कोपलों की राख सात ग्राम से दस ग्राम तक प्रतिदिन खाने से पथरी गलकर निकल जाती है।
2. तिल पुष्पों के 4 ग्राम क्षार को 2 चम्मच मधु और 250 ग्राम दूध में मिला कर पिलाने से पथरी गल जाती है।
3. तिल के पौधे की लकड़ी की सात ग्राम से 14 ग्राम तक भस्म सिरके के साथ प्रातः–सायं भोजन से पहले खाने से पथरी गलकर निकल जाती है।

पुरुषार्थ : तिल और अलसी का 100 मिलीग्राम क्वाथ प्रातः–सायं भोजन से पहले पिलाने से पुरुषार्थ बढ़ता है।

बच्चों का मूत्र रोग : रात्रि में बच्चे बिस्तर गीला कर देते हैं, उनके लिए तिल का लम्बे समय तक सेवन बहुत लाभकारी है।

सुजाक : नवीन सुजाक में इसके ताजे पत्तों को 12 घण्टे तक पानी में भिगोकर उस पानी को पिलाने से अथवा तिल के 5 ग्राम क्षार को दूध या शहद के साथ देने से पेशाब की जलन कम होती है और पेशाब साफ आता है।

संधिवात : संधिवात में तिल तथा सौंठ समभाग लेकर प्रतिदिन 5–5 ग्राम तीन से चार बार सेवन करना चाहिए।

रसायन : काले तिल और जल भांगरे के पत्तों को लगातार एक मास तक सेवन करने से कई प्रकार के रोग मिटते हैं। यह योग रसायन का प्रभाव दर्शाता है। पथ्य सिर्फ दूध का आहार लें।

बाह्य प्रयोग :

1. तिल का तेल त्वचा के लिए लाभकारी है। प्रतिदिन तिल के तेल की मालिश करने से मनुष्य कभी भी बीमार नहीं होता। इसके तेल की मालिश से रक्त विकार, कटिशूल, अंगमर्द, वातव्याधि जैसे रोग नहीं होते।
2. तिल को पीसकर जले हुए स्थान पर लेप करने से शांति मिलती है।
3. तिल के पत्तों को सिरके या पानी में पीसकर मस्तक पर लेप करने से मस्तक पीड़ा मिट जाती है।

Scanned by CamScanner

4. तिलों की सिरस की छाल और सिरके के साथ पीसकर मुंह पर लगाने से मुहांसे ठीक हो जाते हैं।
5. चोट और मोच पर तिल की खली को पानी के साथ पीसकर गरम करके बांधने से लाभ होता है।
6. तिल और अरंडी को अलग–अलग कूटकर दोनों को तिल्ली तेल में मिलाकर लेप करने से चोट की पीड़ा मिटती है और सूखा हुआ अंग अपनी पूर्व दशा में आ जाता है।
7. तिलों को दूध में पीसकर मस्तक पर लेप करने से सूर्यावर्त्त मिटता है।
8. तिलों की पुल्टिस बनाकर घाव पर बांधने से घाव जल्दी भर जाते हैं।
9. सब प्रकार के व्रणों पर तिल्ली का तेल लगाना अच्छा होता है।

कांटा : शरीर मे किसी भी अंग मे नागफनी या थूहर का कांटा यदि घुस जाये और निकालने मे दिक्कत हो तो उस जगह तिल्ली का तेल बार–बार लगाने से कुछ समय मे वह कांटा बिन परिश्रम के निकल जाता है।

सूजन : तिल और मक्खन को पीसकर मालिश करने से मिलावें की सूजन उतर जाती है।

विष :

1. तिल की छाल और हल्दी को पानी मे पीसकर लेप करने से मकड़ी का विष उतर जाता है।
2. तिलों को पानी मे पीसकर लेप करने से बिल्ली का विष उतर जाता है।
3. तिलों को सिरके मे पीसकर मलने से भिरड़ (बर्रे) का विष उतर जाता है।

विषम ज्वर : तिलों की लुगदी को घी के साथ लेने से विषम ज्वर में लाभ होता है।

तिल–स्याह

1. तिलो रसे कटुस्तिक्तो मधुरस्तुवरो गुरुः।
विपाके चापि मधुरः स्निग्धोष्णः कफ पित्तनुत्।।
बल्यः केश्यो हिमस्पर्शस्त्वच्यः स्तन्यो व्रणे हितः।
दन्त्योऽल्पमूत्रकृद् ग्राही वातघ्नोऽग्निमतिप्रदः।।
कृष्णः श्रेष्ठतमस्तेषु शुक्लोमध्यमः सितः।'
अन्ये हीनतराः .....।। (भाव प्रकाश)
2. स्निग्धोष्णो मधुरस्तिक्तः कषायः कटुकस्तिलः।
त्वच्यः केश्यश्च बल्यश्च वातघ्नः कफपित्तकृत्।। (चरक)

Scanned by CamScanner

त्रिफला

120

परिचय

भावमिश्र हरीतकी, विभीतकी तथा धात्री फल के समभाग मिश्रण को त्रिफला कहते हैं।[1] दूसरे वैद्य दो तथा तीन भाग के मिश्रण को त्रिफला कहते हैं। कैयदेव निघंटु में त्रिफला एक हरीतकी दो विभीतक तथा चार आंवले मिलाने से बनता है।[2]

गुण–धर्म

त्रिफला कफ, पित्त, प्रमेह तथा कुष्ठ को हरने वाला, दस्तावर, नेत्रों को हितकारी, अग्नि प्रदीप्त करने वाला, रूचिवर्द्धक एवं विषम ज्वर नाशक है।[3] हरड़, बहेड़ा और आंवला क्वाथ तिक्त तथा मधुर रस युक्त है।[4]

औषधीय प्रयोग

केश : 2 से 5 ग्राम त्रिफला चूर्ण में 125 मिलीग्राम लौह भस्म मिलाकर प्रातः–सायं सेवन करने से बाल झड़ने बंद हो जाते हैं।

नेत्र : एक चम्मच त्रिफला चूर्ण को रात्रि को ठंडे पानी में भिगोकर सुबह उस जल से नेत्रों को धोने से नेत्रों के रोग मिटते हैं।

गुल्म : पित्तजनित गुल्म में द्राक्षा एवं हरड़ का 1–2 चम्मच स्वरस गुड़ मिलाकर पीना अथवा त्रिफला चूर्ण की 3–5 ग्राम मात्रा को खांड मिलाकर दिन में 3 बार खाना चाहिए।

अरूचि : त्रिफला, दाड़िम, रजादन यह सब वायुनाशक, मूत्रदोष को मिटाने वाला है। हृदय के लिये पिपासानाशक हैं एवं रुचि उत्पन्न करने वाली है।[6]

अम्लपित्त : त्रिफला चूर्ण आधा चम्मच दिन में दो तीन बार जल के साथ फांकने से एसिडिटी में लाभ होता है।

कब्ज : रात्रि में सोते समय एक चम्मच त्रिफला चूर्ण का सेवन गरम जल के साथ करने से कब्ज मिटती है।

Scanned by CamScanner

कृमि : त्रिफला, हल्दी, निम्ब यह तिक्त, मधुर रस कफपित्तज रोग को नष्ट करने वाला, कुष्ठ, कृमिनाशक एवं दूषित व्रण का शोधक है।[7]

कामला : त्रिफला, गिलोय, वासा, कुटकी, चिरायता, नीम की छाल मिश्रित कर 20 ग्राम लेकर आठ गुने जल में पकाकर चौथाई शेष रहने पर इस क्वाथ में मधु का प्रक्षेप देकर प्रातः–सायं सेवन करने से कामला तथा पाण्डु रोग नष्ट होता है।

पाण्डुरोग : त्रिफला, कुटज, पलाश यह मेदोनाशक तथा शुक्रदोष को मिटाने वाला है। प्रमेह, अर्श, पांडुरोग नाशक एवं शर्करा को दूर करने के लिये श्रेष्ठ है।[8]

बहुमूत्र :

1. त्रिफला, बांस के पत्ते, मोथा, पाठा इनके 3–4 ग्राम चूर्ण को शहद तथा घी के साथ सेवन करने से बहुमूत्र का रोग शीघ्र नष्ट हो जाता है। अगस्त्य मुनि ने जिस प्रकार समुद्र को सुखा दिया था, उसी प्रकार ये बहुमूत्र को सुखा देता है।
2. 2 चम्मच त्रिफला चूर्ण कल्क में थोड़ा सा सैंधा नमक मिलाकर प्रयोग करने से बहूमूत्र का रोग ठीक होता है।

प्रमेह : त्रिफला, दारूहल्दी, देवदारू, नागरमोथा इन सबको समान भाग में लेकर यथाविधि इनका क्वाथ करके प्रमेह रोगी इसको दिन में दो बार पियें।[10]

शोथ : गोमूत्र में त्रिफला का क्वाथ सिद्ध कर प्रातः–सायं पीने से वृषण स्थित वात श्लेष्मज शोथ नष्ट होता है।

रसायन : त्रिफला, सम्पूर्ण रोगनाशक, आयुस्थापन होता है। इसके निरन्तर प्रयोग से बुढ़ापा शीघ्र नहीं आता है।[9]

रक्तपित्त : हरड, बहेड़ा, आंवला तथा अमलतास के 20 मिलीलीटर क्वाथ में मधु और खांड का प्रक्षेप देकर पीने से रक्त पित्त, दाह तथा शूल शांत होते हैं।

ज्वर :

1. यह औषधि ज्वर विनाशक होती है। इसका क्वाथ 10–20 ग्राम की मात्रा में ज्वर आने से 1 घंटे पूर्व पिलाना चाहिए।
2. 20 मि०ली० त्रिफला का क्वाथ अथवा गिलोय का रस स्वरस पीने से विषम ज्वर में लाभ पहुंचता है। अथवा षट्पल घी का पान भी करना चाहिए।[9]

कुष्ठ : त्रिफला एवं वासा के क्वाथ का स्नान तथा पान करने से कुष्ठ रोग का नाश होता है।[11]

परमपूज्य स्वामी रामदेव जी का स्वानुभूत प्रयोग

एक चम्मच त्रिफला चूर्ण को रात्रि में 200 ग्राम पानी में भिगोकर रखें। प्रातः गर्म करें, आधा शेष रहने पर छान लें। 2 चम्मच शहद मिलाकर गर्म–गर्म सहता हुआ पीयें। कुछ ही दिनों के सेवन से कई किलो वजन कम हो जाता है।

1. पथ्याविभीत धात्रीणां फलैः स्यात्त्रिफला समैः।
   फल त्रिक च त्रिफला सा वरा च प्रकीर्तिता।। (भा०प्र०)
2. एक हरीतकी योज्या द्वौ च योज्यौ विभीतकौ।
   चत्वार्यामलकानीति त्रिफला प्रोच्यते बुधै।। (कै०नि०)
3. त्रिफला कफपित्तघ्नी मेहकुष्ठहरा सरा।
   चक्षुष्या दीपनी रुच्या विषमज्वरनाशिनी।। (भाव प्रकाश)
4. सारिवा शर्करा पाठमञ्जिजष्ठा द्राक्षा
   पीलुपरूषकाभयामलकाविभीतकानीति दशेमानीज्वरहरणी भवन्ति। (सुश्रुत)
5. मुष्कक पलाश धवचित्रकमदनवृक्षक शिंशपावज्र वृक्षास्विफला चेति.....।। (सुश्रुत)
6. लाक्षारेवत कुटजाश्वमारकट्फलहरिद्राद्वयनिम्ब सप्तच्छद।। (सुश्रुत)

Scanned by CamScanner

वैज्ञानिक नाम	:	*Ocimum sanctum* L.
कुलनाम	:	Lamiaceae
अंग्रेजी नाम	:	Holy basil
संस्कृत	:	वृन्दा, सुगन्धा, अमृता, पत्र पुष्पा
हिन्दी	:	तुलसी
गुजराती	:	तुलस
मराठी	:	तुलसा, काला तुलसी
बंगाली	:	तुलसी, कुरल
पंजाबी	:	तुलसी
तैलगु	:	वृन्दा, गगेरा, कृष्णा तुलसी

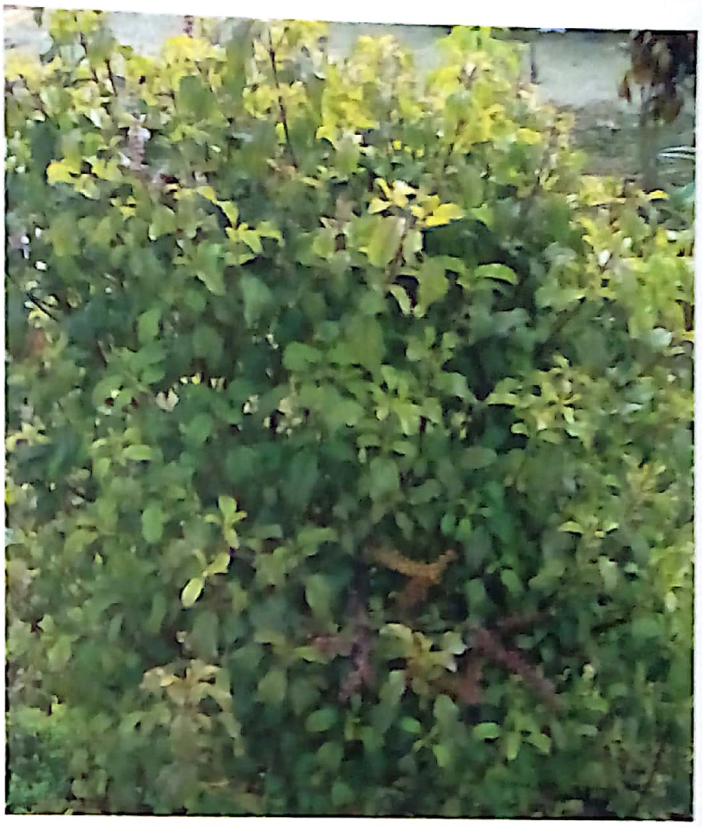

परिचय

विष्णु बल्लभा, सुखवल्लरी, श्री कृष्ण बल्लभा, वृन्दा, वैष्णवी आदि पवित्र नामों से विभूषित तुलसी के माहात्म्य का वर्णन करना ऐसा है, जैसे सूरज को दीपक दिखाना, या समुद्र किनारे बैठकर लहरों का गिनना। सर्वरोग निवारक जीवनीय शक्ति वर्धक, इस औषधि को प्रत्यक्ष देवी कहा गया है। क्योंकि सर्वत्र सुलभ, सुगन्धित, सुन्दर तथा इससे सस्ती औषधि मनुष्य जाति के लिये अन्य कोई और नहीं है। तुलसी के धार्मिक महत्व के कारण हर–घर आगंन में इसके पौधे लगाये जाते हैं। तुलसी की कई जातियां मिलती हैं। जिनमें श्वेत व कृष्ण प्रमुख हैं। कृष्ण तुलसी के पत्र तथा शाखायें कुछ बैंगनी तथा कृष्ण आभा लिये होते हैं। इसके अतिरिक्त *Ocimum basilicum*, *O. gratissimum* आदि जातियां भी काफी महत्व की है।

बाह्य–स्वरूप

इसका क्षुप 2–4 फीट ऊँचा, रोमेथ तथा सुगंधित होता है। पत्र आयताकार तथा लट्आकार होता है। 6–8 इंच लम्बी मंजरी कतिपय बैंगनी रंग की होती है। बीज गोलाकार, चिकना तथा भूरे एवं काले रंग के होते हैं। शीत ऋतु में पुष्प तथा फल आते हैं।

रासायनिक संघटन

पत्तियों में पीताभहरित वर्ण का तेल पाया जाता है, जो शुष्क होने पर क्रिस्टलीय हो जाता है। इसे तुलसी कपूर कहते हैं।

गुण–धर्म

कफवात शामक, जन्तघ्न, दुर्गन्ध नाशक, दीपन, पाचन, अनुलोमन, कृमिघ्न, कफघ्न, हृदयोत्तेजक, रक्तशोधक, स्वेदजनन, ज्वरघ्न व शोथहर है।

बीज : मूत्रल एवं बल्य है।

पत्र : प्रतिश्याय, वातश्लैष्मिक ज्वर एवं विषम ज्वर में तुलसी स्वरस अथवा क्वाथ एक उत्तम औषधि है।

औषधीय प्रयोग

कुष्ठ रोग :

1. कुष्ठ रोग में तुलसी पत्रों का 10–20 ग्राम स्वरस प्रतिदिन प्रातः काल पीने से लाभ होता है।
2. तुलसी के पत्रों को नीबूं के रस में पीसकर, दाद, वातरक्त, कुष्ठ आदि पर लेप करने से लाभ होता है।
3. तुलसी पत्र स्वरस, पत्थर चूना, गाय का घी इन सभी को एक साथ घोंटकर लगाते रहने से भी लाभ होता है।

शक्ति वृद्धि के लिये : 20 ग्राम तुलसी बीजचूर्ण में 40 ग्राम मिश्री मिलाकर महीन–महीन पीसकर 1 ग्राम की मात्रा में शीत ऋतु में कुछ दिन सेवन करने से वात कफ रोगों से बचाव होता है।

Scanned by CamScanner

दुर्बलता दूर होती है। शरीर की रोग–प्रतिरोधक क्षमता बढती है। स्नायु मंडल सशक्त होता है।

शिरोरोग :

1. तुलसी की छाया शुष्क मंजरी के चूर्ण को 1–2 ग्राम की मात्रा में मधु के साथ चाटने से लाभ होता है।
2. तुलसी के 5 पत्र प्रतिदिन पानी के साथ निगलने से बुद्धि, मेधा तथा मस्तिष्क की शक्ति बढती है।
3. तुलसी का तेल नाक में टपकाने से, पुराना सिर दर्द तथा अन्य सिर के रोग दूर होते हैं।
4. तुलसी के तेल को सिर में लगाने से जुएं एवं लीखें मर जाती हैं।
5. तेल को मुंह पर मलने से चेहरा का रंग साफ जाता है।

दंत शूल :

1. काली मिर्च और तुलसी के पत्तों की गोली बनाकर दांत के नीचे रखने से दंतशूल दूर होता है।
2. तुलसी के रस को हल्के गर्म गुनगुने पानी में मिलाकर कुल्ला करने से, कंठ के रोगों में बहुत लाभ होता है।
3. तुलसी रस युक्त जल में हल्दी और सैंधा नमक मिलाकर कुल्ले करने से भी मुख, दांत तथा गले के सब विकार दूर होते हैं।

स्तम्भन : तुलसी की जड़ का चूर्ण 2–4 ग्राम और जमीकन्द का चूर्ण मिलाकर 125–250 मिलीग्राम तक पान में रखकर खाने से स्तम्भन होता है।

रतौंधी : तुलसी के पत्तों का स्वरस 5–10 मिलीग्राम दिन में कई बार आंखों में डालने से रतौंधी नष्ट होती है।

पीनसरोग : तुलसी के पत्ते या मंजरी को सूंघने से, मस्तक के कृमिनष्ट होकर नाक से बदबू बन्द हो जाता है।

वमन : तुलसी के पत्तों का रस छोटी इलायची तथा अदरक का रस सेवन करने से वमन तथा जी मिचलाने में लाभ होता है।

तुलसी पंचांग

न्यूमोनिया : काली तुलसी के पत्तों के 5–10 ग्राम रस में, गाय का घी गुनगुना कर दुगनी मात्रा में मिलाकर चटाने से 2–3 दिन में आराम होता है।

प्रसवोत्तर शूल : पत्रस्वरस में पुराना गुड तथा खांड मिलाकर प्रसव होने के बाद तुरन्त पिलाने से प्रसव के बाद का शूल नष्ट होता है।

सर्दी खांसी प्रतिश्याय जुकाम आदि :

1. तुलसी पत्र मंजरी सहित 50 ग्राम, अदरक 25 ग्राम, कालीमिर्च 15 ग्राम, जल 500 ग्राम क्वाथ करें, चौथाई शेष रहने पर छानकर 10 ग्राम छोटी इलायची बीजों का महीन चूर्ण मिलाकर 200 ग्राम चीनी डालकर, पकायें, एक तार की चाशनी हो जाने पर छानकर रख लें।
2. इस शर्बत का आधी से डेढ चम्मच की मात्रा में बच्चों को तथा 2 से चार चम्मच तक बडों को सेवन कराने से, खांसी, श्वास, काली खांसी, कुक्कुर खांसी गले की खराश आदि में फायदा होता।
3. इस शर्बत को जुकाम तथा दमा में गर्म पानी मिलाकर लेने से बहुत लाभ होता है।
4. पुरानी खांसी तथा दमे में तुलसी दल 10, तथा वासा के पीले रंग के तीन पत्र काली मिर्च 1 तथा अदरक मटर के 4–6 दानों के बराबर गिलोयकांड का 6 इंच लम्बा, टुकडा, सब चीजों को कूटकर 1 गिलास जल में पकायें, आधा शेष रहने पर 10–15 ग्राम गुड मिलाकर 3 खुराक बना लें, चार–चार घंटे के अन्तर के सेवन से पुरानी खांसी में अच्छा लाभ होता है।
5. खांसी में तुलसी पत्र स्वरस 5–10 मि० ग्रा० में काली मिर्च का चूर्ण डालकर पीने से खांसी का वेग कम हो जाता है।
6. तुलसी की मंजरी, सौंठ, प्याज का रस और शहद मिलाकर चटाने से सूखी खांसी और बच्चे के दमे में लाभ होता है।

परमपूज्य स्वामी रामदेव जी का स्वानुभूत प्रयोग

7 पत्ते तुलसी के, 5 लौंग लेकर एक गिलास पानी में पकायें। तुलसी पत्र व लौंग को पानी में डालने से पहले टुकडे कर लें। पानी पकाकर जब आधा शेष रह जाये, तब थोड़ा सा सैंधा नमक डालकर गर्म–गर्म पी जायें। यह काढा पीकर कुछ समय के लिऐ वस्त्र ओढ़कर पसीना ले लें। इससे ज्वर तुरन्त उतर जाता है। तथा सर्दी, जुकाम व खांसी भी ठीक हो जाती है। इस काढे को दिन में दो बार दो तीन दिन तक ले सकते हैं।

छोटे बच्चों को सर्दी जुकाम होने पर तुलसी व अदरक का रस 5–7 बूंद शहद में मिलाकर चटाने से बच्चों का कफ, सर्दी, जुकाम, ठीक हो जाता है। नवजात शिशु को यह अल्प मात्रा में दें।

अतिसार एवं दस्त :

1. तुलसी दल दस, जीरा 1 ग्राम दोनों को पीसकर शहद मिलाकर चटाने से दिन में 3–4 बार में दस्तों में मरोड तथा पेचिश में लाभ होता है।
2. तुलसी की फांट 50–60 मिलीग्राम जायफल का चूर्ण मिलाकर

Scanned by CamScanner

3–4 बार पीने से अतिसार अच्छा होता है।

अग्निमांद्य : अजीर्ण अग्निमांद्य, बालकों की यकृत प्लीहा की विकृतियों में तुलसीदल के स्वरस का फांट दिन में तीन बार भोजन से पहले पिलाने से लाभ होता है।

बस्तिशोथ :

1. तुलसी के बीज और जीरे का चूर्ण 1 ग्राम लेकर उसमें 3 ग्राम मिश्री मिलाकर सुबह–शाम दूध के साथ लेने से मूत्रदाह, पूय तथा बस्ति शोथ दूर होता है।
2. तुलसी के बीज मसाने की पथरी में भी लाभदायक है।

नामर्दी :

1. तुलसी के बीज का चूर्ण अथवा मूल चूर्ण में बराबर की मात्रा में गुड मिलाकर 1–3 ग्राम की मात्रा में, गाय के दूध के साथ लगातार लेते रहने से एक माह या छः सप्ताह तक लाभ होता है।
2. धातु दुर्बलता में तुलसी के बीज 1 ग्राम या दूध के साथ सुबह–शाम सेवन करने से लाभ होता है।

स्वरभंग : स्वरभंग में तलुसी की जड़ को मुलेठी की तरह चूसते रहने से लाभ होता है।

वातव्याधि :

1. संधिशोथ एवं गठिया के दर्द में तुलसी पंचाग का चूर्ण 2–4 ग्राम, सुबह–शाम दूध के साथ सेवन करें।
2. सियाटिका में तुलसी क्वाथ का पीड़ाग्रस्त वात नाड़ी पर बफारा दें, काली तुलसी शोथ तथा वेदना युक्त विकारों में ज्यादा उपयोगी है।
3. ऊर्ध्वगत वात, अस्थिगतवात, संधिवात तथा पारद दोषजनित विकारों में इसका पंचाग का बफारा देने से लाभ होता है।

अपच : तुलसी की 2 ग्राम मंजरी को पीसकर 100 मिलीग्राम काले नमक के साथ दिन में 3 से 4 बार देने से लाभ होता है।

कर्णशूल :

1. तुलसी के पत्तों का ताजा रस गरम करके 2–2 बूंद कान में टपकाने से कर्णशूल फौरन बन्द हो जाता है।
2. तुलसी के पत्ते एरंड की कोंपले और थोड़े नमक को पीसकर उसका गुनगुना लेप करने से कान के पीछे की सूजन नष्ट होती है।

सर्पविष : सर्प विष में पत्तों का स्वरस 5–10 मिलीग्राम पिलाने से और इसकी मंजरी और जड़ों का लेप बार–बार दंशित स्थान पर करने से सर्प दंश की पीड़ा में लाभ मिलता है। अगर रोगी बेहोश हो गया हो तो इसके रस को नाक में टपकाते रहना चाहिये।

मलेरिया ज्वर :

1. तुलसी का पौधा मलेरिया प्रतिरोधी है। तुलसी के पौधे को छूकर वायु में कुछ ऐसा प्रभाव उत्पन्न हो जाता है कि मलेरिया के मच्छर वहां से भाग जाते हैं, इसके पास नहीं फटकते हैं।
2. मलेरिया में तुलसी पत्रों का क्वाथ तीन–तीन घंटे के अन्तर से सेवन करें।
3. तुलसी पत्र स्वरस 5–10 मिलीग्राम में मिर्च चूर्ण मिला दिन

Scanned by CamScanner

मे तीन बार प्रयोग करें।

4. तुलसी मूल क्वाथ आधा औंस की मात्रा में दिन मे दो बार देने से ज्वर तथा विषम ज्वर उतर जाता है।
5. तुलसी दल 20, मिर्च 10 नग दोनों का क्वाथ बनाकर सुबह, दोपहर तथा शाम देने से सब प्रकार के ज्वरों में लाभ होता है।

कफ प्रधान ज्वर :

1. तुलसी दल 21 नग, लवंग 5 नग अदरक रस आधा ग्राम को पीसछानकर गर्म करें, फिर इसमें 10 ग्राम मधु मिलाकर सेवन करें।
2. तुलसी पत्तों को पानी में पकाकर जब आधा जल शेष रह जाये छानकर, चुटकी भर सैंधा नमक मिलाकर गुनगुना पीने से फूल में लाभ होता है।

आम ज्वर :

1. तुलसी पत्र 10, तथा जावित्री ½ से 1 ग्राम तक, पीसकर शहद के साथ चटाने से लाभ होता है।
2. काली तुलसी, वन तुलसी तथा पोदीना, बराबर स्वरस लेकर 3–7 दिन तक सुबह–दोपहर–शाम पिलाने से लाभ होता है।

श्यामा तुलसी

साधारण ज्वर :

1. तुलसी पत्र, श्वेत जीरा, छोटी पीपल तथा शक्कर, चारों को कूटकर प्रातः–सायं देने से लाभ होता है।
2. तुलसी पत्र चूर्ण 1 भाग, शुंठी चूर्ण 1 भाग तथा पिसी अजवायन मिलाकर दिन में तीन बार सेवन करने से ज्वर का वेग कम होता है।

सफेद दाग झांई :

1. तुलसी पत्रस्वरस 1 भाग, नींबू का रस 1 भाग, कंसौदी पत्र स्वरस–1 भाग, तीनों को बराबर–बराबर लेकर एक तांबे के बरतन में डालकर चौबीस घंटे के लिये धूप में रख दें। गाढ़ा हो जाने पर इसके लगातार लेप करने से श्वित्र रोग, में लाभ होता है। इसको चेहरे पर लगाने से, चेहरे दाग तथा अन्य चर्म विकार साफ होकर चेहरा सुन्दर हो जाता है।
2. तुलसी की जड़ को पीसकर प्रातः सौंठ मिलाकर, जल के साथ लेने से कुष्ठ में लाभ होता है। तुलसी की जड़ को पीसकर शहद के साथ दिन में 3–4 बार चटाने से लाभ होता है।

व्रण :

1. घावों को शीघ्र भरने के लिये, तुलसी के 10–20 ग्राम पत्तों को उबालकर ठंडा करके लेप करना चाहिये।
2. तुलसी के पत्तों का रस भी घाव को भरने में बहुत उपयोगी है।

Scanned by CamScanner

वैज्ञानिक नाम	:	*Abroma augusta* (L.) L.f.
कुलनाम	:	Sterculiaceae
अंग्रेजी नाम	:	Devil's cotton
संस्कृत	:	पिशाच कार्पास, पीवरी, रितुमती, उच्चट, योनिपुष्पा
हिन्दी	:	उलटकंबल
गुजराती	:	उल्लटकंबल, ओलकतबोल
मराठी	:	उल्लटकंबल, ओलकतंबोल
बंगाली	:	ओलट कम्बल
तेलगु	:	गोगु, कोडगोगु

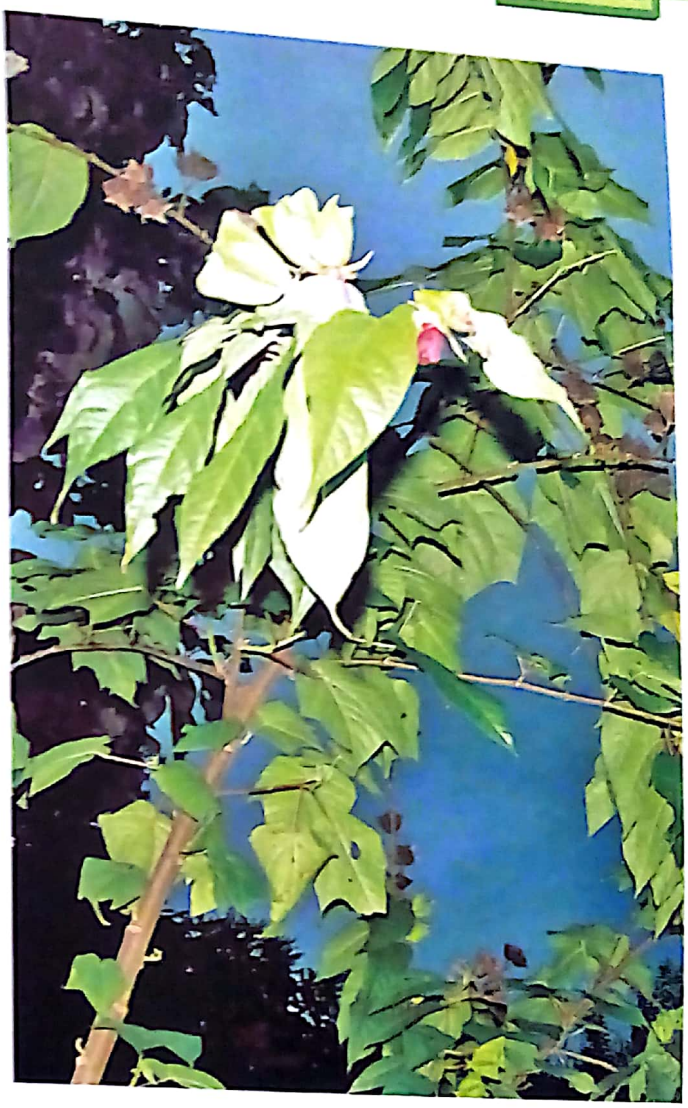

परिचय

उलटकंबल विशेषतः शीत प्रदेश की वनस्पति है, परन्तु उष्ण प्रदेशों में यह 3000 फुट से 4000 फुट की ऊंचाई तक उत्तर प्रदेश से लेकर सिक्किम तक, तथा बंगाल, आसाम, खसिया आदि में इसके जंगली व लगाये हुये पौधे मिलते हैं। इसके सुन्दर, आकर्षक रक्तवर्णीय पुष्पों के लिये इसे बाग बगीचों और घरों में भी लगाते हैं। इस पर वर्षाऋतु में पुष्प आते है, तथा शरद ऋतु में यह फलों से भर जाता है।

बाह्य–स्वरूप

उलटकंबल के छोटे कद के वृक्ष या बड़े गुल्म होते हैं। शाखायें, कोमल मुलायम मखमली तथा छाल श्वेत वर्ण एवं रेशेदार होती हैं। पत्ते–भिंडी के समान, 5–7 भागों में विभक्त त्रिकोणाकार किनारे कटे हुये, गोलाकार स्थल कमल जैसे होते हैं। पत्र में कुछ लाल रंग की सिराये होती है तथा पृष्ठ भाग रोये से व्याप्त खुरदरा होता है। ऊपर के पत्ते लट्वाकार भालाकार अथवा हृदयकार छः इंच तक लम्बे होते हैं। पुष्प भूमि की ओर नीचे लटके हुये, पोस्तदाने के फूल के आकार वाले, लाल रंग के एक इंच के घेरे में कटोरी नुमा लगते हैं। जब पुष्पदल परिपक्व हो, पुष्पकोष से पृथक हो भूमि पर गिर जाते हैं, तब पुष्पकोष उलट कर आकाश की ओर मुड़ जाता है, इसी से इसे उलट कंबल कहते हैं। फल– आधे कमरख के समान पंचकोशियों तथा पंच खंडीय होता है। कोशा की प्रत्येक धार पर जाली के भीतर महीन रोम जैसी चमकदार रूई होती है, जिससे स्पर्श करने पर त्वचा में जलन सी होती है। इस फल में रोमों के बीच दो कतारों में काले और पीतवर्ण के वन तुलसी या मूली के समान अनेक बीज भरे रहते हैं। जड़ की छाल भूरे रंग की होती है तथा अन्दर के भाग में सफेद गूदा भरा रहता है। जड़ों को काटने से एक गाढ़ा गोंद सा निलकता है।

रासायनिक संघटन

उलटकंबल की जड़ में काफी मात्रा में लुआबी तत्व, कार्बोहाइड्रेट, रेजिन तथा अल्पमात्रा में एल्केलायड होता है। इसमें काफी मात्रा में मैंगनीशियम भी होता है जो हाइड्राक्सी–एसिड के साथ संयुक्त अवस्था में होता है।

गुण–धर्म

तिक्त कषाय, योनिरोग, गर्भाशय विकार, कष्टार्तव, प्रदर, उदरशूल, अर्श, आध्मान निवारक, एवं मासिकधर्म की गड़बड़ी से उत्पन्न बांझपन को दूर करता है।

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

मासिक धर्म और गर्भाशय के विकार :

1. जड़ की छाल का सान्द्र चिकना रस, 2 ग्राम की मात्रा में कुछ समय तक नियमित देने से सब प्रकार के कष्ट से होने वाले मासिक धर्म में लाभ होता है।
2. इसकी जड़ की छाल को 6 ग्राम तक की मात्रा में 1 ग्राम काली मिर्च के साथ पीसकर मासिक धर्म से एक सप्ताह पूर्व से, और जब तक मासिक धर्म जारी रहता है तब तक पीने से रजः स्त्राव नियमित होता है, बांझपन दूर होता है और गर्भाशय को शक्ति प्राप्त होती है।
3. इसकी 1 किलो जड़ को जौ कूट कर 4 गुने जल में पकावें, 1 किलो शेष रहने पर इसमें 115 ग्राम काली मिर्च का चूर्ण और सवा किलो गुड़ मिला, चीनी मिट्टी के पात्र में बन्दकर, धान्य राशि में दबादें। फिर छानकर बोतलों में भर लें। इसको 10–25 ग्राम तक बराबर जल मिलाकर मासिक धर्म से 1 सप्ताह पूर्व से, मासिक धर्म होने तक सुबह–शाम सेवन करें।
4. अनियमित मासिक धर्म के साथ ही, गर्भाशय जांघ और कमर में विशेष पीड़ा हो तो इसकी जड़ का रस 4 ग्राम में शक्कर मिला सेवन करने से दो दिन में ही लाभ हो जाता है।
5. जड की छाल छः ग्राम और काली मिर्च 3 नग दोनों को शीतल जल में पीसकर छानकर ऋतुस्राव से 1 सप्ताह पहले सेवन करने से मासिक धर्म सम्बन्धी सभी कष्ट दूर होते हैं, ऋतुस्राव खुलकर होता है और गर्भाशय बलिष्ठ होता है।
6. इसकी 50 ग्राम सूखी छाल को जौ कूटकर 625 ग्राम पानी में काढा तैयार कर उचित मात्रा में दिन मे तीन बार देने से कुछ ही दिनों में मासिक धर्म उचित समय पर होने लग जाता है। इसको एक सप्ताह पूर्व शुरू कर ऋतुस्राव आरम्भ होने तक देना चाहिये।
7. इसकी जड़ की छाल का चूर्ण 4 ग्राम, काली मिर्च 7 नग, प्रातः–सायं जल के साथ मासिक धर्म के समय 7 दिन तक सेवन करने 2–4 मास तक यह प्रयोग करने से गर्भाशय के सब दोष मिट जाते हैं, प्रदर और बन्ध्यत्व की सर्वश्रेष्ठ औषधि है। पथ्य–भोजन में केवल दूध भात लेवे ब्रह्मचर्य से रहें।

गर्भस्थापना के लिए : इसकी जड़ की छाल डेढ ग्राम, पान के डंठल 3–4 नग और काली मिर्च 3 नग, इन्हें ताजे जल के साथ पीसकर 50 ग्राम जल मिलाकर प्रातः काल निराहार ले। ऋतु धर्म के 7 दिन पूर्व से पियें।

सुजाक : इसके ताजे पत्ते और तने की छाल समभाग लेकर शीतल जल में तैयार किया फांट सुजाक में बहुत उपयोगी है।

बहुमूत्र इक्षुमेह और मधुमेह होने पर : 10–20 ग्राम तक इसके रस का प्रातः–सायं सेवन करने से शीघ्र लाभ होता है।

Scanned by CamScanner

123 वचा

वैज्ञानिक नाम	:	*Acorus calamus* L.
कुलनाम	:	Araceae
अंग्रेजी नाम	:	Sweet flag root
संस्कृत	:	वचा, उग्रगंधा, तीक्ष्णपत्रा
हिन्दी	:	वच, घोड़ा बच
गुजराती	:	गन्धिले, वज, घोड़ा वज
मराठी	:	बेखंड
बंगाली	:	बच, बरिबोज
तेलगु	:	वस
अरबी	:	वज्ज
फारसी	:	अगरेतुर्की
तमिल	:	वसम्बु

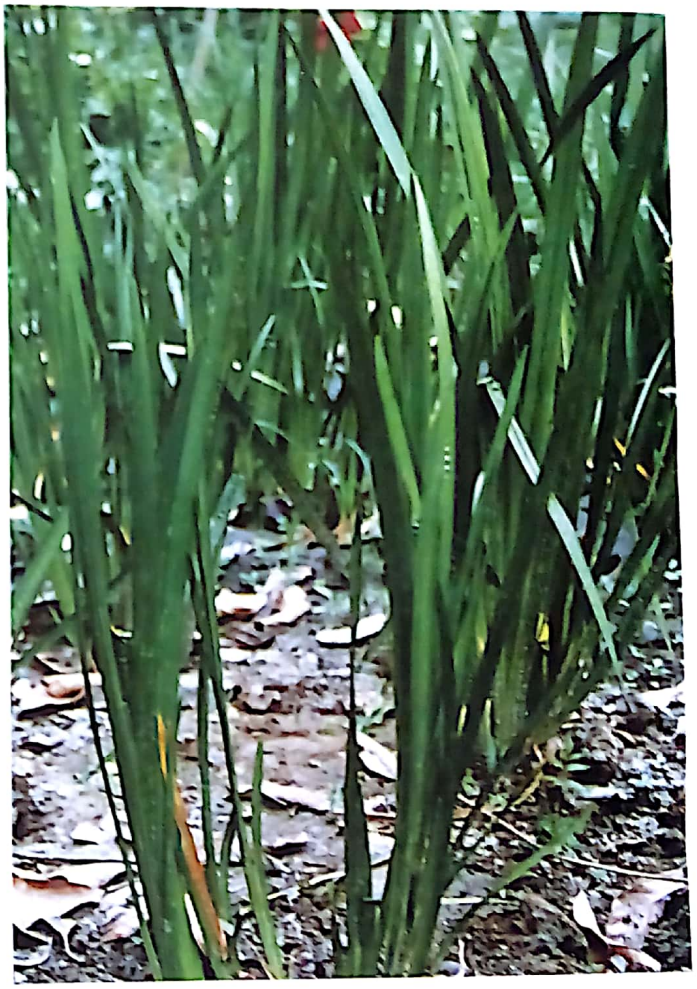

परिचय

वच भूत पूर्व यूरोप और मध्य एशिया का निवासी है। सदियों पहले इसके पूर्वजों को कब कैसे, भारत की मिट्टी भा गई और किसके बुलावे पर वे कब इस देवभूमि की पवित्र मिट्टी में रच बस गये, इसका कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता। आजकल इसके हिमालय प्रदेशों में 6,000 फीट की ऊंचाई तक स्वयं जात या कृषिजन्य पौधे मिलते हैं। मारीपुर और नागा की पहाड़ियों में तथा कश्मीर में झीलों और खेतों के किनारे यह बहुलता से होता है। इसका सुखाया हुआ मूलस्तम्भ या भौमिक कांड बाजारों में घोड़ा वच के नाम से बिकता है। इसकी कई जातियां पाई जाती है। बल बच या पारसीक बचा प्रमुख है।

बाह्य–स्वरूप

घोड़ा वच के दो से पांच फीट ऊंचे कोमल क्षुप जलाशयों के आसपास तथा दलदली भूमि में उगते हैं। पत्तियां ईख की भांति अधिवत् दो फुट से चार फुट तक लम्बी आधा इंच से एक इंच तक चौड़ी हरित वर्ण तथा किनारे किंचित लहरदार होते हैं। पुष्प छोटे–छोटे श्वेत सघन स्थित होते हैं। फल अनेक बीजों छोटे–छोटे मांसल बेरी होते हैं। इसका मूलस्तंभ या भौमिक कांड अदरक की भांति भूमि में फैलता है और मध्यमा अंगुली के समान स्थूल 5–6 पर्व वाला, खुरदरा झुर्रीदार, सुगन्धित, रोमश आदि भूरे रंग का होता है। इसकी पत्तियां भी सुगंधित होती हैं। जिसमें उग्रगंध हो वही उत्तम वच है।

बाल वच :

इसका कांड एक फुट से डेढ फुट ऊंचा, प्रायः शाखा रहित होता है। पत्तियां चार से नौ की संख्या में लम्बे नुकीले अग्रों वाली, इसे छह इंच लम्बी और कांड के सिरे पर छत्रक की भांति स्थित होता है। इनके बीच से एकल पुष्प वाहक दंड निकलता है।

रासायनिक संघटन

इसमें एक उड़नशील तेल जिसमें पाईनीन एवं कैफीन आदि होते हैं। इसके अतिरिक्त कैलेमेन, कैलेमेनोल, केलामेनोन, एसेरोन तथा एकोरिन नामक एक चिपचिपा–गाढ़ा ग्लाईकोसाइड एवं टैनिनम्यूसिलेज स्टार्च तथा कैल्सियम आक्जेलेट आदि तत्व पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

वच उग्रगंधा, चरपरी–कटु, वामक एवं अग्निवर्धक है। मलमूत्र का

Scanned by CamScanner

शोधन करने वाली और मलबंधक है। अफारा शूल, अपस्मार, कफ, उन्माद, भूत, जन्तु तथा वात को हरने वाली औषधि है।[1] यह ज्वरघ्न, हृदयोत्तेजक, कंठ्य, श्वास–कास हर है।[1]

बालवच :

इसके गुण भी वच के सदृश ही है, यह विशेषतः वातानुलोमक है।[2]

औषधीय प्रयोग

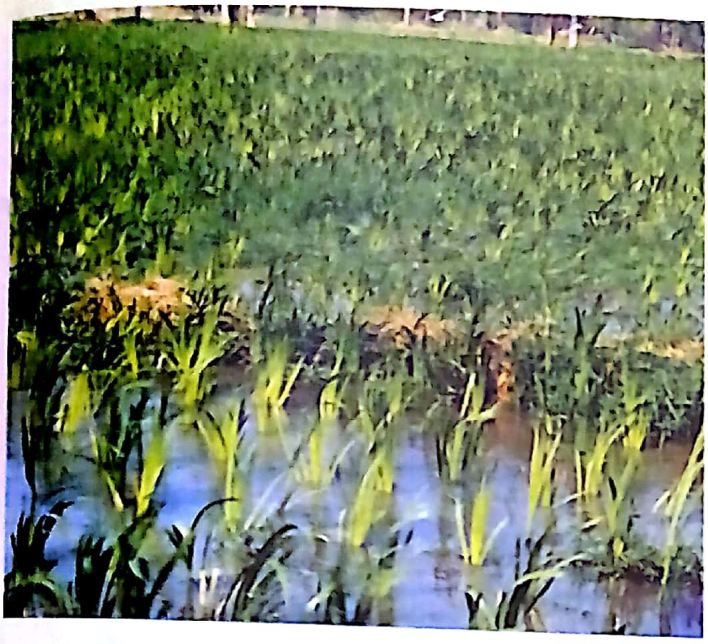

सूर्यावर्त :

1. वच और पीपल के चूर्ण को सुँघाने से सूर्यावर्त मिटता है।
2. शिरशूल में पंचांग का लेप मस्तिष्क एवं वेदना वाले स्थान पर करने से लाभ होता है।
3. वच को जल में पीसकर मस्तक पर लेप करने से मस्तक पीड़ा मिटती है।

मेधा :

1. घी या दूध या जल के साथ इसके कांड के चूर्ण का सेवन 250 मिलीग्राम की मात्रा में दिन में दो बार एक वर्ष तक या कम से कम एक मास तक करने से मनुष्य की स्मरण शक्ति में वृद्धि होती है।
2. दस ग्राम वच के चूर्ण का 250 ग्राम बूरे के साथ पाक बना कर नित्य 10 ग्राम प्रातः–सायं खाने से भूलने की बीमारी मिटती है।

गले का दर्द : इसके 500 मिलीग्राम चूर्ण को थोड़े गरम दूध में डालकर दिन में तीन बार पिलाने से जमा हुआ कफ ढीला पड़कर निकल जाता है और गले का दर्द दूर हो जाता है।

गलगंड : बच के चूर्ण को और पीपल के चूर्ण को मधु मिलाकर या नीम का तेल मिलाकर सुघांने से गलगंडादि रोग मिटते हैं।

अपस्मार : इसका कपड़छन किया हुआ चूर्ण 500 मिलीग्राम से एक ग्राम तक की मात्रा में शहद के साथ प्रातः–सायं चटाने से उन्माद और अपस्मार में बहुत लाभ होता है। पथ्य इस समय केवल दूध और चावल का ही प्रयोग करें।

दमा–खांसी :

1. बच्चों की खांसी में मां के दूध में घिसकर पिलाने से लाभ होता है।
2. 25 ग्राम वच को 400 मि० ग्रा० जल में उबालकर जब चौथाई शेष रह जाये तो तीन मात्राएं बनाकर दिन में तीन बार पिलाने से सूखी खांसी, पेट का अफारा और उदरशूल मिटता है।
3. दमे के रोगी को पहले वच की 2 ग्राम की मात्रा देनी चाहिए। उसके पश्चात हर तीसरे घण्टे बाद 625 मिलीग्राम की मात्रा देनी चाहिए।
4. बच्चों की खांसी में इसको 125 मिलीग्राम पानी में घिसकर दिन में तीन बार पिलाने से लाभ होता है।
5. इसके चूर्ण को कपड़े में रखकर सूंघने से प्रतिश्याय मिटता है।

उदर रोग :

1. आमअतिसार तथा रक्त अतिसार में वच धनियां तथा जीरे का क्वाथ पिलाना चाहिए। इसके लिए तीनों को समान मात्रा में

Scanned by CamScanner

वचा मूल

लेकर 10 ग्राम को 100 ग्राम जल में उबालें, 20 ग्राम शेष रहने पर छानकर प्रातः–सायं पीएं।

2. वच की जड़ को जौ में कूटकर क्वाथ बनाकर 25 या 35 ग्राम की मात्रा में पिलाने से आम अतिसार मिटता है।

अफारा :

1. बच्चों का शूल युक्त अफारा मिटाने के लिए, वच को जल में घिसकर पेट पर लेप करना चाहिए।
2. वच के कोयले को एरंडी के तेल या नारियल के तेल में पीसकर बच्चे के पेट पर लेप करने से भी शूलयुक्त अफारा मिटता है।

बच्चों का अतिसार : इसके कोयलों की 125 मिलीग्राम राख पानी में घोलकर पिलाने से बच्चों का अतिसार मिटता है।

कृमि : वच के 2 ग्राम चूर्ण को सेकी हुई हींग 125 मिलीग्राम के साथ खिलाने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।

अर्श : वच, भांग और अजवायन, इन तीनों को बराबर–बराबर लेकर इनकी धूनी देने से अर्श की पीड़ा मिटती है।

सुख प्रसव :

1. वच को जल में घिसकर इसमें एरंड का तेल मिलाकर नाभि पर लेप करने से बच्चा सुख से उत्पन्न हो जाता है।
2. प्रसव के बाद की निर्बलता मिटाने के लिए इसका 20–30 ग्राम क्वाथ प्रात–सायं पिलाना चाहिए।

आनाहवात : दूध में लहसुन तथा वच मिलाकर थोड़ा गरम कर लें, तत्पश्चात उसमें काला नमक तथा हींग मिलाकर सेवन करने से गर्भवती स्त्री को सुख प्राप्त होता है।

मुंह का लकवा : वच का चूर्ण 625 मिलीग्राम, शुंठी चूर्ण 625 मिली., दोनों को शहद में मिलाकर दिन में दो तीन बार चाटने से अर्दित रोग, यानि मुंह का लकवा मिटता है। पथ्य इसके सेवन के समय पानी में शहद मिलाकर पिलाना चाहिए।

ज्वर :

1. वच को पानी में पीसकर नाक पर लेप करने से जुकाम, खांसी और उससे पैदा होने वाला तीव्र ज्वर रूक जाता है।
2. वच, हरड और घी का धुंआ देने से विषम ज्वर में लाभ होता है।
3. छोटे बच्चों के ज्वर में इसकी जड़ को पानी में घिसकर हाथ और पैरों पर लगाने से लाभ होता है।

हकलाने (रूक–रूक कर बोलने) की बीमारी : हकलाने अथवा रूक–रूक कर बोलने (वाक्दुष्टि) की बीमारी में रोगी को ताजी वच की कांड का 1 ग्राम का टुकड़ा सुबह–शाम चूसने हेतु दें, 3 महीने तक प्रयोग से हकलाने की बीमारी में आश्चर्यजनक लाभ मिलता है।

जमाल गोटे का विष : वच के कोयलों की 1 ग्राम भस्म को पानी में घोलकर पिलाने से जमाल गोटे का विष शांत हो जाता है और सब उपद्रव भी शांत हो जाते हैं।

विशेष : व्यवहार में प्रायः चिकित्सक बाह्य प्रयोगों के लिए घोड़ा वच और अभ्यान्तर सेवन के लिए बाल वच का प्रयोग करते हैं।

हानि : इसका अधिक प्रयोग हानिकारक है। यह उष्ण प्रकृति वालों के लिए हानिकारक है और उनमें सिर दर्द पैदा करती है।

1. बचोग्रगंधा कटुका तिक्तोष्णावान्तिवह्निकृत।
विबन्धाध्मान शूलघ्नी शकृन्मूत्रविशोधिनी।
अपस्मार कफोन्माद भूतजन्त्वनिलानहरेत।। (भाव प्रकाश)

2. वामनी कटुतिक्तोष्णा वातश्लेष्मरुजापहा।
कंठ्या मेध्या च कृमिहृद्विबंधाध्मानशूल नुत्।। (धन्वं०)

3. हेम वत्युदिता तद्वद्वातं हन्ति विशेषतः।। (भाव प्रकाश)

Scanned by CamScanner

वत्सनाभ

वैज्ञानिक नाम	: *Aconitum ferox* Wall. ex Ser.
कुलनाम	: Ranunculaceae
अंग्रेजी नाम	: Aconite, Monk's hood
संस्कृत	: वत्सनाभ, अमृत
हिन्दी	: बछनाग, मीठा विष, मीठा तेलिया
गुजराती	: बछनाग
मराठी	: वचनाग
बंगाली	: काठ विष, मीठा विष
तैलगु	: वसनूभि
अरबी	: विष
फारसी	: विचनाग

परिचय

भारत में हिमालय प्रदेश में सिक्किम से लेकर उत्तर पश्चिमी हिमालय तक 10,000 फुट से 15,000 हजार फुट की ऊंचाई तक इसके पौधे पाये जाते हैं। एकोनाइट की भारत में 28 प्रजातियां पाई जाती है, जो विषैली तथा विषरहित दोनों प्रकार की होती है। इसके फूल बड़े आकर्षक होते हैं, विषैले पौधे का पंचांग भी विषैला होता है, विषैले पौधे के फूलों को सूंघने से ही मनुष्य मूर्छित हो जाता है। सबसे ज्यादा विष इसकी श्रृंगाकार जड़ों में होता है, जिनका औषध्यार्थ प्रयोग किया जाता है। वर्णभेद से, बाजारों में दो प्रकार का वत्सनाभ मिलता है एक सफेद, दूसरा काला वास्तव में वत्सनाभ का प्राकृतिक रंग घूसर, पीताभ होता है। इसको सफेद बछनाग कहते हैं। इसको रंगकर काला बछनाग बना देते हैं, इससे इसमें कीड़े नही लगते हैं। इसकी विशेषता यह है कि इसकी आकृति बछड़े की नाभि के समान और इसके आस–पास अन्य वृक्ष नहीं उगते।

बाह्य–स्वरूप

क्षुप बहुवर्षीय, मूल कन्द युक्त 1–3 इंच लम्बी एक इंच तक मोटी गाजर की आकृति के समान, बाह्य रंग घूसर और अन्तः वर्ण श्वेताभ स्निग्ध तथा कुछ चमकीला, कांड–सीधा, सरल, पत्रक सिंदुवार के पत्रों के समान परस्पर अभिमुख, पुष्प रक्ताभ, श्वेत तथा पीले, फल गोल चिकने।

रासायनिक संघटन

इसमें विषाक्त तत्व एकोनाइट एवं स्युडोएकोनाइटिन पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

विधिपूर्वक शुद्ध किया हुआ विष प्राणदायी रसायन, योगवाहि, त्रिदोष हर, बृहंण तथा वीर्यवर्धक है।'

औषधीय प्रयोग

खांसी श्वास : ताम्बूल पत्र पर 65–125 मिलीग्राम बछनाग डालकर पकाये हुए अलसी के तेल को जरा सा चुपड़ कर प्रातः–सायं खिलाने से खांसी और दमे में लाभ होता है।

टांसिल : इसको पीसकर गले पर लेप करने से टांसिल इत्यादि गले के रोगों में बहुत लाभ होता है।

ज्वर :

1. दालचीनी, गंधक, सोहागा और दूसरी चरपरी सुगंधित चीजों के साथ, इसको आधे चावल के बराबर की मात्रा में देने से

Scanned by CamScanner

बार–बार आने वाला ज्वर छूट जाता है।

2. बछनाग को बहुत थोड़ी मात्रा में देने से न्यूमोनिया में लाभ होता है।

3. शुद्ध किया बछनाग, शुद्ध हींग, शुद्ध सुहागा, नागदंती, निर्गुण्डी का रस इन सब चीजों को समान भाग लेकर पीस कर 65–65 मिलीग्राम की गोलियां बना लेनी चाहिए। इन गोलियों में से एक गोली योग्य अनुपान के साथ प्रातः–सायं देने से व्रण, शोथ, ज्वर में बहुत लाभ होता है।

4. कुनैन, कपूर और शुद्ध बछनाग को समान भाग लेकर 65 मिलीग्राम की मात्रा में प्रातः–सायं देने से अभिष्यन्द युक्त ज्वर मिटता है।

मधुमेह : 10 ग्राम शुद्ध बछनाग में 70 ग्राम अरारोट मिलाकर उसमें से 65 मिलीग्राम से 125 मिलीग्राम तक की मात्रा देने से भयातिसार, मधुमेह, पक्षाघात और कुष्ठ रोग में बहुत लाभ होता है। यह दिन में तीन बार दें।

मूत्रकृच्छ : शुद्ध बछनाग को आधे चावल भर की मात्रा में देने से मूत्रकृच्छ मिटता है।

मूत्रातिसार : जिसको मूत्र की शंका न रूकती हो उसको आधे चावल के बराबर बछनाग का सेवन करना चाहिए। गृधसी, गठिया, धनुर्वात में भी इसको अति अल्प मात्रा में देने से लाभ होता है।

सर्वांग पीड़ा :

1. इसका तेल सर्वांग की पीड़ा को मिटाता है। गठिया और छोटे जोड़ों की सूजन पर इसका लेप करते हैं।

2. जौ कूट किये हुए 25 ग्राम बछनाग को अलसी के तेल में पकाकर इस तेल की मालिश करने से सब प्रकार की गठिया और सर्वांग की पीड़ा मिटती है।

नाड़ी दौर्बल्य : नाड़ी दुर्बलता में इसका सेवन 15–16 मिलीग्राम की मात्रा में करने से नाड़ी की गति सामान्य हो जाती है तथा नाड़ी दुर्बलता के कारण उत्पन्न, बहुमूत्र, शय्यामूत्र आदि विकारों को यह दूर करता है।

रसायन :

1. बछनाग में समान भाग सुहागा मिलाकर 15–16 मिलीग्राम की मात्रा में खाने से मुनष्य दीर्घायु तेजवान, जोशीला होता है और उसकी हृदय की गति व्यवस्थित रहती है, काम शक्ति बनी रहती है। ज्ञानेन्द्रियां शक्तिशाली हो जाती हैं। बुखार मंदाग्नि, गठिया, फोड़े–फुन्सी आदि बीमारियों से बचा रहता है।

2. हरड़ काली और चित्रक 30–30 ग्राम, पीपल 15 ग्राम, बछनाग सफेद नौ ग्राम, इन सबको पीसकर गाय के घी में चिकना करके 160–180 ग्राम शहद में मिला ले, इस योग की डेढ़ ग्राम से तीन ग्राम तक की मात्रा देने से श्वेत कुष्ठ, दमा इत्यादि रोगों में लाभ होता है और मनुष्य की सर्वांगीण शक्तियां बढ़ती हैं। इसका प्रयोग करने से पहले विरेचन लेकर पेट साफ कर लेना चाहिए।

सूजन : सूजन युक्त ज्वर में अथवा कफ प्रधान नवीन ज्वर में बछनाग को अल्प मात्रा में प्रारंभ में ही दे देना चाहिए। बच्चों की सूजन में बछनाग एक प्रभावशाली औषधि है।

बिच्छु का विष : बछनाग को घिसकर दंशित स्थान पर लेप करने से और 125 मिलीग्राम की मात्रा में खिलाने से बिच्छू का विष उतर जाता है।

कुष्ठ रोग : तीन मास तक इसके नियमित सेवन से कुष्ठ रोग समूल नष्ट हो जाता है।

दोष : इसकी अधिक मात्रा लेने से मृत्यु तक हो सकती है।

निवारण : वमन के बाद गाय के घी में सुहागा मिलाकर पिलायें या अर्जुन की छाल का चूर्ण गौघृत या मधु के साथ दें। इसके अतिरिक्त कस्तूरी पानी में घिसकर चटायें।

1. तदेव युक्तियुक्तं तु प्राणदायि रसायनम्।
योगवाहि, त्रिदोषघ्नं बृहणं वीर्यवर्धनम्।। (भाव प्रकाश)

Scanned by CamScanner

विदारीकंद

वैज्ञानिक नाम	:	*Pueraria tuberosa* (Roxb. ex Willd.) DC.
कुलनाम	:	Fabaceae
अंग्रेजी नाम	:	Indian kudzu
संस्कृत	:	विदारी, स्वादुकंदा, गजवाजिप्रिया
हिन्दी	:	विदारीकंद, बिलाईकन्द, सुराल, पतालकोहड़ा
गुजराती	:	खाखर बेल, विदारी
मराठी	:	बेदंरिया, बेल, बींदरी
बंगाली	:	शीमिया
तैलगु	:	दरीगुम्मडि
मलयालम	:	गुमडिगिडा

परिचय

विदारीकंद की चक्राकार आरोहिणी लताएं विशेषकर नदी नालों के किनारे और हिमालय प्रदेश की निचली पहाडियों के भागों में 4,000 फुट की ऊंचाई तक पाई जाती हैं। इसकी मूल से जुडे हुए जमीन के नीचे कंद पाये जाते हैं। जो कई आकारों में तथा इनका स्वाद कुछ–कुछ मधुयष्टि की भांति होता है। इसलिए इसका नाम स्वादुकंद है। घोडों को प्रिय होने के कारण ये लतायें गज वाजिप्रिया कहलाती है। विदारीकंद के नवीन कंद, मंडियों में प्राय: सुराल के नाम से बिकते हैं। कन्द की त्वचा हल्के भूरे रंग की तथा अन्दर से श्वेत होते हैं।

बाह्य–स्वरूप

विदारीकंद की चक्रारोही सुविस्तृत लतायें होती हैं, जिसका कांड मोटा तथा छिद्रल होता है। पत्तियां पलाश की भांति त्रिपत्रक, पत्रक 4–6 इंच लम्बे, 3–4 इंच चौडे एवं अग्रभाग पर नुकीले होते हैं। नवम्बर–दिसम्बर में निष्पत्र बेल पर नीले या बैंगनी रंग के पुष्प आते हैं तथा कलियां 2 से 3 इंच लम्बी और रोमश होती हैं। इसमें 3–6 बीज होते हैं।

रासायनिक संघटन

इसके कन्दों में कार्बोहाड्रेट, प्रोटीन तथा रालीय तत्व पाये जाते है।

गुण–धर्म

विदारीकंद मधुर, स्निग्ध, शीतल, शुक्र–स्तन्य जनन, बृहण, मूत्रल, बल्य, वर्ण्य, वाजीकर, दाह प्रशमन एवं रसायन है।[1,2]

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

यकृत प्लीहा वृद्धि : विदारीकंद के पांच ग्राम चूर्ण की फंकी सुबह–शाम जल के साथ लेने से यकृत प्लीहा की वृद्धि रुक सकती है।

रक्तशुद्धि : विदारीकंद का शाक बनाकर खाने से रक्त शुद्ध होकर रक्त विकार दूर होते हैं।

भस्मक रोग :

1. भस्मक रोग में 250 ग्राम दूध में विदारीकंद का रस 10 ग्राम डालकर उबालकर पिलाने से भस्मक रोग मिटता है।
2. 10 ग्राम विदारीकंद के रस में 10 ग्राम भैंस का घी मिलाकर पिलाने से भी भस्मक रोग मिटता है।

बवासीर : कंद के चूर्ण को तिल के तेल में समान मात्रा में मिलाकर पीस लें। एक चम्मच चूर्ण में शहद मिलाकर दिन में तीन बार दूध के साथ सेवन करने से कुछ ही दिनों में खून आना बंद हो जाता है।

स्तन्य वृद्धि : माताओं में दूधवृद्धि हेतु विदारीकंद का चूर्ण पांच ग्राम की मात्रा में दिन में तीन बार दूध के साथ सेवन करने से स्त्रियों के दूध में वृद्धि हो जाती है।

मासिक धर्म :

1. विदारीकंद एक चम्मच चूर्ण को घी और शक्कर के साथ चटाने से मासिक धर्म में अधिक रक्त का जाना बंद हो जाता है।
2. कंद का चूर्ण एक चम्मच, मिश्री एक चम्मच, दोनों को पीसकर एक चम्मच घी के साथ सुबह–शाम सेवन करने से मासिक धर्म में अधिक रक्त जाना बंद हो जाता है।

पौष्टिक और रसायन कार्य :

1. पौष्टिक और रसायन कार्य के लिए विदारीकंद के तीन से छह ग्राम तक चूर्ण को 10 ग्राम घी में मिलाकर, निश्रण को 250 ग्राम दूध में उबाल लें तथा दूध को मिश्री में मिलाकर सेवन करने से शरीर पुष्ट होता है।
2. विदारीकंद का चूर्ण 50 ग्राम, जौं का आटा 50 ग्राम, गेहूं का आटा 50 ग्राम, तीनों को 50 ग्राम घी में भून लें, इसमें काजू, बादाम, चिरौंजी, सफेद मूसली, जायफल, लौंग, इलायची 10–10 ग्राम मिलाकर शहद के साथ लड्डू बना लें, प्रतिदिन एक–एक लड्डू सुबह–शाम दूध के साथ खाने से शारीरिक कमजोरी दूर होकर शरीर पुष्ट हो जाता है।
3. बच्चों का शरीर पुष्ट करने के लिए विदारीकंद के एक ग्राम चूर्ण को मुनक्का के साथ प्रतिदिन देने से बच्चों का शरीर पुष्ट होता है।
4. विदारीकंद के एक ग्राम चूर्ण को मधु के साथ सुबह–शाम चटाने से भी बच्चों की निर्बलता मिटती है।
5. विदारीकंद को चूर्ण करके उसको कन्द के ही रस में 21 बार भावना कर सुखा लें। इस चूर्ण में से 6 ग्राम चूर्ण प्रतिदिन गाय के दूध और मिश्री के साथ सुबह–शाम लेने से मनुष्य का बल, जीवनी शक्ति, रोग निवारक शक्ति, ओज और बल बढ़ता है।
6. विदारीकंद के चूर्ण की 3–6 ग्राम मात्रा को उष्ण दूध के साथ फंकी लेने से बुढ़ापा जल्दी नहीं आता।

पुरुषार्थ :

1. विदारीकंद के 3 ग्राम चूर्ण को कन्द के 10 ग्राम स्वरस में ही मिलाकर घी 5 ग्राम और मधु 10 ग्राम के साथ सुबह–शाम सेवन करने से पुरुषार्थ बढ़ता है।
2. विदारीकंद के दो चम्मच चूर्ण में एक चम्मच घी मिलाकर दूध के साथ नियमित कुछ काल तक सेवन करने से वीर्य पुष्ट होता है।

कामोद्दीपन :

1. कन्द चूर्ण एक चम्मच, मधु एक चम्मच, सुबह–शाम नियमित सेवन करने से काम शक्ति बढ़ती है।
2. गूलर फल चूर्ण एक भाग, कन्द चूर्ण एक भाग, मात्रा 4–6 ग्राम घी मिले हुए दूध के साथ सेवन करने से वृद्ध भी तरूण हो जाता है।

पित्तशूल : विदारीकंद के 10 ग्राम रस में शहद 2 चम्मच मिलाकर सुबह–शाम भूखे पेट पिलाने से पित्तशूल मिटती है।

विदारी कंद–सूखा (कटा हुआ)

1. बिदारी मधुरा स्निग्धा बृहंणी स्तन्यशुक्रदा।
   शीत स्वर्या मूत्रला च जीवनी बलवर्णदा।।
   गुरुः पित्तास्रपवनदाहान् हन्ति रसायनम्।। (भाव प्रकाश)
2. मधुरो बृंहणो वृष्यः शीतः स्वर्योऽतिमूत्रलः।
   विदारीकंदो बल्यस्तु वातपित्तहरश्च सः।। (सुश्रुत)

Scanned by CamScanner

ओ३म्

शारीरिक श्रम के अभाव, मानसिक तनाव, नकारात्मक चिन्तन, असंतुलित जीवनशैली, विरुद्ध आहार व प्रकृति के बिगड़ते संतुलन के कारण विश्व में कैंसर, हृदयरोग, मधुमेह, उच्चरक्तचाप व मोटापा आदि रोगों का आतंक सा मचा हुआ है। प्रकृति हमारी माँ, जननी है। हमारी समस्त विकृतियों का समाधान हमारे ही आस पास की प्रकृति में विद्यमान है; परन्तु सम्यक् ज्ञान के अभाव में हम अपने आस-पास विद्यमान इन आयुर्वेद की जीवन दायिनी जड़ी बूटियों से पूरा लाभ नहीं उठा पाते। श्रद्धेय आचार्य श्री बालकृष्ण जी ने वर्षों तक कठोर तप, साधना व संघर्ष करके हिमालय की दुर्गम पहाड़ियों एवं जंगलों में भ्रमण करते हुए जड़ी बूटियों के दुर्लभ चित्रों का संकलन तथा उनके प्रयोगों का प्रामाणिक वर्णन किया है। शोध एवं अनुभवों पर आधारित इस पुस्तक में वर्णित जड़ी बूटियों के ज्ञान व प्रयोग से मानव मात्र लाभान्वित हो तथा करोड़ों वर्ष पुरानी आयुर्वेद की विशुद्ध परम्परा का सार्थक प्रचार प्रसार हो इन्हीं मंगल कामनाओं के साथ आयुर्वेद के महान् मनीषी आचार्य श्री बालकृष्ण जी को वैदिक परम्पराओं की प्रकाश सेवाओं के लिए कोटिशः साधुवाद!

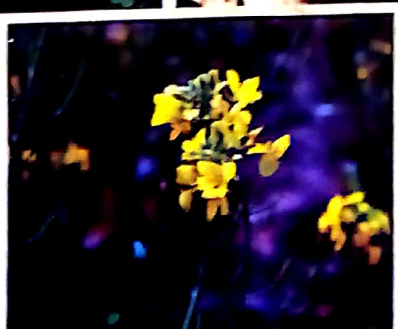

स्वामी रामदेव

Price : Rs. 350/-
ISBN No.81-89235-44-8

Scanned by CamScanner